नव-यत्न

बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास

(भागलपुर प्रमंडल की शैक्षणिक नवाचार एवं रचनात्मक त्रैमासिक पत्रिका)

अंक - 2
जून - अगस्त(2026)

नवाचार · गुणवत्ता · सहभागिता · प्रकृति संरक्षण · उद्देश्य

शिक्षा • नवाचार • संस्कार • सतत् विकास

https://www.navyatna.online/

भागलपुर प्रमंडल : एक नज़र में

भागलपुर एवं बाँका के प्रमुख शैक्षिक व जनसांख्यिकीय आँकड़े

क्षेत्रफल

भागलपुर 2569 Sq KM

बाँका 3020 Sq KM

नगर निकाय

भागलपुर
नगर निगम - 1
नगर परिषद - 2
नगर पंचायत - 6

बाँका
नगर परिषद - 1
नगर पंचायत - 3

प्रखण्ड

भागलपुर 16

बाँका 11

जनसंख्या

भागलपुर 30,37,766

बाँका 20,34,763

पुरुष

भागलपुर 16,15,663

बाँका 10,67,140

पुरुष-से-स्त्री अनुपात (प्रति 1000 पुरुष)

बिहार	918
भागलपुर	880
बाँका	907

महिला

भागलपुर 14,22,103

बाँका 9,67,623

कुल विद्यालयों की संख्या

भागलपुर 2018

बाँका 2210

मॉडल स्कूल

भागलपुर 21

बाँका 14

PM SHRI स्कूल

भागलपुर 25

बाँका 18

कुल शिक्षकों की संख्या

भागलपुर 17119

बाँका 11557

बिहार की साक्षरता

पुरुष	महिला	कुल
71.20%	51.50%	61.80%

जिला-वार साक्षरता

	पुरुष	महिला	कुल
भागलपुर	70.30%	54.89%	63.14%
बाँका	67.62%	47.66%	58.17%

कक्षा 1 से 12 तक कुल विद्यार्थियों की संख्या

भागलपुर		बाँका
259022	लड़के	197084
284091	लड़कियाँ	208477
8	ट्रांसजेंडर	10
543121	कुल	405571

शुभेच्छा के शब्द

श्री मिथिलेश तिवारी
मंत्री
शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

भागलपुर प्रमंडल अन्तर्गत त्रैमासिक पत्रिका **'नव-यत्न'** के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे नवाचारों, मौलिक सुधारों तथा उत्कृष्ट कार्यों को सामने लाने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में निरंतर सुधार के लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में हो रहे अच्छे प्रयोगों और अनुकरणीय कार्यों को व्यापक मंच मिले। **'नव-यत्न'** पत्रिका के माध्यम से ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा अन्य विद्यालयों को भी प्रेरणा प्राप्त होगी। इससे शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होगी और विद्यालयी विकास को नई गति मिलेगी।

यह भी प्रसन्नता का विषय है कि पत्रिका का प्रकाशन शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर प्रस्तावित है तथा इस अवसर पर उत्कृष्ट शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों को सम्मानित करने की योजना है। यह पहल शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित कर्मयोगियों के उत्साहवर्धन की दिशा में सराहनीय कदम है।

मुझे विश्वास है कि **'नव-यत्न'** शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता की संस्कृति को सुदृढ़ करने में प्रभावी भूमिका निभाएगी तथा शिक्षकों और विद्यालयों के लिए मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का सशक्त माध्यम बनेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मिथिलेश तिवारी
मंत्री
शिक्षा विभाग, बिहार सरकार

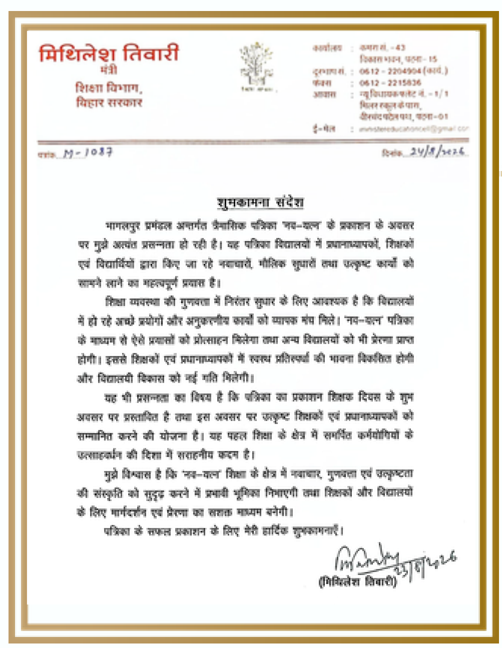

मिथिलेश तिवारी
मंत्री
शिक्षा विभाग,
बिहार सरकार

कार्यालय : कमरा सं.-43, विकास भवन, पटना-15
दूरभाष सं. : 0612-2204904 (कार्या.)
फैक्स : 0612-2215836
आवास : न्यू विधायक फ्लैट सं.-1/1, मिलर स्कूल के पास, वीरचंद पटेल पथ, पटना-01
ई-मेल : ministereducationcell@gmail.com

पत्रांक M-1087 दिनांक 24/8/2026

शुभकामना संदेश

भागलपुर प्रमंडल अन्तर्गत त्रैमासिक पत्रिका 'नव-यत्न' के प्रकाशन के अवसर पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका विद्यालयों में प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा किए जा रहे नवाचारों, मौलिक सुधारों तथा उत्कृष्ट कार्यों को सामने लाने का महत्वपूर्ण प्रयास है।

शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में निरंतर सुधार के लिए आवश्यक है कि विद्यालयों में हो रहे अच्छे प्रयोगों और अनुकरणीय कार्यों को व्यापक मंच मिले। 'नव-यत्न' पत्रिका के माध्यम से ऐसे प्रयासों को प्रोत्साहन मिलेगा तथा अन्य विद्यालयों को भी प्रेरणा प्राप्त होगी। इससे शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होगी और विद्यालयी विकास को नई गति मिलेगी।

यह भी प्रसन्नता का विषय है कि पत्रिका का प्रकाशन शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर प्रस्तावित है तथा इस अवसर पर उत्कृष्ट शिक्षकों एवं प्रधानाध्यापकों को सम्मानित करने की योजना है। यह पहल शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित कर्मयोगियों के उत्साहवर्धन की दिशा में सराहनीय कदम है।

मुझे विश्वास है कि 'नव-यत्न' शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार, गुणवत्ता एवं उत्कृष्टता की संस्कृति को सुदृढ़ करने में प्रभावी भूमिका निभाएगी तथा शिक्षकों और विद्यालयों के लिए मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का सशक्त माध्यम बनेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(मिथिलेश तिवारी)

दिशा बोध

श्री प्रेम सिंह मीणा
आयुक्त
भागलपुर प्रमंडल, भागलपुर

'नव यत्न' का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय और आनंददायक है। शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे समाज को नई दिशा देने, नव-ऊर्जा का संचार करने और विचारों को नया आकार देने की सामर्थ्य रखते हैं।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, **'नव यत्न'** एक नया प्रयास, एक नई सोच और एक नया संकल्प है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका नव विचारकों और रचनाकारों के लिए एक सशक्त मंच बनेगी और साहित्य व समाज में सकारात्मक परिवर्तन की अलख जगाएगी।

मैं **'नव यत्न'** की पूरी संपादकीय टीम, रचनाकारों और पाठकों को इस शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ। यह प्रयास निरंतर नए आयाम छुए, यही कामना है।

सभी शुभेच्छाओं के साथ।

प्रेम सिंह मीणा
आयुक्त
भागलपुर प्रमंडल, भागलपुर

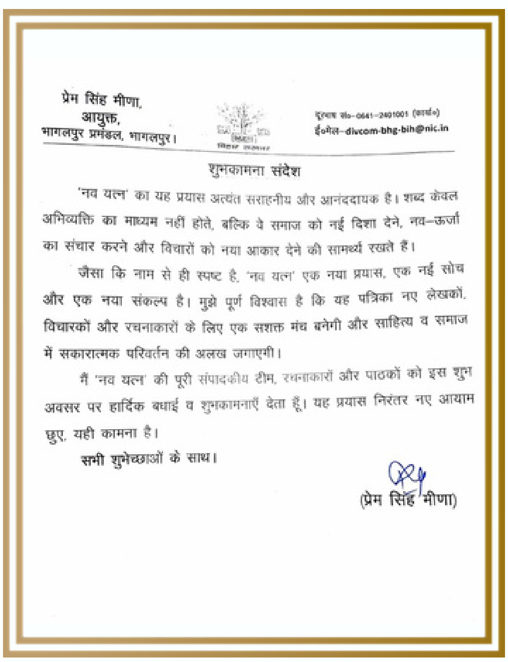

प्रेम सिंह मीणा,
आयुक्त,
भागलपुर प्रमंडल, भागलपुर।

दूरभाष सं०-0641-2401001 (कार्या०)
ई०मेल–divcom-bhg-bih@nic.in

शुभकामना संदेश

'नव यत्न' का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय और आनंददायक है। शब्द केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे समाज को नई दिशा देने, नव–ऊर्जा का संचार करने और विचारों को नया आकार देने की सामर्थ्य रखते हैं।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, 'नव यत्न' एक नया प्रयास, एक नई सोच और एक नया संकल्प है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका नए लेखकों, विचारकों और रचनाकारों के लिए एक सशक्त मंच बनेगी और साहित्य व समाज में सकारात्मक परिवर्तन की अलख जगाएगी।

मैं 'नव यत्न' की पूरी संपादकीय टीम, रचनाकारों और पाठकों को इस शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ देता हूँ। यह प्रयास निरंतर नए आयाम छुए, यही कामना है।

सभी शुभेच्छाओं के साथ।

(प्रेम सिंह मीणा)

हमारा संकल्प बेहतर विद्यालय

संरक्षक की कलम से...

श्री सुभाष कुमार गुप्ता

R.D.D.E

भागलपुर प्रमंडल, भागलपुर

'**नव-यत्न—बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास**' का द्वितीय अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत होना अत्यंत हर्ष और संतोष का विषय है। प्रथम अंक से प्रारंभ हुई यह यात्रा अब निरंतरता, सहभागिता और नवाचार के साथ आगे बढ़ रही है। यह पत्रिका केवल शैक्षणिक गतिविधियों का दस्तावेज नहीं, बल्कि हमारे विद्यालयों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के सकारात्मक प्रयासों को पहचान देने वाला एक मंच है।

शिक्षा के क्षेत्र में वास्तविक परिवर्तन तभी संभव है, जब अच्छे कार्यों और नवाचारों को विद्यालय की सीमाओं से बाहर लाकर व्यापक समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। हमारे शिक्षक और प्रधानाध्यापक सीमित संसाधनों के बीच भी नित नए प्रयोग कर रहे हैं, विद्यार्थी अपनी प्रतिभा और सृजनशीलता से नई संभावनाएँ गढ़ रहे हैं तथा विद्यालय समुदाय के सहयोग से सीखने-सिखाने की संस्कृति निरंतर समृद्ध हो रही है। '**नव-यत्न**' ऐसे ही प्रयासों को सामने लाकर न केवल उनका सम्मान करता है, बल्कि अन्य विद्यालयों और शिक्षकों को भी नई दिशा एवं प्रेरणा प्रदान करता है।

मेरा मानना है कि शिक्षा की सार्थकता तभी है, जब हमारे विद्यालयों में विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित हो और शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के बीच विश्वास, संवाद तथा बेहतर सामंजस्य स्थापित हो। प्रत्येक विद्यालय का प्रयास होना चाहिए कि कोई भी बच्चा सीखने के अवसर से वंचित न रहे। जब शिक्षक बच्चों की आवश्यकताओं, क्षमताओं और जिज्ञासाओं को समझते हुए उनके साथ आत्मीयता से जुड़ते हैं, तभी सीखने की प्रक्रिया वास्तव में प्रभावी बनती है। हमारा सामूहिक संकल्प यह होना चाहिए कि हर बच्चा विद्यालय आए, हर बच्चा सीखे और शिक्षा के माध्यम से स्वयं को इतना सक्षम बनाए कि वह एक जिम्मेदार नागरिक के रुप में राष्ट्र निर्माण में अपनी भूमिका का सफलतापूर्वक निर्वहन कर सके।

नव यत्न के द्वितीय अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों, पदाधिकारियों, रचनाकारों तथा संपादकीय टीम को मैं हार्दिक बधाई देता हूँ और पत्रिका के उज्ज्वल एवं निरंतर प्रगतिशील भविष्य के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

आइए, **बेहतर विद्यालय**, **बेहतर शिक्षा** और **बेहतर बिहार** के निर्माण के लिए अपने साझा प्रयासों को निरंतर आगे बढ़ाते रहें।

संपादक की कलम से

'**नव-यत्न—बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास**' का द्वितीय अंक आपके हाथों में सौंपते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है। प्रथम अंक से प्रारंभ हुआ यह सफर अब केवल एक पत्रिका के प्रकाशन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि भागलपुर प्रमंडल के शिक्षा-जगत में हो रहे सकारात्मक प्रयासों, नवाचारों, उपलब्धियों और प्रेरक अनुभवों को एक साझा मंच पर लाने का सतत प्रयास बन चुका है।

'नव-यत्न' की मूल भावना यही रही है कि विद्यालयों और कक्षाओं में प्रतिदिन होने वाले छोटे-बड़े प्रयास केवल वहीं तक सीमित न रहें। किसी शिक्षक का नया प्रयोग, किसी विद्यार्थी की उपलब्धि, किसी प्रधानाध्यापक की नेतृत्व क्षमता, किसी विद्यालय का सामूहिक परिवर्तन या समुदाय के सहयोग से आरंभ हुई कोई सकारात्मक पहल—जब इन अनुभवों को साझा किया जाता है, तो वे केवल एक विद्यालय तक सीमित नहीं रहते, बल्कि अन्य लोगों के लिए प्रेरणा और संभावना बन जाते हैं।

द्वितीय अंक में भी हमने **भागलपुर प्रमंडल** के विद्यालयों में हो रहे ऐसे ही विविध प्रयासों को समेटने का प्रयास किया है। परियोजना आधारित अधिगम, शैक्षणिक नवाचार, तकनीक का उपयोग, पर्यावरण संरक्षण, विद्यालय विकास, स्थानीय कला एवं संस्कृति, चेतना सत्र, विद्यार्थियों और शिक्षकों की उपलब्धियाँ तथा शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे अनेक सकारात्मक प्रयोग इस अंक को समृद्ध बनाते हैं। इसके साथ ही '**हर घर तिरंगा**' अभियान के माध्यम से शिक्षा-जगत की राष्ट्रचेतना और **राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार-2026** से सम्मानित शिक्षिका **खुशबू कुमारी** की प्रेरक यात्रा जैसे प्रसंग इस अंक को विशेष गरिमा प्रदान करते हैं।

इस अंक की तैयारी के दौरान हमें एक बार फिर यह अनुभव हुआ कि किसी भी सार्थक प्रयास की सबसे बड़ी शक्ति उसका सामूहिक स्वरूप होता है। सामग्री संकलन से लेकर चयन, संपादन, प्रूफरीडिंग और डिजाइन तक अनेक साथियों ने अपनी भूमिका पूरी प्रतिबद्धता के साथ निभाई।

इस अवसर पर हम **'नव-यत्न'** के संरक्षक आदरणीय सुभाष कुमार गुप्ता सर के प्रति विशेष आभार व्यक्त करते हैं। उनके सतत मार्गदर्शन, संरक्षण, प्रोत्साहन और विश्वास ने '**नव-यत्न**' की इस यात्रा को निरंतर दिशा और ऊर्जा प्रदान की है। पत्रिका को एक सार्थक शैक्षणिक मंच के रूप में आगे बढ़ाने में उनका सहयोग हमारे लिए प्रेरणास्रोत रहा है। उनके प्रति पूरी संपादकीय टीम की ओर से हम हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

हमने यह प्रयास भी किया है कि **'नव-यत्न'** केवल उपलब्धियों का संकलन बनकर न रह जाए, बल्कि उन प्रक्रियाओं, चुनौतियों, प्रयोगों और अनुभवों को भी सामने लाए जिनसे होकर कोई सकारात्मक परिवर्तन आकार लेता है। वास्तव में सफलता की अंतिम तस्वीर जितनी प्रेरक होती है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण उसके पीछे की यात्रा भी होती है।

हम आशा करते हैं कि **द्वितीय अंक** का प्रत्येक पृष्ठ पाठकों को कुछ नया जानने, किसी अच्छे प्रयास से जुड़ने और अपने स्तर पर कुछ बेहतर करने की प्रेरणा देगा। यदि इस पत्रिका में प्रकाशित कोई एक विचार भी किसी शिक्षक को नया प्रयोग करने, किसी विद्यार्थी को आगे बढ़ने या किसी विद्यालय को सकारात्मक परिवर्तन की दिशा में एक कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है, तो हम अपने इस प्रयास को सार्थक मानेंगे।

इसी विश्वास और नई ऊर्जा के साथ प्रस्तुत है—

'नव-यत्न' अंक–2 : बेहतर बिहार के लिए साझा प्रयास।

नव-यत्न टीम

संरक्षक

श्री सुभाष कुमार गुप्ता
R.D.D.E
भागलपुर प्रमंडल

मार्गदर्शन एवं प्रेरणा

श्री चंदन कुमार
जिला शिक्षा पदाधिकारी
भागलपुर

श्री देवनारायण पंडित
जिला शिक्षा पदाधिकारी
बाँका

श्री शशि चंदन चौधरी
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
भागलपुर

श्री महेश प्रसाद
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
भागलपुर

मो. फारुक रहमान
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
बाँका

श्री संजय कुमार यादव
जिला कार्यक्रम पदाधिकारी
बाँका

संपादक द्वय

श्रीमती शालिनी कुमारी
(वि० शि०) म० वि० शंकरपुर,
चौवनियाँ, भागलपुर

श्री सिद्धांत जी
प्रो० मध्य विद्यालय ईटहरी,
फुल्लीडुमर, बाँका

डिज़ाइन एवं सृजन

श्री अंकित कुमार
उ० म० वि० लश्करी,
रजौन, बाँका

मीडिया समन्वयक

श्री मुकेश मंडल
इंटर अध्यापक, जगलाल इंटर स्कूल
नगर निगम,भागलपुर

नव-यत्न टीम

वित्तीय समन्वयक

श्री मुकेश आनंद
प्रधानाध्यापक
म० वि० अगरपुर
गोराडीह, भागलपुर

कंटेंट टीम

श्री उमाकांत कुमार
प्रधानाध्यापक
प्रो० म० वि० खड़िहारा उर्दू (बालक)
बाराहाट , बांका

डॉ० शिवनाथ रविदास
उर्फ चहकनाथ भागलपुरी
आदर्श म० वि० तिनटंगा दियारा
रंगराचौक, भागलपुर

श्री ओम प्रकाश
विद्यालय अध्यापक
मध्य विद्यालय दोगच्छी
नाथनगर, भागलपुर

डॉ रश्मि
प्रधानाध्यापिका
उ० उच्च मा० वि० अगरपुर मच्छीपुर
गोराडीह भागलपुर

मासूम रज़ा आदिल
नियोजित शिक्षक
मध्य विद्यालय फतेहपुर
सबौर, भागलपुर

श्री श्याम नंदन सिंह
प्रधानाध्यापक
म० विद्यालय तेलवारा संहौला
भागलपुर

प्रूफ रीडिंग टीम

श्री विभाष कुमार
प्रधानाध्यापक
रा० सारो साहुन कन्या म० वि०
खलीफाबाग, नगर निगम, भागलपुर

श्री राघवेंद्र कुमार झा
प्रधानाध्यापक
म० वि० लखपुरा (बालक)
बाराहाट, बाँका

श्रीमती ज्योति कुमारी
मध्य विद्यालय भनरा, चांदन
बांका

श्री तारकेश्वर ठाकुर
प्रधान शिक्षक
प्रा० वि० हाजीपुर दक्षिण टोला
शाहकुण्ड, भागलपुर

श्रीमती रूबी कुमारी
वि० शि०, उ० म० वि० सरौनी
बौंसी, बाँका

श्री अनिल कुमार दीपक
प्रधानाध्यापक
म० वि०पछियारी टोला, औलियाबाद
बिहपुर, भागलपुर

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विषय	पेज क्र.
1	मॉडल स्कूल की यात्रा	1-4
2	तिरंगा हर घर, राष्ट्रभाव हर हृदय	5-6
3	एक छोटा नवाचार, बड़ा बदलाव	7-10
4	कबाड़ से कमाल तक	11-14
5	चेतना सत्र बना सीखने का मंच	15-16
6	परियोजना से प्रगति	17-20
7	बच्चों की उड़ान	21-24
8	बदलते विद्यालय की कहानी	25-28
9	मृदगौरव: अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर	29-30
10	एक शिक्षक, अनेक बदलाव	31-34
11	प्रेरक प्रधान	35-38
12	जब बच्चे बने शिक्षक	39-40
13	डिजिटल टूल, रियल लर्निंग	41-46
14	कम उपस्थिति से नियमितता तक	47-48

नव-यत्न

न

नव यत्न है दीप शिक्षागार का,
प्रयोग है स्कूल में नवाचार का।
अंग का शंख सुनेगा सारा विश्व,
बदलाव का विहान है बिहार का।।

व

वरदान है यह नौनिहाल का,
अंदर में खजाना है धमाल का।
रचनाकार इसके बड़े बेजोड़ हैं,
संपादकगण भी हैं कमाल का।।

य

यत्न करें जो हो नव मुकाम का,
हर कर्तव्य कर्म हो निष्काम का।
मार्गदर्शन करेगी यह युगांत तक,
भंडार है नवयत्न के पैगाम का।।

त्

त्याग चैन भला हो कर्ण के देश का,
अमर इतिहास है अंग प्रदेश का।
विक्रमशिला मंदार सतीश सन्याल,
वासु पूज्य मेंहीं बिहुला के संदेश का।।

न

नवयत्न है निदेशक के हाथ का,
शिक्षक और शिक्षार्थी के साथ का।
विकास विद्यालय का अधिक होगा,
यह अटल विश्वास है चहकनाथ का।।

रचयिता
डॉ शिवनाथ रविदास
उर्फ चहकनाथ भागलपुरी

शीर्षक

झोपड़ी से मॉडल स्कूल तक की यात्रा

मॉडल स्कूल की यात्रा

कल-कल निनाद करती उत्तर वाहिनी भागीरथी के तट पर प्रकृति की गोद में बसे तीनटंगा दियारा की भूमि वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनाए हुए है, जो कि भागलपुर जिला के रंगरा चौक प्रखंड में अवस्थित है। हर वर्ष गंगा का कोपभाजन बनने और अनेक प्राकृतिक एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के बावजूद भी इस अभावग्रस्त व सुदूर ग्रामीण इलाके में शिक्षा की ज्योति निरंतर प्रज्ज्वलित होती रही। इसका प्रमुख कारण है- यहां के ग्रामीणों की जागरुकता , शिक्षा के प्रति उनकी गहरी आस्था और अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता।

इसी शैक्षिक चेतना और सामुदायिक सहभागिता के परिणामस्वरुप 3 जनवरी 1983 को यहां **'संत विनोबा उच्च विद्यालय'** की स्थापना हुई। **आचार्य विनोबा भावे** के '**भूदान आंदोलन**' के तहत **'बिहार भूदान यज्ञ कमिटी पटना'** के द्वारा 5 एकड़ 42 डिसमिल और ग्रामीणों के सहयोग से प्राप्त भूमि को मिलाकर कुल 13 एकड़ भूमि के साथ यह विद्यालय अपनी भव्यता और विशालता को प्रदर्शित करता है। आरंभ से ही विद्यालय का संचालन स्थानीय विद्यालय शिक्षा समिति की देखरेख में होता रहा है। देखते ही देखते मनीषी अध्यापकों का सान्निध्य पाकर उनके नेतृत्व में यहां के शिक्षार्थियों के प्रतिभा की छाप पूरे नवगछिया अनुमंडल में दिखाई देने लगी।

तत्कालीन मुखिया, जनप्रतिनिधियों ,प्रबुद्ध ग्रामीणों और विद्यालय परिवार के अथक प्रयास से एक झोपड़ी में शुरु हुई यह शैक्षिक यात्रा धीरे-धीरे पक्के भवन और आठ कमरों वाले विद्यालय तक पहुंची। **9 अप्रैल 2013** को इस विद्यालय को भागलपुर जिला का चौथा राजकीय विद्यालय घोषित किया गया । यह उपलब्धि विद्यालय की विकास यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। कहते हैं न कि -

"मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है।
पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।"

इसी हौसले के साथ विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था और विकास यात्रा निरंतर आगे बढ़ता रहा। वर्ष 2023 तक चार समर्पित एवं अनुभवी शिक्षकों के निर्देशन में लगभग 500 विद्यार्थियों के साथ यह संस्थान एक विशाल वटवृक्ष का रुप लेने लगा था।

विद्यालय की शैक्षिक सक्रियता और विद्यार्थियों की नियमितता ने प्रशासन का भी ध्यान आकृष्ट किया। एक दिन विद्यालय में तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी श्री संजय कुमार का औचक निरीक्षण हुआ, जिसमें छुट्टी के समय विद्यार्थियों की उपस्थिति लगभग **95%** पाई गई। परिणामस्वरुप 26 जनवरी 2023 को सैंडिस कंपाउंड भागलपुर में गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर भागलपुर प्रमंडल के तत्कालीन प्रमंडलीय आयुक्त के द्वारा विद्यालय को शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए '**एक्सीलेंस अवार्ड'** से सम्मानित किया गया। वर्ष 2023 में इसे उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में अपग्रेड किया गया। वर्ष 2023, 2024 और 2025 में बिहार लोक सेवा आयोग के माध्यम से नवचयनित प्रखर, ऊर्जावान ,प्रतिभावान व अनुभवी शिक्षकों के पदस्थापन से विद्यालय की शैक्षिक क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। अब **शिक्षकों की संख्या 4 से बढ़कर 21** हो गई।

आज आसपास के अन्य उच्च माध्यमिक विद्यालय की मौजूदगी के बावजूद **राजकीय संत विनोबा उच्च माध्यमिक विद्यालय** विद्यार्थियों और अभिभावकों की पहली पसंद बन गई है। इसके प्रमुख कारण हैं-

1. लोकतांत्रिक व आत्म-अनुशासन से प्रेरित वातावरण।
2. माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर प्रत्येक विषय के अनुभवी शिक्षकों की उपलब्धता।
3. नियमित व समयबद्ध कक्षाकक्ष का संचालन।
4. शिक्षकों की कर्मठता, लगनशीलता व नवाचार युक्त शिक्षण - अधिगम प्रक्रिया।
5. बच्चों की गणवेष में शत प्रतिशत उपस्थिति सुनिश्चित करने का प्रयास।
6. भव्य व समृद्ध पुस्तकालय की सुविधा।
7. विज्ञान प्रयोगशाला, कंप्यूटर कक्षा, स्मार्ट क्लास का नियमित संचालन।
8. सीसीटीवी कैमरा, स्वच्छ पेयजल, साफ - सफाई, विस्तृत खेल मैदान, सुव्यवस्थित कक्षाकक्ष व चुस्त - दुरुस्त प्रशासनिक व्यवस्था।
9. बच्चों के लिए संगीत वाद्य यंत्रों, ब्रास बैंड की भी विधिवत शिक्षा की व्यवस्था।

विद्यालय की विकास यात्रा में एक और गौरवपूर्ण अध्याय तब जुड़ा जब रंगरा चौक प्रखंड के अंतर्गत इसे **"मॉडल स्कूल"** के रूप में मान्यता प्रदान की गई। इस विद्यालय का **'सरस्वती विद्या निकेतन मॉडल स्कूल'** के रूप में 19 जुलाई 2026 को माननीय मुख्यमंत्री के कर कमलों द्वारा ऑनलाइन उदघाटन किया गया। अब यहां नीट व जेईई जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की भी तैयारी ऑनलाइन कराई जा रही है। इससे अभूतपूर्व प्रयासों के बदौलत दियारा क्षेत्र के उन विद्यार्थियों को नई दिशा मिली है, जिन्हें बेहतर प्रतियोगी तैयारी के लिए दूर दराज के शहरों में जाना कठिन होता था। विद्यालय परिसर के भीतर ही राजकीय डिग्री कॉलेज की भी स्थापना की गई है। दूसरे छोर पर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भी स्थापित है।

आज विद्यालय में कक्षा 9 वीं से 12वीं तक **कुल 965** विद्यार्थी नामांकित है तथा उनकी नियमित औसत उपस्थिति लगभग **80%** तक रहती है। यह उपलब्धि उस क्षेत्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, जहां आज भी अधिकांश परिवारों की आजीविका मछली पालन और मछली व्यवसाय, कृषि और मजदूरी पर निर्भर है। तीनटंगा दियारा की इस पावन धरती पर एक छोटी-सी झोपड़ी से शुरु हुई शिक्षा की यात्रा आज आधुनिक सुविधाओं से युक्त मॉडल स्कूल के रूप में शिखर तक पहुंच चुकी है। यह यात्रा केवल भवनों, कमरों और संसाधनों के विस्तार की कहानी नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज की जागरुकता, शिक्षकों की प्रतिबद्धता, विद्यार्थियों की मेहनत और सामुदायिक सहभागिता से संभव हुए परिवर्तन की कहानी है। राजकीय संत विनोबा उच्च माध्यमिक विद्यालय आज उस विश्वास का जीवंत उदाहरण है कि यदि **समाज, शिक्षक, विद्यार्थी और प्रशासन मिलकर सकारात्मक दिशा** में प्रयास करें, तो विषम परिस्थितियों में भी शिक्षा का दीप प्रज्ज्वलित किया जा सकता है। गंगा की धार भले ही हर वर्ष चुनौतियां लेकर आए, लेकिन **तीनटंगा दियारा** में शिक्षा की यह धारा निरंतर प्रवाहित होती रहेगी। इसलिए विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि -

"समय के साथ ही सही परन्तु सकारात्मक प्रयास अवश्य परिवर्तन लाता है।"

शीर्षक

गौरवशाली विरासत से मॉडल विद्यालय तक

मॉडल स्कूल की यात्रा

बाँका जिला के बाराहाट प्रखंड में अवस्थित **श्री सूर्य नारायण सिंह उच्च विद्यालय (सरस्वती विद्या निकेतन)** क्षेत्र की शैक्षिक चेतना और सामाजिक विकास की एक गौरवशाली विरासत है। **2 जून 1952** को स्थापित इस विद्यालय ने सात दशकों से अधिक की अपनी यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। कभी क्षेत्र के प्रतिष्ठित विद्यालयों में गिना जाने वाला यह संस्थान आज आधुनिक सुविधाओं से युक्त मॉडल विद्यालय के रूप में अपनी पुरानी गरिमा को नई ऊँचाइयों तक ले जाने की दिशा में अग्रसर है। हाल ही में विद्यालय को **मॉडल विद्यालय** का दर्जा प्राप्त हुआ है तथा इसके नाम में **'सरस्वती विद्या निकेतन'** भी जोड़ा गया है।

विद्यालय की स्थापना के समय इसके प्रधानाध्यापक **श्री सुबोध नारायण** सिंह थे। उनके कुशल नेतृत्व, अनुशासनप्रियता और उत्कृष्ट विद्यालय संचालन का प्रभाव इतना व्यापक था कि 1990 के दशक में उन्हें उत्कृष्ट विद्यालय संचालन के लिए **राष्ट्रपति पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। उनके कार्यकाल में यह विद्यालय क्षेत्र के श्रेष्ठ शिक्षण संस्थानों में गिना जाता था। विद्यार्थियों के लिए छात्रावास की सुविधा भी उपलब्ध थी, जिसके कारण **दूर-दराज** के क्षेत्रों से आने वाले विद्यार्थी यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर निकले अनेक विद्यार्थी आज देश और समाज के विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होकर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। उनकी उपलब्धियाँ इस विद्यालय की गौरवशाली परंपरा का प्रमाण हैं।
समय के साथ विद्यालय को एक कठिन दौर से भी गुजरना पड़ा। शिक्षकों के सेवानिवृत्त होने के बाद उनके स्थान पर समय पर पर्याप्त नियुक्तियाँ नहीं हो सकीं। धीरे-धीरे शिक्षकों की संख्या कम होती गई और इसका प्रभाव विद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था पर पड़ा। रखरखाव के अभाव में पुराने विद्यालय भवन एवं छात्रावास भी जर्जर होने लगे। विभाग द्वारा समय-समय पर कुछ संसाधन उपलब्ध कराए गए, लेकिन वे विद्यालय की व्यापक आवश्यकताओं की तुलना में अपर्याप्त सिद्ध हुए। इस दौर में विद्यालय अपनी पुरानी पहचान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करता रहा।

वर्ष **2007** में नियोजन प्रथा के प्रारंभ के बाद माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की नियुक्ति का नया दौर शुरु हुआ। इससे विद्यालय की **शैक्षणिक गतिविधियों** को पुनः गति मिली। कालांतर में यहाँ कक्षा 11वीं एवं 12वीं की पढ़ाई भी प्रारंभ हुई। हालांकि उच्च माध्यमिक स्तर पर **शिक्षकों की उपलब्धता** अपेक्षाकृत देर से हुई और प्रारंभिक वर्षों में अतिथि शिक्षकों के माध्यम से शिक्षण व्यवस्था को आगे बढ़ाया गया।

विद्यालय में विज्ञान शिक्षण को प्रयोगात्मक एवं प्रभावी बनाने की दिशा में भी निरंतर प्रयास हुए। विज्ञान शिक्षक के रुप में कार्य करते हुए **श्री अरुण कुमार अमन** को यह अनुभव हुआ कि विज्ञान की वास्तविक समझ केवल पाठ्यपुस्तकों से संभव नहीं है। विद्यार्थियों को प्रयोग करने, परिणाम देखने और स्वयं निष्कर्ष निकालने का अवसर मिलना चाहिए। इसी सोच के साथ विद्यालय में सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशाला विकसित करने का प्रयास किया गया। वित्तीय वर्ष 2017-18 में विभाग से लगभग 8 लाख रुपये का आवंटन प्राप्त हुआ, जिससे प्रयोगशाला के विकास एवं आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था को गति मिली।

विद्यालय की विकास यात्रा में तत्कालीन जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। तत्कालीन जिला पदाधिकारी **श्री कुंदन कुमार** तथा तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी के मार्गदर्शन एवं सहयोग से विद्यालय के विकास को गति मिली। शिक्षकों की प्रतिबद्धता और उपलब्ध संसाधनों के बेहतर उपयोग ने विद्यालय को पुनः आगे बढ़ने का आधार प्रदान किया।

2015 के बाद विद्यालय में विकास की गति और तेज हुई। यहाँ व्यावसायिक शिक्षा एवं कृषि शिक्षा की शुरुआत हुई। वर्तमान में विद्यालय में **27 योग्यताप्राप्त शिक्षक** एवं **7 अन्य कर्मी कार्यरत** हैं। कक्षा 9वीं से 12वीं तक लगभग 900 छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं। विद्यालय का विशाल परिसर लगभग 18 एकड़ भूमि में विस्तृत है। विद्यार्थियों के लिए पहले से ही एक बहुत बड़ा खेल मैदान उपलब्ध है, जहाँ खेलकूद एवं अन्य शारीरिक गतिविधियों के आयोजन की पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

विद्यालय का वर्तमान आधारभूत ढाँचा इसकी बदलती तस्वीर को स्पष्ट रुप से प्रस्तुत करता है। यहाँ 13 कमरों में कक्षाएँ संचालित होती हैं तथा **अत्याधुनिक भौतिकी, रसायनशास्त्र एवं जीवविज्ञान प्रयोगशालाएँ, ISM Laboratory, व्यावसायिक प्रयोगशाला, कंप्यूटर लैब, डिजिटल लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लास, जिम तथा आर.ओ. पेयजल** जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक प्रतिभा को विकसित करने के लिए संगीत के विभिन्न वाद्ययंत्र एवं आवश्यक संसाधन भी उपलब्ध हैं।

विद्यालय परिसर में विकसित सुंदर एवं सुव्यवस्थित उद्यान इसकी प्राकृतिक सुंदरता को बढ़ाता है। पर्यावरण संरक्षण एवं विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित करने के लिए **इको क्लब** एवं **यूथ क्लब** सक्रिय हैं। इस प्रकार विद्यालय में शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम तक सीमित न रखकर खेल, कला, संस्कृति, पर्यावरण और कौशल विकास से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

विद्यालय की विकास यात्रा का एक महत्वपूर्ण नया अध्याय यह है कि विद्यालय की अपनी भूमि पर ही **प्रखंड स्तरीय स्टेडियम** का निर्माण हो रहा है। इसी विद्यालय की भूमि पर विद्यालय के नाम से जुड़े **'सूर्य नारायण सिंह डिग्री कॉलेज'** का निर्माण भी हो रहा है। इससे आने वाले समय में यह पूरा परिसर शिक्षा और खेल का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है। विद्यालय को हाल ही में मॉडल विद्यालय का दर्जा मिलना इस विकास यात्रा की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

विद्यालय के **शिक्षकों, कर्मियों, विद्यार्थियों और अभिभावकों** के सामूहिक प्रयासों से शैक्षणिक अनुशासन, सकारात्मक कार्यसंस्कृति और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वातावरण को निरंतर बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। विद्यालय की वर्तमान उपलब्धियों तथा आधारभूत सुविधाओं के विकास में सामूहिक नेतृत्व, निरंतर प्रयास और उपलब्ध संसाधनों के प्रभावी उपयोग की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शैक्षणिक उपलब्धियों की दृष्टि से भी विद्यालय का प्रदर्शन उत्साहजनक है। कक्षा **10वीं** एवं **12वीं** की बोर्ड परीक्षाओं में प्रत्येक वर्ष विद्यालय का परिणाम अच्छा रहता है। यह उपलब्धि शिक्षकों की मेहनत, विद्यार्थियों की लगन, अभिभावकों के सहयोग और विद्यालय में विकसित सकारात्मक शैक्षिक वातावरण का परिणाम है। **1952 में स्थापित** श्री सूर्य नारायण सिंह उच्च विद्यालय की कहानी केवल एक विद्यालय की कहानी नहीं है। यह सात दशकों से अधिक समय में अनेक पीढ़ियों के सपनों, संघर्षों, उपलब्धियों और पुनरुत्थान की जीवंत गाथा है। गौरवशाली अतीत की विरासत को संजोते हुए आधुनिक प्रयोगशालाओं, डिजिटल शिक्षा, व्यावसायिक एवं कृषि शिक्षा, संगीत, खेल और समृद्ध आधारभूत संरचना के साथ यह विद्यालय अब एक नए युग की ओर बढ़ रहा है। आने वाले समय में यह संस्थान बाराहाट ही नहीं, बल्कि पूरे बाँका जिले के लिए **गुणवत्तापूर्ण एवं आधुनिक शिक्षा** का एक प्रेरणास्रोत बने—यही इसकी **उज्ज्वल यात्रा** का अगला पड़ाव है।

शीर्षक

तिरंगा हर घर, राष्ट्रभाव हर हृदय

हर घर तिरंगा

तिरंगा हमारे **राष्ट्र की अस्मिता**, **स्वाधीनता-संघर्ष** की अमर गाथा और अनगिनत बलिदानों की चिरंतन स्मृति का प्रतीक है। इसकी प्रत्येक फहराव में स्वतंत्रता का स्वाभिमान है, प्रत्येक रंग में राष्ट्रजीवन का कोई गहन अर्थ निहित है और अशोक चक्र में **सतत कर्म**, **गतिशीलता** तथा **प्रगति** का शाश्वत संदेश। जब तिरंगा किसी घर की छत पर लहराता है, तब वह केवल आकाश से संवाद नहीं करता, बल्कि नागरिकों के अंतर्मन में सुप्त राष्ट्रचेतना को भी स्पंदित करता है। इसी राष्ट्रभाव को जन-जन के हृदय तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम बना है– **'हर घर तिरंगा'** अभियान।

'हर घर तिरंगा' का उद्देश्य महज राष्ट्रीय ध्वज फहराने की औपचारिकता तक सीमित नहीं है। यह अभियान राष्ट्रगौरव, नागरिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता के मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता को जनमानस में प्रतिष्ठित करने का प्रयास है। स्वतंत्रता जिन संघर्षों, संकल्पों और बलिदानों से अर्जित हुई, उनकी स्मृति को वर्तमान पीढ़ी के मानस में जीवंत रखना भी इस अभियान का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

इसी विराट राष्ट्रभाव को जनचेतना का स्वर देने के लिए **भागलपुर प्रमंडल के क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक** आदरणीय **श्री सुभाष कुमार गुप्ता सर** के नेतृत्व में तिरंगा यात्रा निकाली गई। विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों एवं विद्यालयों के लगभग दो हजार सदस्यों की सहभागिता ने इस अभियान को भव्य आयाम प्रदान किया। क्षेत्रीय शिक्षा उपनिदेशक कार्यालय परिसर से आरंभ हुई यह विराट तिरंगा यात्रा भागलपुर के विभिन्न प्रमुख **चौक-चौराहों** और **मार्गों** से होती हुई पुनः कार्यालय परिसर पहुँची। हाथों में फहराता तिरंगा, मुखरित होते राष्ट्रभक्ति के उद्घोष, राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत बैनर -पोस्टर और **कदमों में अदम्य उत्साह** ....., समूचा वातावरण मानो राष्ट्रगौरव की प्रचंड ऊर्जा से दीप्त हो उठा।

भागलपुर एवं बांका जिले के शिक्षा विभाग ने भी पूरे उत्साह, उमंग और राष्ट्रनिष्ठा के साथ हर घर तिरंगा अभियान को जन-आंदोलन का स्वरुप प्रदान किया तथा '**हर घर तिरंगा**' का संदेश जन-जन तक पहुँचाया गया। दोनों जिलों में शिक्षा पदाधिकारियों के नेतृत्व में तिरंगा यात्राएँ निकाली गईं। शिक्षक, शिक्षिका, विद्यालय परिवार, प्रशिक्षण संस्थानों से जुड़े सदस्य तथा शिक्षा विभाग के कर्मी जब अनुशासित कदमों से एक साथ आगे बढ़े, तो यह यात्रा महज मार्गों पर चलती भीड़ नहीं रही; वह **शिक्षा-जगत** की राष्ट्रचेतना का जयघोष बन गई।

दोनों जिलों की यात्राओं में नारों की गूँज, बैनरों की संदेशात्मकता और प्रेरक स्लोगनों की मुखरता ने वातावरण को ऐसा राष्ट्रमय बना दिया कि राह चलते लोगों के भीतर भी देशभक्ति का ज्वार उमड़ता दिखाई दिया। कहीं हाथों में तिरंगा था तो कहीं राष्ट्रभक्ति के उद्घोष; कहीं बैनरों पर अंकित संदेश नागरिकों को प्रेरित कर रहे थे, तो कहीं बच्चों और युवाओं की उत्साहपूर्ण सहभागिता भविष्य की **राष्ट्रचेतना** का आश्वस्तकारी संकेत दे रही थी।

इस अभियान में शिक्षा विभाग की भूमिका ने सिद्ध किया कि शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का उपक्रम नहीं, **बल्कि संस्कार**, **नागरिक चेतना** और **राष्ट्रनिर्माण का प्रस्थान-बिंदु** है। शिक्षक जब स्वयं राष्ट्रभाव के संवाहक बनकर समाज के मध्य उपस्थित होते हैं, तब उनका प्रभाव कक्षा की चहारदीवारी से निकलकर समुदाय के मानस तक पहुँचता है। भागलपुर प्रमंडल की ये तिरंगा यात्राएँ इस बात की सशक्त अभिव्यक्ति बनी कि शिक्षा विभाग केवल पाठ्यक्रम और प्रशासन का दायित्व निर्वहन करने वाला तंत्र नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना और राष्ट्रीय मूल्यों के संवर्धन का भी सशक्त वाहक है।

इन तिरंगा यात्राओं का संदेश स्पष्ट है -

तिरंगा हर घर की छत पर पहुँचे, राष्ट्रभाव हर हृदय में प्रतिष्ठित हो, शिक्षा हर नागरिक में उत्तरदायित्व जगाए और भारत की एकता-अखंडता का ध्वज सदैव गौरव के साथ लहराता रहे।

शीर्षक

उंगलियां बनी कैलकुलेटर

एक छोटा नवाचार बड़ा बदलाव

जब पढ़ाई किताबों की सीमाओं से बाहर निकलकर खेल, अनुभव और रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ती है, तो कठिन विषय भी बच्चों के लिए सरल और रोचक बन जाता है। बिहार के बाँका जिले के **उत्क्रमित मध्य विद्यालय सरौनी, बौसी** की शिक्षिका **श्रीमति रुबी कुमारी** ने गणित को बच्चों के लिए आसान, आनंददायक और डरमुक्त बनाने की ऐसी पहल की, जिसने विद्यार्थियों के सीखने का तरीका बदला और उनके नवाचार को देशभर में पहचान दिलाई।

शिक्षिका का मानना है कि "गणित से डरने के बजाय बच्चों को उससे दोस्ती करना सिखाना चाहिए। जीवन में गणना की जरुरत हर जगह पड़ती है और प्रतियोगी परीक्षाओं में तेज व सही कैलकुलेशन का महत्व और बढ़ जाता है।" इसी सोच के साथ उन्होंने बच्चों को आसान शॉर्टकट, रोचक ट्रिक्स और व्यावहारिक तरीके सिखाने शुरु किए।

बड़े-बड़े **गुणा-भाग**, **जोड़-घटाव** और **जटिल गणनाएँ** जब बच्चे सरल तरीकों से कुछ ही समय में करने लगे, तो उनके लिए गणित कठिन विषय के बजाय खेल जैसा बन गया। इससे उनकी गति बढ़ी, गलतियों का डर कम हुआ और आत्मविश्वास विकसित हुआ। उनका उद्देश्य केवल सवाल हल करवाना नहीं, बल्कि बच्चों में गणित को समझने का नया नजरिया पैदा करना था।

रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ा गणित:- शिक्षिका बच्चों को समझाती हैं कि गणित केवल किताबों और ब्लैकबोर्ड में नहीं है। समय देखना, सामान खरीदना, पैसे का हिसाब रखना, दूरी और वजन समझना तथा वस्तुओं की संख्या गिनना–हम हर दिन किसी न किसी रुप में गणित का उपयोग करते हैं। इसी कारण वे गणित को बच्चों के **दैनिक अनुभवों** से जोड़कर पढ़ाती हैं। उनका मानना है कि जब बच्चे अपने आसपास की दुनिया में गणित को पहचानते हैं, तब सूत्र और संख्याएँ उन्हें बोझ नहीं लगतीं।

उंगलियां बनीं बच्चों का कैलकुलेटर:- शिक्षिका के सबसे चर्चित नवाचारों में **फिंगर कैलकुलेशन** प्रमुख है। उन्होंने बच्चों को उंगलियों की सहायता से कठिन लगने वाली गणनाएँ सरल तरीके से करना सिखाया। विशेष रुप से 9 का पहाड़ा और गुणा करने की फिंगर ट्रिक बच्चों के बीच बेहद लोकप्रिय हुई।

जो पहाड़े पहले बच्चों को रटने पड़ते थे, वही उंगलियों के सहारे सीखना उनके लिए खेल बन गया। **कक्षा 9 और 10** के विद्यार्थियों को भी उन्होंने फिंगर कैलकुलेशन की विभिन्न तकनीकें सिखाईं, जिससे लंबी गणनाएँ आसान और तेज हो गई। इन गतिविधियों ने बच्चों को सवालों से घबराने के बजाय उन्हें चुनौती की तरह लेने के लिए प्रेरित किया।

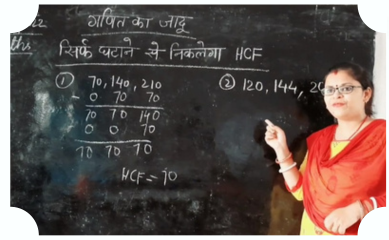

उंगलियों पर त्रिकोणमिति:- कक्षा 10 के विद्यार्थियों के लिए शिक्षिका रुबी कुमारी ने **त्रिकोणमिति** को भी रोचक बनाने का तरीका खोजा। सामान्यतः विद्यार्थियों को **sin** और **cos** के विभिन्न कोणों के मान याद करने में कठिनाई होती है। उन्होंने हाथ की उंगलियों की सहायता से त्रिकोणमितीय सारणी तैयार करने की सरल तकनीक सिखाई।

इस तरीके से विद्यार्थी केवल रटने पर निर्भर रहने के बजाय **उंगलियों** की सहायता से मान निकाल सकते थे। इससे त्रिकोणमिति जैसा कठिन लगने वाला अध्याय भी सहज और रोचक बन गया। यह उनके शिक्षण की उस सोच को दर्शाता है, जिसमें रटने के बजाय समझने और करके सीखने पर जोर है।

कक्षा से देशभर तक पहुँचा नवाचार :- शिक्षिका के पढ़ाने के अनोखे अंदाज का वीडियो जब सोशल मीडिया पर पहुँचा, तो लोगों ने उसे खूब पसंद किया। **उंगलियों को कैलकुलेटर** की तरह इस्तेमाल करते हुए गणित समझाने का उनका तरीका तेजी से चर्चा में आया।

उनके नवाचार को **प्रसिद्ध उद्योगपति आनंद महिंद्रा** ने भी सराहा। इसके अलावा **शाहरुख खान** और **अमिताभ बच्चन** जैसी चर्चित हस्तियों के द्वारा भी उनके शिक्षण तरीके की प्रशंसा और वीडियो साझा किए जाने से उनके प्रयास को देशभर में व्यापक पहचान मिली। एक सरकारी विद्यालय की कक्षा में शुरु हुआ यह प्रयोग शिक्षक की रचनात्मक सोच की शक्ति का उदाहरण बन गया।

सम्मान ने बढ़ाया उत्साह:- शिक्षिका **रुबी कुमारी** के अभिनव शिक्षण कार्यों को प्रशासनिक स्तर पर भी सराहना मिली। वर्ष 2020 में तत्कालीन जिला पदाधिकारी, बाँका **श्री कुंदन कुमार** तथा तत्कालीन जिला शिक्षा पदाधिकारी **मो0 अहसन** द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया। इसके बाद वर्ष 2021 में बिहार दिवस के अवसर पर पटना में आयोजित कार्यक्रम में बिहार सरकार के शिक्षा विभाग के तत्कालीन अपर **मुख्य सचिव श्री संजय कुमार** ने भी उन्हें सम्मानित किया।

इन सम्मानों ने उनके प्रयासों को पहचान देने के साथ उन्हें और बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। लेकिन रुबी कुमारी के लिए सबसे बड़ा सम्मान कोई प्रमाणपत्र या प्रसिद्धि नहीं है। उनकी असली खुशी उस क्षण में है, जब कोई बच्चा कठिन सवाल देखकर घबराने के बजाय आत्मविश्वास से कहता है–**"मैम, यह तो आसान है!"**

गणित से दोस्ती की कहानी:- श्रीमति रुबी कुमारी की कहानी केवल फिंगर कैलकुलेशन, गणितीय ट्रिक्स या वायरल वीडियो की कहानी नहीं है। यह उस शिक्षिका की सोच की कहानी है, जो बच्चों की समस्या को समझती है और उसके समाधान के लिए पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर प्रयोग करती है।
उंगलियों से गणना, 9 का पहाड़ा, त्रिकोणमितीय सारणी और गणित को दैनिक जीवन से जोड़ने जैसे उनके प्रयासों का उद्देश्य एक ही है–बच्चों के मन से गणित का डर दूर करना।

उनकी पहल बताती है कि शिक्षा में बदलाव के लिए हमेशा महंगे संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती। एक शिक्षक की **रचनात्मक सोच**, **बच्चों को समझने की क्षमता** और कुछ **नया करने का साहस** भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

शिक्षिका रुबी कुमारी ने अपनी कक्षा में साबित किया है कि जब गणित को बच्चों की भाषा, खेल और अनुभवों से जोड़ा जाए, तो उंगलियां भी कैलकुलेटर बन सकती हैं और गणित डर नहीं, आनंद बन सकता है।

शीर्षक

चित्र आधारित भाषा शिक्षण

एक छोटा नवाचार बड़ा बदलाव

भाषा शिक्षण का उद्देश्य केवल बच्चों को व्याकरण के नियम याद कराना या पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों के उत्तर लिखवा देना नहीं है। भाषा का वास्तविक उद्देश्य बच्चों को इस योग्य बनाना है कि वे अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को सहज रुप से व्यक्त कर सके, दूसरों की बात समझ सकें और भाषा का उपयोग सीखने, समझने तथा अपने व्यक्तित्व के विकास में कर सकें। भागलपुर जिला की **कन्या प्राथमिक विद्यालय, जयरामपुर, बिहपुर** की शिक्षिका **श्रीमति बिजली कुमारी** बच्चे भाषा को केवल पुस्तकों से नहीं सीखते। वे अपने आसपास के परिवेश, लोगों की बातचीत, अनुकरण, सतत अभ्यास, दृश्य अनुभवों और रुचिकर गतिविधियों के माध्यम से भी भाषा अर्जित करते हैं। इसी कारण **भाषा शिक्षण** में चित्र आधारित क्रियाकलापों का विशेष महत्व है।

बच्चों की दुनिया मूलतः दृश्य अनुभवों से भरी होती है। वे किसी चित्र, वस्तु, घटना या दृश्य को देखकर स्वाभाविक रुप से प्रश्न करते हैं, अनुमान लगाते हैं और अपने अनुभवों से उसे जोड़ते हैं। जब इन्हीं चित्रों का उपयोग कक्षा में भाषा सीखने के साधन के रुप में किया जाता है, तो सीखने की प्रक्रिया अधिक सहज, रोचक और प्रभावी बन जाती है। चित्र बच्चों की **कल्पनाशक्ति** को सक्रिय करते हैं और उन्हें बोलने, सोचने तथा लिखने के लिए एक ठोस आधार प्रदान करते हैं।

भाषा के चार आधारभूत कौशल–**सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना**– एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। इनमें लेखन कौशल अपेक्षाकृत कठिन माना जाता है, क्योंकि किसी विचार को व्यवस्थित रुप से शब्दों और वाक्यों में व्यक्त करने के लिए बच्चे को भाषा पर एक निश्चित स्तर की पकड़ की आवश्यकता होती है। ऐसे में चित्र आधारित गतिविधियाँ लेखन की ओर बढ़ने के लिए एक सरल और आनंददायक माध्यम बन जाती है।

कक्षा में इस प्रकार की **गतिविधि** के लिए बच्चों के सामने कोई अर्थपूर्ण चित्र रखा जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक ऐसा चित्र जिसमें एक बालक पेड़ की ओर देख रहा हो, पेड़ पर घोंसला बना हो, घोंसले में पक्षी अपने बच्चों के साथ दिखाई दे रहे हों और पास ही कोई घड़ा रखा हो। शिक्षक बच्चों से चित्र को ध्यानपूर्वक देखने के लिए कह सकते हैं और कुछ छोटे-छोटे निर्देश दे सकते हैं। जैसे–चित्र में दिखाई दे रहे बालक का कोई नाम रखें, उसके वस्त्रों का वर्णन करें, घोंसले में बैठे पक्षियों को देखें और बड़े तथा छोटे पक्षियों के बीच संबंध का अनुमान लगाएँ।

इसके बाद बच्चों से प्रश्न पूछे जा सकते हैं–बालक पेड़ की ओर क्यों देख रहा है? पक्षी क्या कर रहे हैं? वे किसे खाना खिला रहे हैं? घड़े में क्या हो सकता है? कौआ वहाँ क्यों बैठा है? इन प्रश्नों का उद्देश्य किसी एक निश्चित उत्तर तक पहुँचना नहीं होता, बल्कि बच्चों को सोचने और कल्पना करने के लिए प्रेरित करना होता है। जब बच्चे इन प्रश्नों के उत्तर देना शुरु करते हैं, तो कक्षा में अनेक प्रकार की **कल्पनाएँ** सामने आती हैं। कोई बच्चा कह सकता है कि बालक पक्षियों को देखने आया है, कोई कह सकता है कि वह घोंसले से गिरे बच्चे की चिंता कर रहा है और कोई अपनी अलग कहानी बना सकता है। यही विविधता चित्र आधारित अधिगम की सबसे बड़ी विशेषता है। प्रत्येक बच्चा अपने **अनुभव, समझ** और **कल्पना** के आधार पर अलग-अलग उत्तर देता है।

https://www.navyatna.online/

जब सभी प्रश्नों पर चर्चा हो जाती है, तब बच्चों को उन्हीं उत्तरों को जोड़ते हुए दस से पंद्रह वाक्यों का अनुच्छेद या छोटी कहानी लिखने के लिए कहा जा सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे पहले चित्र देखते हैं, फिर सुनते हैं, बोलते हैं, सोचते हैं और अंततः लिखते हैं। इस प्रकार भाषा के चारों कौशल एक ही गतिविधि में स्वाभाविक रुप से शामिल हो जाते हैं।

ऐसी **गतिविधियों** के दौरान शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक का ध्यान इस बात पर नहीं होना चाहिए कि बच्चे ने हर वाक्य पूर्णतः व्याकरण-सम्मत लिखा है या नहीं। आरंभिक अवस्था में अधिक महत्वपूर्ण यह है कि बच्चे ने क्या सोचा ?, क्या महसूस किया ? और उसे किस प्रकार अभिव्यक्त करने का प्रयास किया ? यदि बच्चा हर समय इस भय में रहेगा कि कहीं उसकी वर्तनी या व्याकरण की गलती न हो जाए, तो उसकी अभिव्यक्ति बाधित हो सकती है। इसलिए पहले उसे स्वतंत्र रुप से लिखने और बोलने का अवसर मिलना चाहिए। धीरे-धीरे शिक्षक आवश्यक सुधार की दिशा में उसका मार्गदर्शन कर सकते हैं।

चित्र आधारित अधिगम उन बच्चों के लिए भी अत्यंत उपयोगी है जो पाठ्यपुस्तकों को सहजता से नहीं पढ़ पाते या पढ़ने में झिझक महसूस करते हैं। ऐसे बच्चे भी चित्र देखकर कुछ न कुछ कह सकते हैं। चित्र उनके लिए भाषा सीखने का प्रारंभिक आधार बन जाता है। धीरे-धीरे वे शब्द बोलते हैं, वाक्य बनाते हैं और फिर उन्हें लिखने का प्रयास करते हैं। इससे कक्षा के सभी बच्चों की सहभागिता बढ़ती है और कमजोर समझे जाने वाले बच्चों को भी अपनी बात रखने का अवसर मिलता है।

एक ही चित्र पर अलग-अलग बच्चों द्वारा लिखी गई **कहानियाँ** यह भी सिद्ध करती हैं कि प्रत्येक बच्चे की सोच अलग होती है। यही भिन्नता सीखने को समृद्ध बनाती है। जब बच्चे एक-दूसरे की कहानियाँ सुनते हैं, तो उन्हें यह समझ आता है कि किसी दृश्य को देखने के अनेक दृष्टिकोण हो सकते हैं। इससे उनमें **कल्पनाशक्ति**, **सृजनात्मकता**, **तर्कशीलता** और **आत्मविश्वास** विकसित होता है।

चित्र आधारित गतिविधियाँ बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में भी सहायक होती हैं। किसी चित्र को देखकर उसमें छिपे संबंधों को समझना, घटनाओं का अनुमान लगाना, कारण और परिणाम पर विचार करना तथा अपने विचारों को क्रमबद्ध करना **बच्चों की सोचने**, **समझने**, **याद रखने** और समस्या सुलझाने की क्षमता को मजबूत करता है। यही प्रक्रिया आगे चलकर उनके समग्र सीखने की क्षमता को भी बेहतर बनाती है।

भाषा समाज और परिवेश से जुड़ी होती है। इसलिए चित्रों का चयन बच्चों के स्थानीय जीवन, पर्यावरण, परिवार, विद्यालय, बाजार, खेत, पशु-पक्षी, त्योहार या सामाजिक परिस्थितियों से किया जाए तो बच्चों की भाषा और जीवन के बीच संबंध और भी मजबूत हो जाता है। वे अपनी जानी-पहचानी दुनिया के बारे में अधिक सहजता से बोलते और लिखते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि **चित्र आधारित** क्रियाकलाप केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि भाषा शिक्षण की एक प्रभावी और बाल-केंद्रित विधि है। यह बच्चों को देखने से सोचने, सोचने से बोलने और बोलने से लिखने की स्वाभाविक यात्रा पर ले जाती है। सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना—इन चारों कौशलों को एक साथ विकसित करने में चित्र एक सशक्त सेतु का कार्य करते हैं।

जब बच्चे चित्रों से कहानी गढ़ते हैं, तो वे केवल भाषा नहीं सीख रहे होते, बल्कि अपने अनुभवों, कल्पनाओं और भावनाओं को शब्द देना भी सीख रहे होते हैं। यही भाषा शिक्षण की वास्तविक सफलता है—जहाँ बच्चा न केवल सही भाषा सीखता है, बल्कि अपनी आवाज़ पहचानना और उसे आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करना भी सीखता है।

https://www.navyatna.online/

शीर्षक

कबाड़ में दिखी सीखने की संभावना

कबाड़ के कमाल तक

विद्यालय में छोटे बच्चों का नामांकन केवल संख्या बढ़ने का संकेत नहीं होता, बल्कि उनके साथ कई सीखने की चुनौतियाँ भी जुड़ी होती हैं। विशेष रुप से तब, जब बच्चे विद्यालय आने से पहले किसी आंगनवाड़ी या पूर्व-प्राथमिक केंद्र से नहीं जुड़े हों। बाँका जिले के बाराहाट प्रखंड स्थित **नव प्राथमिक विद्यालय सिरमाटीकर** की विशिष्ट शिक्षिका **श्रीमति कविता कुमारी** ने ऐसी ही परिस्थितियों को समस्या मानकर छोड़ने के बजाय उन्हें नवाचार का अवसर बनाया।

शिक्षिका कविता कुमारी **1 दिसंबर 2006** से इसी विद्यालय में पदस्थापित हैं। विद्यालय के पोषक क्षेत्र में कोई आंगनवाड़ी केंद्र नहीं होने के कारण छोटे बच्चों में विद्यालय-पूर्व सीखने का अभाव, विद्यालयी वातावरण से परिचित होने में कठिनाई, भाषाई विकास में अंतर, संख्या एवं पूर्व-गणितीय अवधारणाओं की कमजोरी और विद्यालयी दिनचर्या अपनाने में समय लगने जैसी समस्याएँ सामने आती थीं। बच्चों के सीखने के स्तर में भी विविधता थी।

इन्हीं परिस्थितियों ने उन्हें **टी.एल.एम.** और **गतिविधि-आधारित शिक्षण** को अधिक महत्व देने के लिए प्रेरित किया। यहीं से विद्यालय में बदलाव की एक सार्थक कहानी शुरु हुई।

कबाड़ से जुगाड़ की शुरुआत :- शुरुआत में उन्होंने विद्यालय में पड़ी अनुपयोगी वस्तुओं से आकर्षक सामग्री बनानी शुरु की। कबाड़ से फूल, गमले, गुड़िया और सजावटी वस्तुएँ तैयार की गईं, ताकि विद्यालय बच्चों के लिए अधिक आकर्षक बने। धीरे-धीरे यही प्रयास शिक्षण-अधिगम से जुड़ गया। पुराने गत्ते, खाली डिब्बे, बोतलों के ढक्कन, आइसक्रीम स्टिक, पुराने चार्ट और कागज के टुकड़ों को एकत्र कर अलग-अलग टी.एल.एम. में बदला जाने लगा। इस **'कबाड़ से जुगाड़'** पहल का उद्देश्य केवल सुंदर वस्तुएँ बनाना नहीं, बल्कि ऐसे शिक्षण संसाधन तैयार करना था, जिनसे बच्चे देखकर, छूकर, खेलकर और करके सीख सकें।

हर बच्चा एक जैसा नहीं सीखता:- कक्षा में पढ़ाते हुए शिक्षिका कविता कुमारी ने महसूस किया कि हर बच्चा केवल किताब, कॉपी और ब्लैकबोर्ड देखकर एक जैसी गति से नहीं सीखता। कुछ बच्चे देखकर और करके जल्दी सीखते हैं, जबकि कुछ को अवधारणा समझने के लिए बार-बार अभ्यास और ठोस उदाहरणों की आवश्यकता होती है।

संख्या **पहचान**, **गिनती**, **जोड़-घटाव**, **अक्षर पहचान** और **शब्द निर्माण** जैसी अवधारणाओं को केवल मौखिक रुप से समझने में कई बच्चों को कठिनाई होती थी। कुछ बच्चे उत्तर जानते हुए भी सक्रिय भाग नहीं लेते थे, जबकि कुछ संकोच के कारण अपनी बात नहीं रख पाते थे। प्रत्येक गतिविधि के लिए बाजार से टी.एल.एम. खरीदना भी संभव नहीं था।

https://www.navyatna.online/

ऐसे में प्रश्न था–क्या आसपास पड़ी अनुपयोगी वस्तुओं को ही बच्चों के सीखने का साधन बनाया जा सकता है? यहीं से उन्हें कबाड़ में सीखने की संभावना दिखाई देने लगी।

टी.एल.एम. बच्चों के हाथों तक:- शिक्षिका ने टी.एल.एम. को केवल कक्षा में प्रदर्शित करने की वस्तु नहीं बनाया। उन्होंने बच्चों को इन्हें छूने, चलाने, मिलाने, चुनने, बनाने और साथियों को समझाने का अवसर दिया। इससे बच्चे सीखने की प्रक्रिया का सक्रिय हिस्सा बनने लगे।

पीयर लर्निंग के दौरान पीयर लीडर स्वयं टी.एल.एम. के माध्यम से गतिविधियाँ करवाने और अपने साथियों को अवधारणाएँ समझाने लगे। इससे विषय की समझ के साथ संवाद, सहयोग और नेतृत्व की क्षमता भी विकसित हुई।

रास्ते में चुनौतियाँ भी आईं:- यह बदलाव एक दिन में नहीं आया। शुरुआत में उपयोगी टी.एल.एम. बनाने के लिए बच्चों को सही दिशा देना चुनौती थी। कभी सामग्री पर्याप्त नहीं होती थी, तो कभी बनाया गया टी.एल.एम. अपेक्षा के अनुसार काम नहीं करता था। शिक्षिका को यह भी देखना पड़ता था कि कौन-सी सामग्री किस अवधारणा के लिए अधिक उपयोगी है।

लेकिन उन्होंने कठिनाइयों को रुकावट नहीं माना। हर टी.एल.एम. को आजमाया गया, बच्चों की प्रतिक्रिया देखी गई और आवश्यकता के अनुसार सुधार किया गया। यह प्रक्रिया **शिक्षिका** और **बच्चों**–दोनों के लिए सीखने का माध्यम बन गई।

धीरे-धीरे दिखने लगा बदलाव:- समय के साथ बच्चों में टी.एल.एम. को लेकर उत्सुकता बढ़ने लगी। जो बच्चे पहले केवल शिक्षिका के समझाने का इंतजार करते थे, वे अब स्वयं करके सीखने लगे। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति **90 प्रतिशत से ऊपर** पहुँच गई और कक्षा में उनकी भागीदारी भी बढ़ी।

बच्चे प्रश्न पूछने, उत्तर देने और अपने साथियों को समझाने लगे। अब वे केवल **"यह कैसे होगा?"** नहीं पूछते थे, बल्कि **"यह कैसे बनेगा?"** और "**इससे हम क्या सीख सकते हैं?**" जैसे प्रश्न पूछकर स्वयं समाधान तक पहुँचने लगे।

टी.एल.एम. आधारित **गतिविधियों** से **अवधारणाएँ** सरल और रोचक हुईं। बच्चों का आत्मविश्वास और बोलने की क्षमता बढ़ी। पीयर लर्निंग से सहयोग व नेतृत्व की भावना मजबूत हुई। साथ ही रचनात्मकता, समस्या-समाधान और स्थानीय संसाधनों के पुनः उपयोग की समझ विकसित हुई। अनुपयोगी वस्तुओं के प्रयोग ने पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता भी बढ़ाई।

बदलाव टी.एल.एम. में ही नहीं, सोच में भी:- कविता कुमारी की इस पहल की सबसे बड़ी उपलब्धि कोई एक मॉडल या टी.एल.एम. नहीं, बल्कि बच्चों के सीखने के प्रति बदला हुआ रवैया है। इस प्रयोग ने स्पष्ट किया कि अच्छी शिक्षण सामग्री हमेशा बाजार से खरीदकर ही नहीं आती। **शिक्षक की कल्पना**, **बच्चों की रचनात्मकता** और आसपास उपलब्ध संसाधन मिलकर भी प्रभावी शिक्षण सामग्री तैयार कर सकते हैं।
यही नव प्राथमिक विद्यालय सिरमाटीकर में आया वास्तविक बदलाव है–

कभी कबाड़ समझी जाने वाली वस्तुएँ आज बच्चों के लिए सीखने, सोचने और सृजन करने का माध्यम बन गई हैं।

शीर्षक

नटखट प्रयोग से शैक्षणिक उपलब्धि तक

कबाड़ के कमाल तक

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल पुस्तकों तक सीमित ज्ञान अर्जित करना नहीं, बल्कि अनुभव, प्रयोग और जिज्ञासा के माध्यम से ऐसी सीख विकसित करना है, जिसमें विद्यार्थी स्वयं खोजें, समझें और निष्कर्ष तक पहुँचें। इसी अर्थ में शिक्षण-सहायक सामग्री अर्थात् **टीचिंग लर्निंग मटेरियल (TLM)** शिक्षा को जीवन और अनुभव से जोड़ने वाला सशक्त सेतु बनती है। विशेषकर गणित और विज्ञान जैसे विषयों में टीएलएम अमूर्त अवधारणाओं को मूर्त रूप देकर उन्हें सरल, सहज, रोचक और आनंददायक बना देता है।

इसी नवाचारी शिक्षण-दृष्टि को अपने कर्म का आधार बनाकर **रामकृष्ण आश्रम मध्य विद्यालय** के शिक्षक **श्री अमरनाथ झा** ने टीएलएम निर्माण एवं गतिविधि-आधारित शिक्षण के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बनाई है। सीमित संसाधनों और स्थानीय, कम लागत वाली सामग्रियों से उन्होंने गणित और विज्ञान के लिए अनेक उपयोगी टीएलएम विकसित किए। इनका उद्देश्य केवल पाठ समझाना नहीं, बल्कि बच्चों में प्रश्न करने, तर्क करने, प्रयोग करने और स्वयं सीखने की प्रवृत्ति विकसित करना है।

श्री झा की टीएलएम यात्रा विद्यालय स्तर से शुरु होकर संकुल, प्रखंड, जिला और राज्य स्तर तक पहुँची। निरंतर प्रयोग, सृजनशीलता और परिश्रम के परिणामस्वरुप उनके बनाए टीएलएम ने विभिन्न प्रदर्शनियों एवं प्रतियोगिताओं में सराहना प्राप्त की। इस यात्रा की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि **राज्य स्तरीय TLM 2.0** प्रतियोगिता में गणित विषय पर आधारित टीएलएम के लिए प्राप्त **तृतीय पुरस्कार** है। यह सम्मान उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि के साथ विद्यालय और जिले में नवाचार आधारित शिक्षण को पहचान दिलाने वाला गौरवपूर्ण अध्याय भी है।

उनके द्वारा निर्मित **टीएलएम की दुनिया** विविध है। ज्यामितीय आकृतियों के मॉडल, भिन्न की अवधारणा समझाने वाले उपकरण, गणितीय गतिविधियों पर आधारित सामग्री, सौरमंडल के मॉडल, जल शुद्धिकरण से संबंधित मॉडल तथा वैज्ञानिक सिद्धांतों को प्रदर्शित करने वाले उपकरण विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान से आगे **प्रयोग की दुनिया** से जोड़ते हैं। बच्चे इन सामग्रियों के माध्यम से देखकर, छूकर, करके और समझकर सीखते हैं। इससे उनमें तार्किक चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समस्या-समाधान क्षमता और प्रयोगात्मक दक्षता का विकास होता है। उनके नवाचारों का प्रभाव केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहा। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरुप विद्यालय में शिक्षा विभाग, भागलपुर के अनुमोदन तथा अमेरिकी संस्था अनाको फाउंडेशन के सहयोग से **"नटखट साइंस लैब"** की स्थापना हुई। यह प्रयोगशाला बच्चों के लिए विज्ञान को किताब से निकालकर प्रयोग की मेज तक लाने का माध्यम बनी। यहाँ विद्यार्थियों को वैज्ञानिक अवधारणाओं को स्वयं प्रयोग करके समझने का अवसर मिला और विद्यालय नवाचार आधारित शिक्षण के केंद्र के रुप में उभरने लगा।

श्री झा के टीएलएम संसार में **"ऑटोमैटिक जोड़ मशीन"** विशेष उल्लेख की अधिकारी है। गणित की आरंभिक अवधारणाओं को खेल-खेल में समझाने के उद्देश्य से विकसित यह उपकरण सरल किंतु प्रभावी नवाचार है। इसमें नॉब घुमाते ही एक अंक के जोड़ का योगफल स्वतः प्रदर्शित होता है। छोटे बच्चों के लिए यह किसी जादुई खेल जैसा अनुभव देता है, लेकिन इसके पीछे गणितीय अवधारणा और सुविचारित सीखने की प्रक्रिया है। इस उपकरण के माध्यम से बच्चों ने जोड़ को केवल लिखकर या रटकर नहीं, बल्कि देखकर और करके समझना शुरु किया। इससे उनकी गणना क्षमता, तार्किक सोच और गणित के प्रति रुचि को बल मिला।

"ऑटोमैटिक जोड़ मशीन" की प्रस्तुति विद्यालय से लेकर संकुल, प्रखंड, जिला और राज्य स्तर तक विभिन्न प्रदर्शनियों एवं प्रतियोगिताओं में हुई। इसकी उपयोगिता, मौलिकता और शिक्षण-प्रभावशीलता को सराहना मिली। इसके प्रभावी प्रयोग को देखते हुए **SCERT**, बिहार द्वारा आयोजित SOP कार्यशाला में श्री झा को आमंत्रित किया गया, जहाँ उन्होंने टीएलएम निर्माण, उसके उपयोग और गतिविधि-आधारित गणित शिक्षण के अनुभव साझा किए। उनका कार्य दिखाता है कि संसाधनों की प्रचुरता से अधिक महत्त्वपूर्ण सृजनशील दृष्टि और प्रयोग करने का साहस है।

श्री झा का योगदान केवल टीएलएम निर्माण तक सीमित नहीं है। विद्यालय प्रबंधन और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें **शिक्षक दिवस 2023** पर भागलपुर जिला प्रशासन द्वारा जिला स्तरीय **उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान** से अलंकृत किया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और निपुण भारत मिशन गतिविधि-आधारित, अनुभवात्मक और बाल-केंद्रित शिक्षण की जिस परिकल्पना को सामने रखते हैं, श्री झा का कार्य उसका व्यावहारिक उदाहरण है। उनके टीएलएम कक्षा 1 से 8 तक गणित एवं विज्ञान के पाठ्यक्रम से जुड़े हैं। इस प्रकार ये सामग्रियाँ केवल प्रदर्शन की वस्तुएँ नहीं, बल्कि कक्षा में सीखने को प्रभावी बनाने वाले वास्तविक शैक्षणिक उपकरण हैं।

श्री अमरनाथ झा की शिक्षण-यात्रा यह प्रमाणित करती है कि नवाचार के लिए हमेशा महंगे संसाधनों की आवश्यकता नहीं होती। एक साधारण वस्तु, जिज्ञासु दृष्टि और उसे शिक्षण के उद्देश्य से जोड़ने वाली कल्पनाशक्ति भी बड़े बदलाव की शुरुआत कर सकती है। जहाँ सामान्य दृष्टि किसी अनुपयोगी वस्तु को देखती है, वहीं एक सृजनशील शिक्षक उसमें सीखने का नया अवसर खोज लेता है।

उनके टीएलएम में कठिन को सरल बनाने, अमूर्त को मूर्त करने और सीखने को बोझ से आनंद में बदलने की यही दृष्टि दिखाई देती है। उनकी उपलब्धियाँ केवल पुरस्कारों में नहीं, बल्कि उन बच्चों की आँखों में भी दिखाई देती हैं जिनके लिए गणित अब डर का विषय नहीं, बल्कि खोज और खेल का माध्यम है; और विज्ञान केवल किताब का अध्याय नहीं, बल्कि प्रयोग करके समझी जाने वाली जीवंत दुनिया है।

इस अर्थ में श्री अमरनाथ झा की यात्रा एक शिक्षक की व्यक्तिगत उपलब्धियों की कथा भर नहीं, बल्कि उस विश्वास की कहानी है कि जब शिक्षक स्वयं सीखना, सोचना और बनाना नहीं छोड़ता, तब उसकी कक्षा भी सीखना नहीं छोड़ती। सीमित संसाधनों से शुरु हुई उनकी सृजन-यात्रा विद्यालय से राज्य तक और कक्षा से विज्ञान प्रयोगशाला तक पहुँची है। यही यात्रा उन्हें नवाचार के साधक और अनुभवात्मक शिक्षा के प्रेरक के रुप में स्थापित करती है।

TLM से जुड़े वीडियो देखें

शीर्षक

उत्कृष्ट विद्यालय की धड़कन

चेतना सत्र बना सीखने का मंच

प्रत्येक उगती हुई सुबह अपने साथ नई आशाएँ, नए संकल्प और नई संभावनाएँ लेकर आती है। विद्यालय के लिए यह सुबह केवल एक नए दिन का आरम्भ नहीं होती, बल्कि भविष्य के भारत को गढ़ने की नई शुरुआत होती है। इस शुरुआत को सार्थक, उद्देश्यपूर्ण और प्रेरणादायी बनाने वाला मंच है- **चेतना सत्र**।

"**शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि जागरुक, अनुशासित और उत्तरदायी नागरिक का निर्माण करना है।**" इस उद्देश्य की पूर्ति में विद्यालय का चेतना सत्र अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह विद्यालय के प्रत्येक कार्य दिवस का ऐसा प्रेरणादायी आरंभ है जिसमें प्रधानाध्यापक, शिक्षक-शिक्षिकाएं, बाल संसद, मीना मंच, इको एवं यूथ क्लब तथा सभी विद्यार्थियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जो विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा, अनुशासन, आत्मविश्वास और नैतिक मूल्यों का संचार करता है। महात्मा गांधी ने कहा था–"**शिक्षा का अर्थ शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास है।**" यही चेतना सत्र का मूल दर्शन भी है। यहाँ शिक्षा पुस्तकों के पन्नों से निकलकर व्यवहार में उतरती है।

चेतना सत्र केवल प्रार्थना सभा नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास का सशक्त मंच है। इसके अंतर्गत निर्धारित समय अनुसार विद्यालय खुलने के साथ ही वर्ग कक्ष, विद्यालय परिसर एवं आसपास की साफ सफाई के पश्चात परिसर में निर्धारित स्थल पर एकत्रित होकर पंक्तिबद्ध होना (संभव हो तो सौंदर्य बोध कराने वाले किसी ज्यामितीय आकृति के रुप में), समय की उपलब्धता के अनुसार योग एवं ध्यान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रगान, प्रार्थना (सर्व धर्म एवं प्रत्येक दिन अलग-अलग), आज का दिन, आज का विचार, सामान्य ज्ञान, तर्क ज्ञान, भाषा ज्ञान, प्रेरक प्रसंग, समाचार वाचन, स्वच्छता जांच (नाखून, बाल, ड्रेस आदि की व्यक्तिगत जांच), बच्चों का जन्मोत्सव, बच्चों का प्रोत्साहन (यथा सर्वाधिक मासिक उपस्थिति, सर्वाधिक अनुशासित छात्र-छात्रा, स्वच्छ एवं विद्यालय ड्रेस में उपस्थित सर्वश्रेष्ठ छात्र को सूरज सम्मान एवं छात्रा को चंदा सम्मान हेतु चयन करना), 'इनसे मिलिए कार्यक्रम' (आगंतुकों से बच्चों को मिलवाना), प्रधानाध्यापक संदेश / सूचना, संविधान की प्रस्तावना, मूल अधिकार / मूल कर्तव्य का वाचन एवं बिहार राज्य प्रार्थना जैसी गतिविधियाँ बच्चों के भीतर जीवन मूल्यों का विकास करती हैं। साथ ही, मंच संचालन, भाषण, कविता पाठ और प्रश्नोत्तरी जैसी गतिविधियाँ उनकी अभिव्यक्ति क्षमता और नेतृत्व कौशल को भी निखारती हैं।

https://www.navyatna.online/

विद्यालय संचालन की दृष्टि से चेतना सत्र अत्यंत उपयोगी है। यह प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों को विद्यार्थियों तक आवश्यक सूचनाएँ, प्रेरक संदेश और शैक्षणिक दिशा-निर्देश एक साथ पहुँचाने का अवसर प्रदान करता है। इसके माध्यम से **नियमितता**, **समयबद्धता**, **अनुशासन**, **संवैधानिक** एवं **नैतिक मूल्यों** के प्रति सम्मान, राष्ट्रप्रेम और सेवा-भाव, सामूहिकता और उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती है, जिससे विद्यालय का वातावरण अधिक सकारात्मक, व्यवस्थित और शिक्षण-अनुकूल बनता है। आज जब नई **शिक्षा नीति – 2020** बच्चों के समग्र विकास, जीवन कौशल, नैतिक शिक्षा और अनुभव आधारित अधिगम पर विशेष बल देती है, तब चेतना सत्र इन उद्देश्यों को व्यवहार में उतारने का प्रभावी माध्यम बनकर उभरता है। यदि इसे सुनियोजित, रोचक और सहभागितापूर्ण बनाया जाए तो यह बच्चों में आत्मविश्वास, जिज्ञासा, संवेदनशीलता और राष्ट्रप्रेम जैसे गुणों का विकास करता है।

चेतना सत्र विद्यार्थियों को केवल दिनभर की पढ़ाई के लिए तैयार नहीं करता, बल्कि उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने योग्य भी बनाता है। यह विद्यालय में सकारात्मक सोच, सहयोग, सहिष्णुता और सामाजिक समरसता का वातावरण निर्मित करता है। वास्तव में, एक प्रभावी चेतना सत्र विद्यालय की पहचान, उसकी **कार्य संस्कृति** और **शैक्षिक गुणवत्ता** का दर्पण होता है। आवश्यकता इस बात की है कि प्रत्येक विद्यालय में चेतना सत्र को औपचारिकता न मानकर एक सृजनात्मक एवं प्रेरणादायी गतिविधि के रुप में संचालित किया जाए। जब प्रत्येक दिन की शुरुआत सकारात्मक विचारों, प्रेरक संदेशों और सामूहिक सहभागिता से होगी, तब विद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं रहेगा, बल्कि श्रेष्ठ संस्कारों और आदर्श नागरिकों के निर्माण का सशक्त संस्थान बन जाएगा। एक उत्कृष्ट विद्यालय की पहचान केवल परीक्षा परिणामों से नहीं होती। उसकी वास्तविक पहचान उसके विद्यार्थियों के व्यवहार, अनुशासन, संवेदनशीलता, आत्मविश्वास और सामाजिक उत्तरदायित्व से होती है।

चेतना सत्र का संचालन अनिवार्य रुप से **लाउडस्पीकर** के माध्यम से किया जाना चाहिए। चेतना सत्र के समन्वयन का प्रभार प्रतिदिन अलग-अलग शिक्षकों को दिया जा सकता है, परंतु साथ ही साथ अन्य सभी शिक्षकों की इसमें सहभागिता कम नहीं होनी चाहिए। **चेतना सत्र** संचालन के लिए 5-6 छात्र दलों का गठन किया जाना चाहिए। प्रत्येक दल में चार-पांच छात्र/छात्रा हो और सभी कक्षाओं के बच्चों को इनमें प्रतिनिधित्व मिले। एक **रोस्टर** के अनुसार यह दल अलग-अलग दिवस में बारी-बारी से चेतना सत्र का संचालन करें। बाल संसद / मीना मंच के द्वारा चेतना सत्र संचालित किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष रुप मे जहाँ चेतना सत्र जीवंत, सहभागी और नवाचारी होता है, वहाँ बच्चों की उपस्थिति बढ़ती है, अनुशासन स्वतः विकसित होता है, शिक्षण-अधिगम अधिक प्रभावी बनता है और विद्यालय समाज के लिए प्रेरणा का केंद्र बन जाता है। चेतना सत्र विद्यालय की कार्य-संस्कृति को दिशा देता है। यह शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच विश्वास, संवाद और आत्मीयता का सेतु बनता है। विद्यालय की संस्कृति कक्षाओं में नहीं, बल्कि चेतना सत्र में दिखाई देती है। जिस विद्यालय की सुबह अनुशासन, प्रेरणा, सहभागिता और सकारात्मक ऊर्जा से प्रारम्भ होती है, वहाँ सीखना आनंदमय बन जाता है। यदि प्रत्येक दिन का चेतना सत्र **विषय-आधारित**, **सहभागितापूर्ण** और **नवाचारी** बनाया जाए, तो यह विद्यालय परिवर्तन का सबसे सशक्त अभियान सिद्ध हो सकता है।

...श्री उमाकांत कुमार (प्रधानाध्यापक)
प्रो मध्य वि0 खड़िहारा उर्दू (बालक)
प्रखंड - बाराहाट , जिला- बांका

शीर्षक

स्कूल बैग बना प्रयोगशाला

परियोजना से प्रगति

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल बच्चों को पाठ्यपुस्तक के विषय पढ़ाना या प्रश्नों के उत्तर याद करवाना नहीं, बल्कि उनमें जिज्ञासा, रचनात्मकता, तर्कशीलता , समस्या - समाधान और स्वयं सीखने की क्षमता विकसित करना है। इसी सोच को कक्षाओं में प्रभावी ढंग से लागू करने की दिशा में एक सफल शिक्षण तकनीक है – **प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण** (Project Based Learning - **PBL**)

प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण केवल किसी विषय पर एक प्रोजेक्ट तैयार करवाने की प्रक्रिया नहीं है। यह बच्चों को ज्ञान प्राप्त करने से आगे बढ़कर ज्ञान का अनुभव करने का अवसर प्रदान करता है। इसी संदर्भ में अमेरिकी दार्शनिक एवं शिक्षाविद **जॉन ड्यूई** का प्रसिद्ध विचार **"Learning by Doing"** इस दृष्टिकोण को और अधिक सार्थक बनाता है । उनका मानना था कि बच्चे केवल सुनकर नहीं, बल्कि करके और अनुभव के माध्यम से सीखते हैं। कक्षा में PBL को लागू करते हुए अनुभव किया जाता है कि जब बच्चे किसी विषयवस्तु को स्वयं करके , देखकर और परिणाम पर विचार करके सीखते हैं , तो वह उनके लिए अधिक रोचक, प्रभावी और स्थायी बन जाती है।

इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए **मध्य विद्यालय इनारावरण, कटोरिया की शिक्षिका सुश्री प्राची मालवीय** ने अपनी कक्षाओं में एक छोटी-सी लेकिन बेहद महत्वपूर्ण पहल शुरु की – **स्कूल बैग में प्रयोगशाला**।

इस पहल का विचार बहुत सरल है – क्या बच्चे के स्कूल बैग में मौजूद सामान्य वस्तुएँ ही उसकी छोटी-सी प्रयोगशाला बन सकती हैं?

कोशिश की गई कि बच्चों को किसी **गतिविधि** के लिए हमेशा अलग, महंगी या विशेष सामग्री लाने की आवश्यकता न पड़े। उनके स्कूल बैग में पहले से मौजूद कॉपी के पन्ने, पेंसिल, रबर, स्केल, पानी की बोतल, ज्यामिति बॉक्स, कलम और अन्य सामान्य वस्तुएँ भी सीखने के उपकरण बन सकती हैं। जहाँ किसी विशेष सामग्री की आवश्यकता होती है, वहाँ विद्यालय की विज्ञान किट में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग किया जाता है ।

इसका उद्देश्य बच्चों को यह समझाना है कि विज्ञान और गणित केवल किताबों, सूत्रों और प्रयोगशाला की चारदीवारों तक सीमित नहीं हैं। हमारे आसपास की सामान्य वस्तुओं में भी सीखने के अनगिनत अवसर छिपे हुए हैं।

जब बच्चों ने अपनी आँखों के सामने देखी- चुंबकीय क्षेत्र रेखाएँ (Magnetic Field Lines):- चुंबक पाठ प्रस्तुत करने के क्रम में एक गतिविधि कराई गई । इसके लिए बच्चों के कॉपी का एक सामान्य पन्ना और विज्ञान किट से एक छड़ चुंबक और थोड़ा-सा लोहे का बुरादा ही पर्याप्त था। पन्ने पर लोहे के बुरादे को फैलाकर उसके बीच में एक छड़ चुंबक रखा गया। पन्ने को हल्के से थपथपाने पर पन्ने पर लोहे के बुरादे ने एक विशेष पैटर्न का निर्माण किया। जिस **चुंबकीय क्षेत्र** को बच्चे अब तक केवल किताब में बने एक चित्र के रुप में देखते थे वही अवधारणा अब उनकी आंखों के सामने एक जीवंत और वास्तविक अनुभव बन चुकी थी।

इसके बाद बच्चों के **मन** में स्वाभाविक रुप से कई प्रश्न उठे –
"लोहे के बुरादे इस तरह क्यों व्यवस्थित हुआ ?"
"चुंबक के सिरों के पास बुरादा अधिक क्यों दिखाई दे रहा है ?"
यही प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण की सबसे खूबसूरत विशेषता है
– यह गतिविधि बच्चों को केवल उत्तर जानने से अधिक प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है।

स्कूल बैग की सामान्य वस्तुएं सीखने के असाधारण अवसर प्रदान करते हैं। एक साधारण पेंसिल और टॉर्च की रोशनी से **प्रकाश और छाया** को समझा जा सकता है। कॉपी के दो पन्नों–एक को खुला और दूसरे को मोड़कर–बच्चे **वायु प्रतिरोध** की अवधारणा को अनुभव कर सकते हैं। पानी की बोतल से गुरुत्व केन्द्र तथा प्लास्टिक स्केल से **कंपन और ध्वनि** की अवधारणा को समझा जा सकता है। वहीं कलम और धागे की मदद से ज्यामिति की विभिन्न अवधारणाओं को सरल एवं रोचक बनाया जा सकता है। कोशिश बस इतनी रहती है कि बच्चे जब स्कूल आएँ तो उनके बैग में केवल किताबें और कॉपियाँ न हों, बल्कि उनके साथ एक छोटी-सी प्रयोगशाला भी साथ आए।

"प्रयोगशाला किसी कमरे में बंद नहीं है, वह हर बच्चे के स्कूल बैग में चलती-फिरती है।"

इस पहल का सबसे सकारात्मक प्रभाव बच्चों के व्यवहार में दिखाई देता है। उनमें प्रश्न पूछने, सोचने, तर्क करने और अपनी बात रखने की क्षमता विकसित हो रही है। बच्चे एक दूसरे के साथ **सामूहिक कार्य (Teamwork)** करते हैं, नए **विचार (Ideas)** देते हैं और किसी समस्याओं के अलग-अलग समाधान खोजने का प्रयास करते हैं। मैंने महसूस किया है कि बच्चों को हर उत्तर पहले से बता देना आवश्यक नहीं है। कई बार उन्हें केवल सही प्रश्न, सही परिस्थिति और प्रयोग करने की स्वतंत्रता देने की आवश्यकता होती है।

मेरे लिए **PBL** की सबसे बड़ी सफलता किसी प्रोजेक्ट का सुंदर दिखाई देना या गतिविधि का सफलतापूर्वक पूरा हो जाना नहीं है। मेरे लिए सफलता का सबसे सुंदर क्षण वह है, जब बच्चे स्वयं उत्सुक होकर पूछते हैं –"**मैम, अगला PBL कब होगा?**"

स्कूल बैग में प्रयोगशाला एक छोटी सी पहल है लेकिन इसके पीछे एक बड़ा विचार छिपा है - बच्चों को यह विश्वास दिलाना कि **सीखने के लिए संसाधनों की कमी नहीं बल्कि दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।** यदि हम बच्चों को अपने आसपास की वस्तुओं को नए दृष्टिकोण से देखना सिखा दें , तो उनका कक्षा ही प्रयोगशाला बन सकती है, उनका स्कूल बैग ही विज्ञान किट बन सकता है और उनका हर प्रश्न सीखने की नई शुरुआत बन सकता है।

शीर्षक

विद्यालय परिसर बना जीवंत प्रयोगशाला

परियोजना से प्रगति

शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों में अवलोकन, खोज, जिज्ञासा, तर्क, सहयोग और करके सीखने की क्षमता विकसित करना है। इसी उद्देश्य से प्रधानाध्यापक **श्री श्याम नंदन सिंह** के नेतृत्व में **उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय (मध्य विद्यालय), तेलवारा, सन्हौला, भागलपुर** में चेतना सत्र के अंत में बच्चों को समूहों में विभाजित कर खेल-खेल विधि एवं परियोजना आधारित अधिगम (पी.बी.एल.) पर आधारित एक रोचक शैक्षणिक गतिविधि कराई गई।

गतिविधि के लिए बच्चों के चार समूह–**हरितालिका**, **सदाबहार**, **प्रकाश** और **आवास**–बनाए गए। प्रत्येक समूह को वास्तविक जीवन से जुड़ा अलग कार्य सौंपा गया तथा आवश्यकतानुसार एक शिक्षक को मार्गदर्शक की भूमिका दी गई।

हरितालिका समूह : खोजो, पहचानो और गिनो - हरितालिका समूह को "**खोजो, पहचानो और गिनो**" कार्य दिया गया। बच्चों को कॉपी के साथ विद्यालय परिसर में भेजा गया, जहाँ उन्होंने वृक्षों एवं पौधों का प्रत्यक्ष अवलोकन कर उनकी गिनती और वर्गीकरण किया। उन्हें औषधीय, पुष्पीय तथा इमारती लकड़ी देने वाले वृक्ष-पौधों की संख्या पता करनी थी।

बच्चों ने विद्यालय परिसर का भ्रमण किया, पौधों की पहचान की, आपस में चर्चा की और आँकड़े दर्ज किए। निर्धारित समय के बाद उन्होंने बताया कि परिसर में **इमारती लकड़ी** वाले 67 वृक्ष/पौधे, **औषधीय** श्रेणी के 10 और **पुष्पीय** श्रेणी के 5 पौधे हैं। इस गतिविधि से बच्चों में पर्यावरणीय चेतना के साथ-साथ अवलोकन, गणना, वर्गीकरण और आँकड़ा संग्रह जैसे कौशल विकसित हुए।

सदाबहार समूह : वास्तविक पौधों से विज्ञान की समझ - सदाबहार समूह को वास्तविक पौधों के माध्यम से विज्ञान की अवधारणाएँ समझने का कार्य दिया गया। शिक्षक बच्चों को विद्यालय परिसर में स्थित पुष्पीय पौधों के पास ले गए और जड़, तना, शाखा, पत्ती तथा फूल जैसे विभिन्न भागों की जानकारी दी।

पत्तियों में उपस्थित पर्णहरित यानी क्लोरोफिल तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से पौधों द्वारा भोजन निर्माण की प्रक्रिया, अर्थात प्रकाश संश्लेषण, को सरल भाषा में समझाया गया। इस प्रकार पुस्तक में पढ़ी जाने वाली अवधारणा बच्चों के सामने वास्तविक रुप में उपस्थित थी। वे पौधे को देखकर, छूकर, प्रश्न पूछकर और शिक्षक से संवाद करके सीख रहे थे।

प्रकाश समूह : विद्युत की दुनिया से परिचय - प्रकाश समूह को "**विद्युत की दुनिया से परिचय**" गतिविधि दी गई। समूह को एक शिक्षक के साथ विद्यालय में उपलब्ध विद्युत सामग्री एवं उपकरणों का अवलोकन कराया गया। शिक्षक ने बच्चों को विद्युत सामग्री, विद्युत परिपथ तथा विभिन्न उपकरणों के कार्य औरउपयोग की जानकारी दी।

बच्चों ने अपने आसपास प्रतिदिन दिखाई देने वाली विद्युत व्यवस्था को शैक्षणिक दृष्टि से समझा। इससे उन्हें यह अनुभव हुआ कि पुस्तक में पढ़ा जाने वाला विद्युत और परिपथ का विज्ञान उनके दैनिक जीवन तथा विद्यालय की वास्तविक व्यवस्था से सीधा जुड़ा हुआ है।

आवास समूह : हमारे मकान में छिपा ज्ञान - आवास समूह ने "**हमारे मकान में छिपा ज्ञान**" विषय पर परियोजना कार्य किया। शिक्षक के मार्गदर्शन में बच्चों को भवन निर्माण से जुड़ी सामग्रियों और प्रक्रियाओं का अवलोकन कराया गया। उन्हें बताया गया कि मकान बनाने में किन-किन सामग्रियों का प्रयोग होता है, मनुष्य के जीवन में मकान की क्या उपयोगिता है तथा आवश्यकता, स्थान और निर्माण सामग्री के आधार पर मकान कितने प्रकार के हो सकते हैं।विद्यालय भवन को सामने देखकर बच्चों ने ईंट, बालू, सीमेंट, छड़ और लकड़ी जैसी निर्माण सामग्रियों तथा भवन के विभिन्न हिस्सों को समझा। इससे उनकी पढ़ाई सीधे दैनिक जीवन से जुड़ गई।

प्रश्नोत्तरी से अधिगम का आकलन - सभी समूहों को **गतिविधि** पूर्ण करने के लिए निश्चित समय दिया गया। कार्य समाप्त होने के बाद बच्चों को पुनः एक स्थान पर बुलाया गया और प्रश्नोत्तरी के माध्यम से उनके अधिगम का आकलन किया गया।

हरितालिका समूह से वृक्षों और पौधों की संख्या एवं उपयोगिता, सदाबहार समूह से पौधे के अंगों और भोजन निर्माण की प्रक्रिया, प्रकाश समूह से विद्युत सामग्री एवं परिपथ तथा आवास समूह से मकान, निर्माण सामग्री और उसके प्रकारों से संबंधित प्रश्न पूछे गए।

यह देखकर प्रसन्नता हुई कि लगभग **90 प्रतिशत बच्चों** ने रुचि और आत्मविश्वास के साथ प्रश्नों के उत्तर दिए। बच्चे केवल याद किए हुए उत्तर नहीं दे रहे थे, बल्कि अपने प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर विषय को समझाने का प्रयास कर रहे थे। यही इस गतिविधि की सबसे बड़ी सफलता रही।

इस गतिविधि की विशेषता यह भी रही कि प्रत्येक समूह का कार्य अलग विषय से संबंधित होने के बावजूद सभी गतिविधियाँ एक साझा उद्देश्य से जुड़ी थीं—बच्चों को अपने परिवेश से सीखने का अवसर देना। इससे बच्चों ने अनुभव किया कि गणित, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन और दैनिक जीवन अलग-अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हैं।

समूह में काम करते समय बच्चों ने एक-दूसरे की बात सुनी, जिम्मेदारियाँ बाँटीं और सामूहिक रुप से निष्कर्ष तक पहुँचे। इससे **नेतृत्व**, **सहयोग** और **संवाद** जैसे **जीवन-कौशल** भी विकसित हुए। गतिविधि ने यह भी स्पष्ट किया कि सीमित संसाधनों में भी यदि विद्यालय अपने उपलब्ध परिवेश का रचनात्मक उपयोग करे, तो प्रभावी और आनंददायक अधिगम संभव है।

विद्यालय परिसर ही जीवंत प्रयोगशाला

उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, तेलवारा, सन्हौला, भागलपुर में आयोजित यह गतिविधि इस बात का सशक्त उदाहरण है कि विद्यालय का परिसर स्वयं एक विशाल और जीवंत प्रयोगशाला बन सकता है। वृक्ष-पौधे विज्ञान और पर्यावरण की पुस्तक बन सकते हैं, विद्यालय की विद्युत व्यवस्था विज्ञान की प्रयोगशाला और विद्यालय का भवन आवास एवं निर्माण संबंधी ज्ञान का प्रत्यक्ष माध्यम बन सकता है।

खेल-खेल में **सीखने की विधि** और **पी.बी.एल.** आधारित शिक्षण ने बच्चों में सीखने के प्रति उत्साह पैदा किया और यह संदेश दिया कि–

"जो बच्चा स्वयं खोजता है, वह केवल याद नहीं करता—वह समझता है;
और जो समझकर सीखता है, उसका ज्ञान स्थायी बन जाता है।"

https://www.navyatna.online/

शीर्षक

कटती जमीन, मगर अडिग हौसले

बच्चों की उड़ान

यह कथा एक ऐसे संवेदनशील भूमि की है जहां माता गंगा प्रतिवर्ष अठखेलियां करने आती हैं। माता का स्नेह आलिंगन से सिंचित यह भूमि कई भौगोलिक परिवर्तनों का दंश सहते हुए प्रतिवर्ष नवीन चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्पर रहता है।

कहा जाता है दियारा वह क्षेत्र है जहाँ जहाँ बाढ़ प्रत्येक वर्ष आने वाली एक स्थायी घटना है, जिसका स्वागत यह धरती अतिथि के रुप में करती है। कृषि के लिए वरदान मानी जाने वाली यह भूमि नवीनता धारण करने के लिए कई परीक्षाओं से गुजरती है। इस भूमि का एक अध्याय है **उच्च माध्यमिक विद्यालय शंकरपुर, नाथनगर** जहां बाढ़ प्रत्येक वर्ष आने वाला एक स्थाई अतिथि है।

नित भौगोलिक संघर्षों में रत रहने वाला यह विद्यालय महकमे का ऐसा क्षेत्र है जहां सावन भादो गंगा मां की आगोश में व्यतीत होता है। यहां के बच्चे जिनका बचपन पक्की सड़कों पर नहीं वरन रेत, नदी और बदलती धाराओं के बीच बीतता है। इस विद्यालय के कई छात्रों ने यह सिद्ध कर दिया कि परिस्थितियाँ कभी प्रतिभा की सीमा तय नहीं करती है।

कभी-कभी संकट मनुष्य को तोड़ता नहीं बल्कि स्वयं से **साक्षात्कार** कराता है। शायद विपरीत परिस्थितियों में मनुष्य अपने भीतर छिपी हुई क्षमता को जान पाता है। विपदा अवसर का मार्ग खोल देती है। इस बात का ज्वलंत उदाहरण मैंने अपने विद्यालय में देखा। तैर कर जीवन की मुख्य धारा से जुड़ना जिनकी मजबूरी है ,इसी मजबूरी को मेरे विद्यालय के छात्रों ने अपनी उन्नति का आधार बना लिया।

मेरे विद्यालय के लड़के ही नहीं बल्कि लड़कियों ने भी **तैराकी** में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। कुछ बच्चे जैसे अंकित कुमार, बलराम कुमार, लड़कियों में सविता कुमारी, चांदनी कुमारी ने तैराकी के कई आयामों में प्रतियोगिता जीता।

कक्षा 12 के विज्ञान संकाय का एक छात्र **अंकित कुमार** ने **69th नेशनल स्कूल गेम्स** में **दिल्ली** जाकर अपनी **सफलता का परचम** लहराया। वही **बलराम कुमार** को राज्यपाल ने **सबौर कृषि विश्व विद्यालय** में सम्मानित किया।

सविता कुमारी जो 11वीं विज्ञान की छात्रा है, ने **सैंडिस कम्पाउंड** में आयोजित होने वाली जिला स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं 12वीं की छात्रा चांदनी कुमारी ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

लहरों को चीरते हुए **अंकित कुमार** ने अपनी मेहनत और हौसले से राष्ट्रीय स्तर पर सफलता की एक खूबसूरत कहानी लिखी है।

उसकी यह उपलब्धि केवल एक जीत नहीं, बल्कि हमारे विद्यालय के लिए गर्व का वह पल है, जिसे हम हमेशा याद रखेंगे।

अंकित की सफलता ने विद्यालय के नाम को नई पहचान दी और हम सभी के हृदय को गर्व से भर दिया।

"मानव जब जोर लगाता है, पत्थर पानी बन जाता है।"

रामधारी सिंह '**दिनकर**' की इस पंक्ति को इन बच्चों ने चरितार्थ कर लिया।

हौसलों की उड़ान हो, तो राह आसान होती है,
साहस की हर धड़कन में, जीत की पहचान होती है।
जो लहरों से टकराकर भी आगे बढ़ता जाता है,
वही अपनी मेहनत से इतिहास रच पाता है।

शीर्षक

सफलता के सोपान पर रौनक राज

बच्चों की उड़ान

सफलता केवल प्रतिभा से नहीं, बल्कि निरंतर अभ्यास, सही मार्गदर्शन और आगे बढ़ते रहने की दृढ़ इच्छाशक्ति से बनती है। इसी कथन को चरितार्थ करती है, **कन्या मध्य विद्यालय चांदन, बाँका** के छात्र **रौनक राज** की कहानी ।

सफलता की यात्रा:- विद्यालय में आयोजित छोटी-छोटी प्रतियोगिताओं से शुरु हुई उनकी यात्रा राज्य स्तर तक पहुंची। इस सफर में उनके माता-पिता, विद्यालय के प्रधानाध्यापक **श्री आदित्य कुमार** और अन्य शिक्षकों का मार्गदर्शन उनके लिए लगातार प्रेरणा का स्रोत बने रहे।

रुचि-अभिरुचि:- रौनक की पढ़ाई और शैक्षणिक प्रतियोगिताओं में रुचि विद्यालय के वातावरण से विकसित हुई। स्कूल स्तर पर समय-समय पर क्विज़, ओलंपियाड, चित्रकला खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। प्रधानाध्यापक आदित्य कुमार विद्यार्थियों को इन गतिविधियों में भाग लेने के लिए लगातार प्रेरित करते रहते हैं। जिसमे रौनक हमेशा रुचि लेते थे। प्रतियोगिताओं में अच्छा प्रदर्शन और अखबार में नाम प्रकाशित होना रौनक के लिए नई ऊर्जा लेकर आता था। माता-पिता की खुशी उन्हें और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित करता था।

उपलब्धियाँ:-रौनक की **प्रतियोगिताओं** मे भाग लेने की प्रारम्भिक यात्रा कक्षा 6 से शुरु हुई। शिक्षक दिवस पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में उन्होंने कक्षा 6 से 8 वर्ग में विद्यालय स्तर पर दूसरा स्थान प्राप्त किया। इसके बाद गांधी जयंती पर आयोजित भाषण और निबंध–दोनों प्रतियोगिताओं में उन्होंने पहला स्थान हासिल किया। इसी दौरान स्वास्थ्य विभाग द्वारा विद्यालय में आयोजित स्वास्थ्य संबंधी क्विज़ प्रतियोगिता में भी रौनक ने कक्षा 6 से 8 वर्ग में **प्रथम स्थान** प्राप्त किया। इन शुरुआती सफलताओं ने उनके आत्मविश्वास को मजबूत किया। विद्यालय में गणित दिवस पर **श्रीनिवास रामानुजन** और **विज्ञान दिवस** पर **सर सी.वी. रमन** से जुड़ी जिला स्तरीय **प्रतियोगिताएँ** आयोजित हुईं। शुरुआत में उन्हें असफलता भी मिली लेकिन अपने सिनियर के सफलता से प्रेरणा लेते हुए रौनक ने हार मानने के बजाय और मेहनत करने के लिए कदम बढाया। तत्पश्चात 2025 में कक्षा 7 की वार्षिक परीक्षा के समय बिहार दिवस के अवसर पर **क्विज़** प्रतियोगिता आयोजित हुई। प्रतियोगिता स्कूल, प्रखंड और जिला स्तर पर हुई। रौनक ने विद्यालय और प्रखंड–दोनों स्तरों पर **प्रथम स्थान** प्राप्त किया और इसके बाद जिला स्तर पर भी **पहला स्थान** हासिल किया। बाँका जिले से चयनित नौ विद्यार्थियों को राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए पटना भेजा गया।

गांधी मैदान में आयोजित इस प्रतियोगिता में रौनक ने पूरे बिहार में **चौथा स्थान** प्राप्त किया और उन्हें ट्रॉफी तथा प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। यह उनकी यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव था।

राज्य स्तर की इस उपलब्धि के बाद विद्यालय मे उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें विद्यालयी गतिविधियों मे शामिल किया गया। बाल संसद सदस्य के रुप मे उन्होंने **प्रधानमंत्री पद** का दायित्व निभाते हुए अन्य बाल संसद के अन्य मंत्रियों को भी सक्रिय रुप से काम करने के लिए प्रेरित किया।

कहते हैं, **"होनहार विरवान के होत चिकने पात"** इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए रौनक ने अपने शिक्षक के मार्गदर्शन मे **एन.एम.एम. एस .परीक्षा** की तैयारी की शुरुआत की। कक्षा 8 में पहुँचने के बाद रौनक ने एन.एम.एम.एस. की तैयारी शुरु की। उनकी मेहनत देखकर उनके सहपाठी भी तैयारी में जुट गए। परिणाम आया तो विद्यालय के कुल आठ विद्यार्थियों का एन.एम.एम.एस.में चयन हुआ, जो बाँका जिले में किसी एक विद्यालय से सबसे अधिक चयन था। यह उपलब्धि केवल रौनक की व्यक्तिगत सफलता नहीं रही, बल्कि उनकी तैयारी ने साथियों को भी प्रेरित किया।

मार्च 2026 में **बिहार दिवस** पर पुनः प्रतियोगिता आयोजित हुई। इस बार विद्यालय के रौनक कुमार जिला टॉपर बने। फिर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के परिणाम में रौनक ने पूरे बिहार में **दूसरा स्थान** प्राप्त कर जिले को गौरवान्वित किया। उन्हें ट्रॉफी और प्रमाणपत्र मिला तथा इस उपलब्धि के लिए बाँका के जिलाधिकारी द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया गया। अब रौनक का लक्ष्य राजकीय एवं राष्ट्रीय उपलब्धियों पर है।

गतिविधियों मे सहभागिता:- रौनक की कहानी केवल क्विज़ और परीक्षाओं तक सीमित नहीं है। ये विद्यालय में भी विभिन्न गतिविधियों -ईको क्लब, 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान, सफाई अभियान, बाल संसद, मीना मंच, प्रभात फेरी, चित्रकला, विज्ञान प्रदर्शनी तथा खेलकूद जैसी गतिविधियों मे उत्कृष्ट भूमिका निभाते हैं। रौनक की उपलब्धियों से प्रेरित होकर जूनियर विद्यार्थी एन.एम.एम.एस और बिहार दिवस जैसी प्रतियोगिताओं की तैयारी में जुटे हैं।

सफलता का मूल मंत्र:— रौनक अपनी सफलता का सबसे महत्वपूर्ण मंत्र **"अभ्यास एवं एकाग्रता"** को मानते हैं। उनका अनुभव है कि किसी विषय को एक बार पढ़ लेना पर्याप्त नहीं है। नियमित रुप से उसे दोहराने से ज्ञान स्थायी होता है और उत्तर देने की गति बढ़ती है। वे विद्यार्थियों को आत्मविश्वास रखने की सलाह देते हैं, लेकिन साथ ही ओवर-कॉन्फिडेंस से बचने की बात भी करते हैं।

रौनक अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता, प्रधानाध्यापक और सभी शिक्षकों को देते हैं। किताबों के साथ-साथ शिक्षकों, माता-पिता और अन्य उपलब्ध माध्यमों से सीखते हुए उन्होंने अपनी तैयारी को लगातार मजबूत किया।

रौनक राज की यात्रा यह बताती है कि जब विद्यालय अवसर देता है, शिक्षक दिशा दिखाते हैं, परिवार प्रोत्साहन देता है और विद्यार्थी नियमित मेहनत करता है, तो छोटी-सी शुरुआत भी बड़ी उपलब्धि में बदल सकती है।

शीर्षक

विद्यालय में अपार संभावनाएं

बदलते विद्यालय की कहानी

07 जनवरी 2023 को **डॉ. रश्मि** ने भागलपुर के **उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय अगरपुर माछीपुर,गोराडीह** में प्रधानाध्यापिका के दायित्व के लिए पदस्थापना ग्रहण की। शुरुआत से ही उनका संकल्प रहा–**"Our Motto is Discipline and Justice."** उनका मानना है कि जिस विद्यालय में मूल्य, अनुशासन, संवेदनशीलता, पारिवारिकता और दोस्ताना वातावरण हो, वही वास्तव में समृद्ध विद्यालय है। इसी मूल मंत्र के साथ विद्यालय परिवार ने सीमित संसाधनों में बेहतर करने का प्रयास शुरु किया और धीरे-धीरे अनेक छोटे कदम बदलाव की बड़ी कहानी बनते गए।

विद्यालय में योगदान के बाद सबसे पहले आधारभूत आवश्यकताओं को चुनौती के रुप में स्वीकार किया गया। बच्चों के बैठने के लिए 15 दरियाँ, कुर्सियाँ, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए बेसिन, चेतना सत्र को प्रभावी बनाने के लिए **साउंड बॉक्स**, **डेस्क-बेंच, पुलिया**, **पोडियम**, **CCTV कैमरा** तथा विद्यालय में **NCC** की व्यवस्था जैसे कार्य किए गए। इन प्रयासों का उद्देश्य केवल सुविधाएँ बढ़ाना नहीं, बल्कि विद्यालय में जिम्मेदारी, अनुशासन और सहभागिता की संस्कृति विकसित करना भी था।

विद्यालय संचालन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षकों के साथ बैठक और समन्वय से एक **SOP अर्थात मानक संचालन प्रक्रिया** तैयार की गई। चेतना सत्र के समय शिक्षक छोटे समूहों में बँटकर कतारों की मॉनिटरिंग, समसामयिकी, 'एक था मोहन' जैसी पुस्तकों का वाचन, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता जाँच जैसी गतिविधियाँ करते हैं। इससे बच्चों को ज्ञान के साथ सही राह पर चलने और अपने लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा मिलती है।

कमजोर विद्यार्थियों को मुख्य धारा से जोड़ने के लिए विशेष कक्षाओं की व्यवस्था की गई है। नामांकन से पूर्व और बाद में ऐसे बच्चों को अलग से समय देकर उनकी सीखने की कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास किया जाता है। नौवीं कक्षा में प्रवेश के समय पूर्व प्रवेश परीक्षा के माध्यम से बच्चों की शैक्षणिक स्थिति समझी जाती है, ताकि उनके स्तर के अनुरुप सीखने की व्यवस्था की जा सके। विद्यालय में **आई-कार्ड**, **टाई, बेल्ट** और **मॉनिटर टैग** के वितरण से बच्चों में उत्साह, समानता और एकरुपता की भावना भी मजबूत हुई है। इको क्लब और बागवानी विद्यालय की महत्वपूर्ण गतिविधियों में शामिल हैं। **'मिशन लाइफ'** के अंतर्गत बच्चों ने एक-एक पौधा गोद लिया है और वे प्रतिदिन उसकी देखभाल करते हैं। इससे उनमें जिम्मेदारी और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता की भावना विकसित हो रही है। स्वच्छता के प्रति जागरुकता के लिए प्रत्येक शनिवार शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर विद्यालय परिसर में सफाई अभियान भी चलाते हैं।

विद्यालय में **CCTV** लगाए जाने से अनुशासन, विद्यालय प्रबंधन तथा अभिभावकों और विद्यार्थियों के विश्वास को मजबूत करने में मदद मिली है। साथ ही समूह कार्य, क्विज, चित्रकला और अन्य गतिविधियों का नियमित आयोजन किया जाता है।

विद्यालय प्रबंधन का विशेष जोर कक्षा-कक्ष को **रोचक** और **गतिविधि** आधारित बनाने पर है। विज्ञान में मॉडल आधारित शिक्षण, प्रोजेक्ट वर्क, दैनिक जीवन के उदाहरण और समूह चर्चा का उपयोग किया जाता है। अंग्रेजी और संस्कृत के प्रति बच्चों की झिझक दूर करने के लिए कठिन शब्दों से नियमित परिचय, वर्ड गेम, रोल प्ले और संवाद अभ्यास कराया जाता है। गणित एवं सामाजिक विज्ञान में स्मार्ट क्लास, वीडियो, डिजिटल प्रस्तुतीकरण, चित्र और एनीमेशन की सहायता से कठिन अवधारणाओं को सरल बनाने का प्रयास किया जाता है। सामाजिक विज्ञान में मानचित्र के माध्यम से दिशाओं और भौगोलिक स्थितियों को समझाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

कला और नृत्य के नियमित अभ्यास ने बच्चों की मंचीय झिझक कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अब बच्चे होली मिलन, स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस जैसे आयोजनों में उत्साह से प्रस्तुति देते हैं। ICT लैब में **'ह्यूमन कम्प्यूटर गेम'** (Human Algorithm) जैसे तरीकों से बच्चों को खेल-खेल में कंप्यूटर सिखाया जाता है। शुरुआत में गलती करने से डरने वाले बच्चे अब कंप्यूटर लैब में जाकर नई चीजें सीखने के लिए उत्साहित रहते हैं।

विद्यालय में **NCC** बच्चों के व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम बना है। यह विद्यार्थियों को अनुशासन, ईमानदारी, निःस्वार्थ सेवा, समय का महत्व, टीम वर्क और नेतृत्व का पाठ सिखाता है। नियमित ट्रेनिंग और परेड से बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक मजबूती आती है तथा उनके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। जो बच्चे पहले मंच पर बोलने से डरते थे, वे अब परेड कमांड देने, मंच पर बोलने और दूसरों का नेतृत्व करने में सक्षम हो रहे हैं।

विद्यालय की इस यात्रा में ऐसी प्रेरक कहानियाँ भी निरंतर ऊर्जा देती हैं, जो शिक्षा की वास्तविक आवश्यकता और महत्व को सामने लाती हैं। बिहार के सीतामढ़ी जिले के सुदूर गाँव खोपटाहा की ललिता की संघर्ष-कथा इसका मार्मिक उदाहरण है। सुनिए इसे उसी के शब्दों में–
"चिड़ियों की तरह आकाश में उड़ना चाहती हूं। मैंने जीवन को बहुत नजदीक से देखा है। खेतों में काम करते हुए, घर में बर्तन मांजते हुए, बकरियां चराते हुए मैंने पढ़ना सीखा। घर के लोगों को पता चला तो मेरी खूब पिटाई हुई। मां ने कहा तुम्हारे बदले काम कौन करेगा? पिता ने कहा लड़कियां पढ़ कर क्या करेगी? भाई ने कहा कि हमारे घर की लड़कियां पढ़ती नहीं। तू पढ़ने नहीं जाएगी। मैं पिटती रही लेकिन पढ़ना नहीं छोड़ा। आज मैं छठी जमात में हूं।" उसकी कहानी यह संदेश देती है कि कठिन परिस्थितियों के बीच भी शिक्षा के प्रति दृढ़ संकल्प नई राह खोल सकता है।

इस विद्यालय ने **मुख्य मार्ग** से अपने तक पहुंच के लिए भी बहुत दिनों तक इंतजार किया है। इसके लिए विद्यालय परिवार को 12 साल एवं वर्तमान प्राचार्य डॉ रश्मि को 3 साल तक अथक प्रयास करना पड़ा। लेकिन अंतत विद्यालय परिवार और प्राचार्य को ही खड़ा होना पड़ा और इसका निर्माण विद्यालय के द्वारा ही हुआ और अंततः विद्यालय को पहुंच पथ (मुख्य मार्ग से विद्यालय तक कच्ची रास्ते और कीचड़ से राहत के रूप में पक्कीकरण) की प्राप्ति हुई।

उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, अगरपुर माछीपुर की यह यात्रा बताती है कि सरकारी विद्यालयों में अपार संभावनाएँ मौजूद हैं। आवश्यकता है उपलब्ध **संसाधनों** का सर्वोत्तम उपयोग करने, चुनौतियों को अवसर में बदलने और विद्यालय परिवार के सामूहिक प्रयास को निरंतर बनाए रखने की। जब शिक्षक, विद्यार्थी और **विद्यालय प्रबंधन** एक साझा उद्देश्य के साथ आगे बढ़ते हैं, तो छोटे-छोटे प्रयास भी बड़े और स्थायी बदलाव का आधार बन सकते हैं।

शीर्षक

चुनौतियों से उपलब्धियों तक

बदलते विद्यालय की कहानी

"परिवर्तन किसी एक दिन का परिणाम नहीं, बल्कि प्रतिदिन किए गए छोटे-छोटे प्रयासों की निरंतर यात्रा है।" विद्यालय केवल भवन, कक्षाओं और संसाधनों का नाम नहीं है। यह वह स्थान है जहाँ बच्चों के सपनों को दिशा मिलती है, व्यक्तित्व का निर्माण होता है और समाज के भविष्य की नींव रखी जाती है। इसी सोच के साथ **कन्या मध्य विद्यालय, खगड़ा, धोरैया** के **प्रधानाध्यापक श्री प्रदीप कुमार मंडल** ने विद्यालय की जिम्मेदारी को केवल प्रशासनिक दायित्व न मानकर शैक्षणिक और सामाजिक परिवर्तन के अवसर के रुप में स्वीकार किया।

31 अक्टूबर 2018 को प्रधानाध्यापक के पद पर नियुक्ति और जनवरी 2019 में विद्यालय का संपूर्ण प्रभार मिलने के समय विद्यालय अनेक चुनौतियों से घिरी थी। कुल 231 बच्चों के नामांकन के बावजूद प्रतिदिन औसतन केवल 20-30 बच्चे विद्यालय आते थे। लगभग **98 प्रतिशत विद्यार्थी** निर्धारित पोशाक में नहीं आते थे। मध्यान्ह भोजन के बाद बच्चों का विद्यालय में ठहराव बहुत कम था और शैक्षणिक वातावरण भी अपेक्षित स्तर का नहीं था।

विद्यालय में सात शिक्षक-शिक्षिकाएँ कार्यरत थे, पर बच्चों में नियमित अध्ययन और अनुशासन की आदत विकसित नहीं हो पाई थी। जल संकट गंभीर था। सभी चापाकल खराब थे और मध्यान्ह भोजन के लिए भी पानी बाहर से लाना पड़ता था। पानी के अभाव में शौचालयों का उपयोग भी प्रभावित था। अधिकांश कक्षाओं में बिजली और पंखों की सुविधा नहीं थी तथा विद्यालय परिसर में हरियाली और आकर्षक शैक्षणिक वातावरण का अभाव था। प्रधानाध्यापक ने इन परिस्थितियों को केवल समस्या के रुप में देखने के बजाय परिवर्तन की संभावना के रुप में स्वीकार किया।

बुनियादी सुविधाओं से बदलाव की शुरुआत:- विद्यालय की समस्याओं को क्रमवार चिन्हित करते हुए सबसे पहले जल संकट को दूर करने का निर्णय लिया गया। प्रधानाध्यापक ने अपने निजी संसाधन से लगभग 60 फीट बोरिंग वाला चापाकल लगवाया। इससे बच्चों, शिक्षकों और मध्यान्ह भोजन से जुड़ी जल आवश्यकताओं में काफी सुधार आया। इसके बाद पूरा ध्यान **शैक्षणिक वातावरण** पर केंद्रित किया गया। प्रधानाध्यापक ने कार्यालय संबंधी कार्य विद्यालय समय के बाद करने की व्यवस्था बनाई और स्वयं कक्षा 6 से 8 तक गणित एवं सामाजिक विज्ञान पढ़ाना प्रारंभ किया। इसका सकारात्मक प्रभाव अन्य शिक्षकों पर भी पड़ा और धीरे-धीरे पूरी शिक्षक टीम ने विद्यालय के शैक्षणिक वातावरण को मजबूत करने में सक्रिय भूमिका निभानी शुरु की। कुछ ही समय में बच्चों की उपस्थिति में उल्लेखनीय सुधार दिखने लगा। जहाँ कभी 20-30 बच्चे प्रतिदिन विद्यालय आते थे, वहीं उपस्थिति बढ़कर **150 से अधिक** हो गई। बच्चों में अनुशासन, शिक्षकों के प्रति सम्मान और विद्यालय से जुड़ाव भी बढ़ा।

अभिभावकों का विश्वास बना परिवर्तन की ताकत:- विद्यालय प्रशासन ने यह समझा कि स्थायी सुधार केवल शिक्षक और बच्चों के प्रयास से संभव नहीं है। अभिभावकों और समुदाय को विद्यालय से जोड़ना भी आवश्यक है। इसके लिए लगातार संवाद, घर-घर संपर्क और बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया गया। कई अभिभावक अपने बच्चों को निजी विद्यालय या कोचिंग में भेजना अधिक उपयोगी मानते थे, लेकिन जब उन्होंने सरकारी विद्यालय में बदलता वातावरण, नियमित कक्षाएँ, शिक्षकों का समर्पण और बच्चों की प्रगति देखी, तो उनकी सोच में बदलाव आया। धीरे-धीरे विद्यालय के प्रति विश्वास बढ़ा और अभिभावक स्वयं बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक सजग होने लगे।

वीरान परिसर से आकर्षक विद्यालय तक:- वित्तीय वर्ष 2019-20 में विद्यालय को विकास मद से लगभग ₹75,000 प्राप्त हुए। इस राशि का उपयोग विद्यालय की आवश्यकता के अनुसार रंग-रोगन, मरम्मत, शैक्षणिक सामग्री और अन्य सुविधाओं के विकास में किया गया। विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण और फूल-पौधों के माध्यम से हरियाली बढ़ाई गई। कोरोना काल में विद्यालय को क्वारंटाइन सेंटर के रूप में उपयोग किया गया। उस समय कमरों में पंखों की कमी महसूस हुई। आवश्यकता को देखते हुए प्रधानाध्यापक ने निजी संसाधनों से कक्षाओं में पंखे लगवाने की पहल की। बाद में मुख्यमंत्री जल-नल योजना के अंतर्गत पंचायत से संपर्क कर विद्यालय में जल कनेक्शन उपलब्ध कराया गया।

उपस्थिति से उपलब्धि तक:- आज विद्यालय में नामांकन **400 से अधिक** हो चुका है और प्रतिदिन लगभग 300 बच्चे विद्यालय आते हैं। यह केवल संख्या का परिवर्तन नहीं, बल्कि अभिभावकों और समाज के बढ़ते विश्वास का प्रमाण है। शैक्षणिक वातावरण में सुधार का प्रभाव प्रतियोगिताओं में भी दिखाई देने लगा। वर्ष 2024 में कक्षा 8 के छात्र **सूरज कुमार ने इंस्पायर अवार्ड** में सफलता प्राप्त की। गणित ओलंपियाड 2025 में कक्षा 7 के छात्र **आशीष कुमार** ने जिले में **द्वितीय स्थान** प्राप्त किया, जबकि AI-क्विज प्रतियोगिता में कक्षा 7 के छात्र **आयुष वत्स** ने **प्रथम स्थान** हासिल किया। अन्य प्रतियोगिताओं में भी विद्यालय के विद्यार्थी लगातार उल्लेखनीय प्रदर्शन कर रहे हैं।

चेतना सत्र से नेतृत्व निर्माण:- विद्यालय में चेतना सत्र को आत्मविश्वास, अनुशासन और नेतृत्व विकास से जोड़ा गया है।विद्यार्थियों को चार हाउस—डॉ. भीमराव अंबेडकर हाउस, पंडित जवाहरलाल नेहरु हाउस, महात्मा गांधी हाउस और डॉ. सुभाष चंद्र बोस हाउस—में विभाजित किया गया। **श्री प्रीतम कुमार** चेतना सत्र की ई-मैगजीन तैयार करते हैं।

पियर लर्निंग में **श्रीमती अनिता कुमारी, नूतन कुमारी, जाहिदा खातून एवं शिववानी कुमारी**, कला एवं चित्रांकन में **श्री पंकज कुमार लोहरा** तथा भाषा-कौशल के विकास में **श्रीमती सुलोचना कुमारी** महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। विद्यालय की हरियाली एवं पोषण वाटिका की देखभाल रसोइया **श्री ज्ञानी मंडल** द्वारा किया जाता है।

विद्यालय की इस प्रगति को विद्यालय शिक्षा समिति भी सकारात्मक परिवर्तन के रुप में देखती है। समिति के **अध्यक्ष श्री अरविन्द झा** के अनुसार, SH-84 सन्हौला-धोरैया मुख्य मार्ग पर स्थित कन्या मध्य विद्यालय, खगड़ा भारतीय संस्कृति, शिक्षा और संस्कारों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभर रहा है। यहाँ शिक्षक-शिक्षिकाएँ बच्चों की प्रतिभा एवं कौशल को निखारकर उनके सर्वांगीण विकास में निरंतर योगदान दे रहे हैं। वे मानते हैं कि प्रधानाध्यापक श्री प्रदीप कुमार मंडल के नेतृत्व में विद्यालय ने नई दिशा और पहचान प्राप्त की है तथा अपने प्रयासों से प्रखंड एवं जिला ही नहीं, बल्कि राज्य स्तर पर भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाने की ओर अग्रसर है।

आज की बदली हुई तस्वीर:- वर्ष 2019 में जहाँ विद्यालय पानी, उपस्थिति, अनुशासन और संसाधनों की समस्याओं से जूझ रहा था, वहीं आज वही विद्यालय 400 से अधिक नामांकन, लगभग 300 की नियमित उपस्थिति, अनुशासित वातावरण, बेहतर आधारभूत सुविधाओं, हरियाली, प्रतियोगी उपलब्धियों और सक्रिय शैक्षणिक गतिविधियों के साथ आगे बढ़ रहा है।

प्रधानाध्यापक प्रदीप कुमार मंडल का मानना है कि विद्यालय परिवर्तन का कोई शॉर्टकट नहीं होता। इसके लिए निरंतरता, धैर्य, संवेदनशीलता, टीमवर्क और प्रतिदिन आत्म-समीक्षा आवश्यक है।

विद्यालय की सबसे बड़ी उपलब्धि भवन या संसाधन नहीं, बल्कि बच्चों की आँखों में सीखने की चमक, उनके व्यवहार में अनुशासन, शिक्षकों के प्रति सम्मान और अभिभावकों का बढ़ता विश्वास है।

"जब विद्यालय बदलता है, तो केवल बच्चे नहीं बदलते—परिवार बदलता है, समाज बदलता है और आने वाला भविष्य बदलता है।"

शीर्षक

सुनहरे धागों की कहानी

मृदगौरव: अपनऽ धरती अपनऽ धरोहर

"जब किसी प्रदेश की पहचान उसके इतिहास, संस्कृति और मेहनतकश लोगों से बनती है, तब उस पहचान में तसर रेशम सुनहरे धागों की तरह चमकता है।"

जंतु विज्ञान में स्नातकोत्तर (एम.एससी.) की उपाधि रेशम पालन (Sericulture) में विशेषज्ञता के साथ प्राप्त करने के बाद शिक्षिका **श्रीमती कनु प्रिया** वर्तमान में **सरस्वती विद्या निकेतन, तिनटंगा दियारा, रंगरा चौक, भागलपुर** में बीपीएससी शिक्षिका के रुप में कार्यरत हैं। यह क्षेत्र हर वर्ष बाढ़, आवागमन की कठिनाइयों और संसाधनों की कमी जैसी अनेक चुनौतियों का सामना करता है।

इन परिस्थितियों के बावजूद विद्यार्थियों को अपनी स्थानीय धरोहर, परंपरा और उससे जुड़े संभावित अवसरों से परिचित कराने का निरंतर प्रयास किया जा रहा है।इसी क्रम में विद्यार्थियों को तसर रेशम के इतिहास, रेशम कीट के जीवन-चक्र, तसर उत्पादन की प्रक्रिया तथा इससे जुड़े रोजगार और उद्यमिता के अवसरों की जानकारी दी जा रही है। इसका उद्देश्य केवल उन्हें एक विषय से परिचित कराना नहीं, बल्कि अपनी स्थानीय विरासत को समझने, उससे जुड़ने और उसके संरक्षण एवं विकास की संभावनाओं को पहचानने के लिए प्रेरित करना भी है। संभव है कि इन्हीं विद्यार्थियों में से कुछ भविष्य में **तसर रेशम कीट पालन (Sericulture)** को आजीविका का माध्यम बनाएँ, अपना स्वयं का उद्यम स्थापित करें और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करें। साथ ही, वे भागलपुर की इस गौरवशाली रेशम परंपरा को नई तकनीक, नए विचार और नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ाने में योगदान दे सकें।

तसर रेशम का परिचय:- बिहार की सांस्कृतिक और **हस्तशिल्प** परंपराओं में **तसर रेशम** (Tasar Silk) का विशेष स्थान है। अपनी प्राकृतिक सुनहरी चमक, मजबूत बनावट और आकर्षक सौंदर्य के कारण इसने देश ही नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी विशिष्ट पहचान बनाई है। **भागलपुर**, जिसे "**सिल्क सिटी ऑफ इंडिया**" कहा जाता है, सदियों से रेशम बुनाई का प्रमुख केंद्र रहा है। यहाँ के बुनकरों की कला,मेहनत, धैर्य और रचनात्मकता हर रेशमी वस्त्र में झलकती है।

तसर रेशम का जीवन चक्र:- **तसर रेशम** **Antheraea mylitta** नामक वन्य रेशम कीट से प्राप्त होता है। इसका जीवन चक्र मुख्यतः चार अवस्थाओं–अंडा, लार्वा, कोकून और पतंगा– से होकर गुजरता है। मादा पतंगा लगभग 200-300 अंडे देती है, जिनसे अनुकूल परिस्थितियों में 8-12 दिनों में लार्वा निकलते हैं। ये लार्वा मुख्यतः शहतूत के पत्ते खाकर विकसित होते हैं। पूर्ण विकसित होने पर वे अपने चारों ओर लगभग 1000-1500 मीटर लंबा **रेशमी धागा** बनाकर कोकून का निर्माण करते हैं। यही कोकून रेशम उत्पादन का प्रमुख आधार होता है। यदि कोकून को रेशम उत्पादन के लिए उपयोग न किया जाए, तो उससे पतंगा निकलकर पुनः प्रजनन करता है और जीवन चक्र दोबारा शुरु हो जाता है।

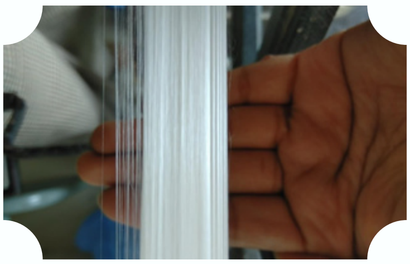

तसर रेशम उत्पादन की प्रक्रिया:- तसर रेशम का उत्पादन **रेशम कीट पालन** (Sericulture) से प्रारंभ होता है, जहाँ कोकून सावधानीपूर्वक एकत्र किए जाते हैं। इसके बाद उन्हें धूप में सुखाया जाता है और गर्म पानी में उबालकर **प्राकृतिक गोंद** (Sericin) को नरम किया जाता है। फिर **रीलिंग** (Reeling) द्वारा कोकून से रेशमी धागा निकाला जाता है। भागलपुर की प्रसिद्ध **Thigh Reeling** तकनीक धागे को अधिक मजबूत और चमकदार बनाती है। इसके बाद धागे को सूत में बदलकर रंगाई की जाती है और हाथकरघों तथा पावरलूम पर साड़ियाँ, स्टोल, दुपट्टे, स्कार्फ, कुर्ते तथा अन्य वस्त्र तैयार किए जाते हैं। अंत में फिनिशिंग के बाद उत्पादों का देश और विदेश के बाजारों में विपणन एवं निर्यात किया जाता है।

तसर रेशम का महत्व:- तसर रेशम केवल एक प्राकृतिक रेशा नहीं, बल्कि हजारों परिवारों की **आजीविका का आधार** है। यह ग्रामीण रोजगार, महिला सशक्तिकरण और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। साथ ही यह प्राकृतिक, **जैव-अवक्रमणीय** (Biodegradable) और पर्यावरण-अनुकूल रेशा होने के कारण **सतत विकास** (Sustainable Development) की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। आज फैशन उद्योग में इसकी बढ़ती लोकप्रियता ने इसे आधुनिक परिधानों और गृह-सज्जा उत्पादों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बना दिया है।

भागलपुर में तसर रेशम उद्योग की प्रगति और चुनौतियाँ:- भागलपुर के तसर रेशम उद्योग की प्रगति के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण हैं। प्राकृतिक और हस्तनिर्मित वस्त्रों की बढ़ती वैश्विक माँग, **One District One Product (ODOP)** जैसी सरकारी योजनाओं का सहयोग, निर्यात में वृद्धि, आधुनिक फैशन उद्योग में बढ़ता उपयोग तथा भागलपुर के कुशल और अनुभवी बुनकरों की पीढ़ियों से चली आ रही परंपरा ने इस उद्योग को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है।

हालाँकि विकास के साथ-साथ यह उद्योग अनेक चुनौतियों का भी सामना कर रहा है। कच्चे माल की बढ़ती कीमत, पावरलूम और सिंथेटिक वस्त्रों से प्रतिस्पर्धा, आधुनिक तकनीक और डिजाइन की कमी, ब्रांडिंग एवं ऑनलाइन विपणन की सीमित सुविधाएँ, तथा नई पीढ़ी का इस व्यवसाय से कम जुड़ाव इसकी प्रगति में बाधा बन रहे हैं। इसके अतिरिक्त **आधुनिक प्रसंस्करण** (Processing) और कॉमन फैसिलिटी सेंटर की सीमित उपलब्धता भी उद्योग के विकास को प्रभावित करती है।

भागलपुर का तसर रेशम बिहार की सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक समृद्धि और हस्तशिल्प परंपरा का जीवंत प्रतीक है। बढ़ती वैश्विक माँग, सरकारी सहयोग और आधुनिक फैशन उद्योग इसके उज्ज्वल भविष्य की संभावनाओं को मजबूत करते हैं। यदि तकनीकी विकास, प्रभावी विपणन, ब्रांडिंग और युवा पीढ़ी की भागीदारी पर विशेष ध्यान दिया जाए, तो यह उद्योग न केवल भागलपुर बल्कि पूरे भारत की पहचान को विश्व स्तर पर और अधिक सशक्त बना सकता है। तसर रेशम का संरक्षण केवल एक उद्योग को बचाना नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा, स्थानीय कौशल और कारीगरों की अमूल्य विरासत को सुरक्षित रखना है। मेरा यह शैक्षिक प्रयास इसी विश्वास को अभिव्यक्त करता है कि

बच्चों को अपनी मिट्टी की पहचान और उससे जुड़ी सम्भावनाओं का ज्ञान दिया जाए, तो वही ज्ञान उनके भविष्य की नई राह बन सकता है।

शीर्षक

कक्षा से राष्ट्रपति भवन तक

एक शिक्षक, अनेक बदलाव

आज किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं, **शिक्षिका श्रीमति खुशबू कुमारी**। **राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026** के लिए देशभर में चयनित 48 शिक्षक/ शिक्षिकाओं में से एक खुशबू कुमारी, जिन्हें खुशबू आनंद के नाम से भी जाना जाता है, **उर्दू प्राथमिक विद्यालय बिदायडीह, नगर परिषद बाँका**, जिला बाँका में प्रधान शिक्षिका के रुप में पदस्थापित हैं।

यह केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि या सम्मान मात्र नहीं है,बल्कि हजारों शिक्षकों के उन प्रेरणादायी, समर्पित और निरंतर प्रयासों के प्रतिनिधित्व की कहानी है, जो सीमित संसाधनों के बीच नवाचारों के माध्यम से भारत का भविष्य गढ़ने में लगे हुए हैं।

पिता स्वर्गीय राजेंद्र प्रसाद साह और **माता श्रीमती राम प्यारी देवी** की चौथी संतान के रुप में उन्हें गौरवान्वित करने वाली, तीन बड़ी बहनों और लोको पायलट छोटे भाई की लाडली बहन, राधानगर, नगर पंचायत कटोरिया, जिला- बाँका की बेटी तथा धोरैया प्रखंड के मानिकपुर गाँव के मूल निवासी **श्री मनोहर प्रसाद साह** और **श्रीमती शीला देवी** की पुत्रवधू खुशबू कुमारी का परिवार वर्तमान में हंसडीहा बाजार में रह रहा है तथा स्वयं पति के साथ पदस्थापित विद्यालय से 2 किलोमीटर की दूरी पर रहती है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी तरीके से पढ़ाने तथा विभिन्न सामाजिक और समसामयिक मुद्दों पर तत्पर क्रियाशीलता दिखाने के लिए उन्हें **राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2026** से **श्रीमती द्रौपदी मुर्मू** के हाथों **5 सितंबर** को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में सम्मानित किया जा रहा है।

छात्रों के मध्य स्वयं भी एक छात्र बनकर यह प्रधान शिक्षिका पढ़ाई को बेहद आकर्षक और उत्सव के रुप में प्रस्तुत करती हैं। एक साधारण शिक्षिका से लेकर राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिक्षिका के रुप में प्रतिष्ठित होने तक की यात्रा को वह अपने पिता के सपनों को साकार करने के मार्ग पर अग्रसर होना बताती हैं। उनका कहना है कि पिता ने उन्हें जिस ऊँचाई के लायक बनाया, वहाँ से उनके पति ने सहयोग किया और उन्हें मजबूत पंख दिए। उनका भरोसा, उनके प्रति उनके पति का सम्मान तथा मायके और ससुराल, दोनों पक्ष के परिवारों का उनके प्रति विश्वास ही वह संबल है, जिसके बल पर वह आज यहाँ तक पहुँच पाई हैं। विभिन्न कठिन परिस्थितियों में उनके परिवार ने उनका साथ दिया।

शिक्षिका खुशबू कुमारी बताती हैं कि इस पूरे सफर में उनके जीवनसाथी **श्री मनीष कुमार आनंद**, प्रधान शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कोला, प्रखंड एवं जिला बाँका का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी रहा है। जीवनसाथी के साथ-साथ उन्हें घर पर ही एक ऐसे शिक्षक और सहयोगी का साथ मिलता है, जो उनकी चुनौतियों और प्रयासों को समझते हैं। विद्यालयी कार्यों, नवाचारों और नई गतिविधियों को लेकर दोनों निरंतर विचार-विमर्श करते हैं। उनका मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और सहयोग इन्हें आगे बढ़ने का आत्मविश्वास देता है। साझा शिक्षकीय यात्रा में यह साथ उनके लिए एक मजबूत संबल है।

इस क्रम में वह अपने गुरु **श्री जितेंद्र कुमार यादव**, जो उनके प्राथमिक शिक्षक थे, को याद करते हुए कहती हैं कि उनके प्रति उनका सम्मान बहुत अधिक है, क्योंकि उनके प्रभावी शिक्षण के तरीके को वह अपने शिक्षक बनने के मार्ग में प्रेरणा के रुप में मील का पत्थर मानती हैं।

अपने **13 वर्षों** के शिक्षण यात्रा में खुशबू कुमारी ने शिक्षा को केवल पाठ्यक्रम पूरा करने की प्रक्रिया न मानकर बच्चों के समग्र विकास पर ध्यान दिया। उन्होंने शिक्षा को उत्सव और आनंद के रुप में प्रस्तुत करते हुए खेल एवं गतिविधि आधारित शिक्षण का प्रयोग कर इसे सरल बनाया।

विभिन्न प्रकार की सुरक्षा से जुड़ी जिम्मेदारियों को उन्होंने नैतिक शिक्षा के अंतर्गत बच्चों को समझाया। नन्हे नौनिहालों; जिन्हें **गुड टच-बैड टच** जैसे संवेदनशील विषयों की समझ नहीं थी, को सरल भाषा और गतिविधियों के माध्यम से समझाया तथा उनकी असहजता को दूर किया। घर-घर जाकर नियमित संवाद करना और किसी भी विपरीत परिस्थिति में पीछे हटने के बजाय डटे रहना उनके कार्यों की विशेषता रही है।

परिणामस्वरुप विद्यालय का वातावरण अधिक सकारात्मक, सौहार्दपूर्ण और सहयोगात्मक बना। उनके प्रयासों से विद्यालय में बच्चों की **उपस्थिति 90% से अधिक** होने के साथ-साथ ड्रेस की उपलब्धता भी शत- प्रतिशत तक पहुँची। यही नहीं, अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों के बच्चों की तरह जूते, टाई और बेल्ट जैसी आवश्यक सामग्री भी शत-प्रतिशत बच्चों के पास उपलब्ध हुई। सबसे बड़ी बात यह है कि यह केवल आँकड़ों का खेल नहीं है, बल्कि वास्तव में विद्यालय में हुए सकारात्मक परिवर्तन हैं, जिसमें पोषक क्षेत्र की माताओं का विशेष सहयोग रहा। शिक्षिका खुशबू द्वारा संवेदनशील एवं नियमित शिक्षा के महत्त्व को लेकर समझाई गई बातों को आत्मसात करते हुए वे सकारात्मक माहौल बनाने में लगी रहीं।

सबसे बड़ी बात यह रही कि इनके प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को आगे की पढ़ाई के लिए दूसरे विद्यालय में जाना पड़ता था, जो बरसात के समय उफनती नदी के कारण काफी असुरक्षित एवं गंभीर चुनौती थी। इस समस्या का समाधान उन्होंने जिला प्रशासन की मदद से **डायवर्सन** का निर्माण करवाकर किया। **बिहार सरकार, शिक्षा विभाग** की ओर से विभिन्न गतिविधियों को उन्होंने बच्चों के नेतृत्व विकास का माध्यम बनाया। चाहे पौधा रोपण हो, जल-संरक्षण हो, विद्यालय परिसर की देखभाल करना हो, स्वच्छता हो, अनुशासन हो, शिक्षण-नवाचार हो, नैतिक शिक्षा, बाल सुरक्षा, आईसीटी और डिजिटल माध्यमों का उपयोग हो अथवा शिक्षक समुदाय के बीच अनुभवों के आदान-प्रदान को बढ़ावा देना– इन सभी क्षेत्रों में उनकी सक्रियता रही है। इसके साथ ही **8 लाख से अधिक लोगों** का उनके डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ना भी उनके प्रयासों की सार्थकता को दर्शाता है। समय-समय पर उनकी गतिविधियों का प्रचार-प्रसार विभिन्न राष्ट्रीय एवं **क्षेत्रीय मीडिया** संस्थानों में भी देखने को मिलता है।

उन्होंने शिक्षा को राष्ट्र निर्माण का आधार मानते हुए विभिन्न नागरिक कर्तव्यों और आयोजनों, जैसे गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रभात फेरी, सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि के माध्यम से एकता और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित करने का प्रयास किया। पूर्व में भी उन्हें वर्ष **2024** में **राजकीय शिक्षक पुरस्कार** से **तत्कालीन शिक्षा मंत्री श्री सुनील कुमार** द्वारा सम्मानित किया गया है।

शिक्षिका खुशबू बताती हैं कि यह सम्मान केवल एक शिक्षक के कार्यों की पहचान नहीं, बल्कि उस विचार का सम्मान है, जहाँ एक शिक्षक तत्पर रहता है कि सीमित संसाधनों के बीच भी संवेदनशीलता और समर्पण की भावना सीमित नहीं होनी चाहिए। उनकी यात्रा आज भी जारी है।

शिक्षिका खुशबू कुमारी का विश्वास है कि-

हर बच्चा महत्त्वपूर्ण है, हर बच्चा सीख सकता है और
हर बच्चे को आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।

शीर्षक

नन्ही जिज्ञासा, हरियाली का नवाचार

एक शिक्षक, अनेक बदलाव

जब ज्ञान किताबों से निकलकर मिट्टी की खुशबू में घुल जाए, तो शिक्षा जीवन का हिस्सा बन जाती है। एक शिक्षक और उसके जिज्ञासु छात्रों की यही कहानी प्रकृति-प्रेम की ऐसी यात्रा है, जहाँ एक छोटे से पौधे की कटिंग ने बड़े बदलाव की शुरुआत की। प्रकृति बच्चों की सबसे बड़ी शिक्षक है। पेड़-पौधे केवल जीवन के लिए आवश्यक नहीं होते, बल्कि वे बच्चों के भीतर संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और संरक्षण की भावना भी विकसित करते हैं।

इसी सोच को आधार बनाकर **प्राथमिक विद्यालय मलमला, शाहकुंड, भागलपुर** की **शिक्षिका श्रीमति कुमारी स्नेहा** ने बच्चों को प्रकृति से जोड़ने का एक सरल लेकिन प्रभावी प्रयास शुरू किया। यह प्रयास किसी बड़ी योजना या विशेष संसाधन से नहीं, बल्कि पौधे की एक छोटी-सी कटिंग से शुरू हुआ और धीरे-धीरे बच्चों के लिए सीखने, प्रयोग करने और पर्यावरण को समझने का माध्यम बन गया।

एक छोटी कटिंग, एक बड़ा नवाचार:- इस नवाचार की शुरुआत सरस्वती पूजा के अवसर पर हुई। शिक्षिका अपने घर में तैयार की गई एक **पौधे की कटिंग** विद्यालय लेकर आईं और उसे लगाया। बच्चों ने जब उस कटिंग को देखा, तो उनके मन में अनेक प्रश्न उठने लगे—क्या कटिंग से और भी पौधे तैयार किए जा सकते हैं? किन पौधों की कटिंग लगाई जा सकती है? नया पौधा बनने में कितना समय लगता है? क्या वे अपने घर के पौधों से भी नई पौध तैयार कर सकते हैं?

बच्चों की इस जिज्ञासा को शिक्षिका ने सीखने के अवसर में बदल दिया। उन्होंने उन्हें बताया कि कई पौधों को उनकी टहनियों या कटिंग से भी तैयार किया जा सकता है और बच्चों को स्वयं प्रयोग करके देखने के लिए प्रेरित किया।

जिज्ञासा की राह:- इसके बाद बच्चों ने अपने घर, आसपास के क्षेत्र और विद्यालय परिसर में उपलब्ध पौधों को ध्यान से देखना शुरु किया। जो पेड़-पौधे पहले उनके लिए केवल आसपास की हरियाली थे, वे अब खोज और सीखने का माध्यम बन गए।बच्चे यह जानने का प्रयास करने लगे कि किन पौधों की कटिंग से नया पौधा विकसित हो सकता है। वे टहनियों को पहचानते, पौधों की बनावट देखते और शिक्षिका से प्रश्न पूछते। इस प्रकार एक साधारण गतिविधि ने उनमें निरीक्षण, प्रश्न पूछने, तुलना करने और स्वयं करके सीखने की आदत विकसित करनी शुरु कर दी।

वेस्ट से बेस्ट तक:- इस पहल की एक महत्वपूर्ण विशेषता **पुनः उपयोग** और **अपशिष्ट प्रबंधन** से भी जुड़ी है। शिक्षिका ने बच्चों से खाली तेल के डिब्बे एकत्र करवाने शुरु किए। सामान्यतः उपयोग के बाद इन डिब्बों को बेकार समझकर फेंक दिया जाता है, लेकिन विद्यालय में इन्हीं का उपयोग पौधे तैयार करने के पात्र के रुप में किया गया।

बच्चों ने डिब्बों को साफ किया, उनमें मिट्टी भरी और उपयुक्त पौधों की कटिंग लगाई। मिट्टी तैयार करने, कटिंग लगाने, पानी देने और पौधों की नियमित देखभाल जैसी जिम्मेदारियाँ भी बच्चों ने स्वयं संभालीं। इस प्रक्रिया से बच्चों को यह समझ आया कि अनुपयोगी मानी जाने वाली वस्तुओं का भी रचनात्मक उपयोग किया जा सकता है। इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ उनमें पुनः उपयोग की व्यावहारिक समझ भी विकसित हुई।

कटिंग से जिम्मेदारी तक:- कटिंग लगाना इस गतिविधि का अंतिम चरण नहीं था, बल्कि उसके बाद बच्चों की वास्तविक जिम्मेदारी शुरु होती थी। वे नियमित रुप से अपनी लगाई हुई कटिंग को देखते, मिट्टी में नमी की जाँच करते और नई कोंपल निकलने की प्रतीक्षा करते। धूप आने पर अपने पौधे वाले डिब्बे को उचित स्थान पर रखने के लिए बच्चों में उत्साह दिखाई देता।

जब किसी कटिंग में नई पत्ती या कोंपल दिखाई देती, तो बच्चों के चेहरे खुशी से खिल उठते। वे उत्साह से कहते– **"मैडम, मेरी कटिंग में नई पत्ती आई है।"** कोई बच्चा जड़ों के बढ़ने की बात करता, तो कोई अपने साथी को बताता कि उसकी कटिंग को कितनी नमी की आवश्यकता है।

धीरे-धीरे बच्चों में अपने पौधे के प्रति स्वामित्व और जिम्मेदारी की भावना बढ़ने लगी। अब वे पौधे को केवल एक गतिविधि का हिस्सा नहीं, बल्कि अपनी देखभाल से विकसित हो रहे जीवन के रुप में देखने लगे।

कक्षा से बाहर बनी जीवंत प्रयोगशाला:- इस गतिविधि ने बच्चों को यह समझने का अवसर दिया कि सीखने के लिए केवल पाठ्यपुस्तक और कक्षा की चहारदीवारी आवश्यक नहीं है। मिट्टी, पानी, पौधे, कटिंग और बच्चों के हाथ मिलकर विद्यालय परिसर को ही एक जीवंत प्रयोगशाला में बदल सकते हैं। पौधे तैयार करने की प्रक्रिया में बच्चे पौधों की वृद्धि, जड़ों के विकास, पानी की आवश्यकता और देखभाल जैसे विषयों को प्रत्यक्ष रुप से समझने लगे। साथ ही उनमें गणना, अवलोकन, तुलना, संवाद और अभिव्यक्ति जैसी क्षमताओं का भी विकास हुआ। अब बच्चे स्वयं पौधों की कटिंग खोजते हैं और यह जानने का प्रयास करते हैं कि किस पौधे से कटिंग द्वारा नया पौधा तैयार किया जा सकता है। विद्यालय परिसर उनके लिए केवल देखने की जगह नहीं, बल्कि अनुभव करके सीखने का स्थान बन गया है।

प्रकृति के प्रति बढ़ा लगाव:- इस पहल का सबसे सुंदर परिणाम बच्चों की सोच में आया बदलाव है। अब वे पौधों को नुकसान पहुँचाने से बचते हैं। विद्यालय परिसर में कोई नया पौधा दिखाई देता है, तो उसे उत्सुकता से देखते हैं। सूखी या टूटी टहनियों में भी वे यह संभावना खोजते हैं कि क्या उनसे नया पौधा तैयार किया जा सकता है।

सरस्वती पूजा के अवसर पर घर से लाई गई एक छोटी-सी कटिंग से शुरु हुआ यह प्रयास अब बच्चों की सामूहिक गतिविधि बन चुका है। इसने यह दिखाया कि यदि शिक्षक बच्चों के प्रश्नों को ध्यान से सुने और उनकी जिज्ञासा को अवसर में बदल दे, तो एक साधारण गतिविधि भी प्रभावी नवाचार बन सकती है।

इस प्रयास का सार एक सरल विचार में समाहित है–

"जब बच्चे प्रकृति को केवल पढ़ते नहीं, बल्कि उसे अपने हाथों से सँवारते हैं,
तब पर्यावरण संरक्षण एक पाठ नहीं, बल्कि उनके जीवन का संस्कार बन जाता है।"

शीर्षक

छोटा प्रयास, सपनों को पंख

प्रेरक प्रधान

सितंबर 2025 में अर्द्धवार्षिक परीक्षा के बाद संकुल स्तर पर उत्तरपुस्तिकाओं के मूल्यांकन का कार्य चल रहा था। **मध्य विद्यालय पछियारी टोला, औलियाबाद, बिहपुर** संकुल के वरीय प्रधानाध्यापक होने के कारण इस बार भी **श्री अनिल कुमार दीपक** को प्रधान परीक्षक की जिम्मेदारी मिली थी। इसी दौरान कक्षा आठ की हिंदी उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर रहे शिक्षक शेखर जी कुछ कॉपियाँ लेकर उनके पास आए।

उन्होंने बताया कि बच्चों की लिखावट और व्याकरण में कुछ ऐसी कमियाँ हैं, जिन पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रधानाध्यापक अनिल कुमार दीपक ने जब कॉपियाँ देखीं, तो पाया कि अधिकांश बच्चों की गलतियाँ लगभग एक जैसी थीं। वर्तनी की अशुद्धियों के साथ-साथ पूर्णविराम, अर्द्धविराम और प्रश्नवाचक चिन्ह के प्रयोग की समझ भी कमजोर थी। कई बच्चों ने लगभग 150 शब्दों का उत्तर लिखा था, लेकिन पूरे उत्तर में एक भी विराम चिह्न नहीं लगाया था। अनुच्छेद लेखन की समझ भी स्पष्ट नहीं थी। उन्होंने सबसे पहले शेखर जी को धन्यवाद दिया कि उन्होंने समय रहते इस कमी की ओर ध्यान दिलाया।

समस्या को स्वीकार करने से समाधान की शुरुआत:- विद्यालय के **शिक्षण** और **प्रबंधन** को लेकर आसपास के क्षेत्र में अक्सर प्रशंसा होती थी। बच्चों के लिए नए प्रयोग और गतिविधियाँ भी नियमित रुप से होती थी, लेकिन कुछ समय पहले विद्यालय के पाँच शिक्षकों के ऐच्छिक स्थानांतरण के कारण जिम्मेदारियाँ बढ़ गई थीं। विद्यालय प्रबंधन, पंजी संधारण और प्रशासनिक कार्यों के साथ कक्षाओं की जिम्मेदारी भी अधिक हो गई थी। बच्चों की कमियों के लिए किसी एक शिक्षक को दोष देने के बजाय इसे विद्यालय की सामूहिक जिम्मेदारी माना गया। मूल्यांकन कार्य समाप्त होने के बाद शिक्षकों के साथ बैठक कर तय किया गया कि बच्चों के **भाषा एवं लेखन कौशल में सुधार** के लिए विशेष प्रयास किए जाएँगे।

एक सप्ताह की विशेष कक्षाएँ:- कक्षा सात और आठ के बच्चों के लिए लगातार एक सप्ताह तक विशेष कक्षाएँ चलाई गईं। इनमें वर्तनी सुधार, पूर्णविराम, अर्द्धविराम, प्रश्नवाचक चिन्ह और अनुच्छेद लेखन को सरल एवं रोचक तरीके से समझाया गया। बच्चों को उनकी अपनी पुरानी गलतियाँ दिखाकर सुधार कराया गया।

धीरे-धीरे बच्चे समझने लगे कि कहाँ विराम चिह्न लगाना है और कहाँ नया अनुच्छेद शुरु करना है। लेकिन प्रधानाध्यापक जानते थे कि केवल एक सप्ताह का अभ्यास स्थायी सुधार के लिए पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए शनिवार के **'बैगलेस सैटरडे** को **रचनात्मक लेखन गतिविधियों** से जोड़ दिया गया।

कक्षा पाँच से आठ तक के बच्चों के लिए नियमित रुप से निबंध लेखन, कविता लेखन और चित्रांकन प्रतियोगिताएँ आयोजित होने लगी। प्रारंभ में निबंध का विषय एक दिन पहले दिया जाता था, लेकिन जल्द ही यह महसूस हुआ कि कुछ बच्चे विषय याद करके आने लगे हैं। इसके बाद प्रतियोगिता के दिन ही विषय बताने का निर्णय लिया गया। इससे बच्चों ने अपनी सोच के आधार पर लिखना शुरु किया और उनके लेखन में मौलिकता, भाषा तथा विचारों की स्पष्टता बढ़ने लगी।

एक अवसर ने बदल दी दिशा:- लगभग पाँच महीने तक यह प्रक्रिया चलती रही। 12 फरवरी 2026 की शाम अनिल कुमार दीपक विद्यालय से संबंधित कार्य के लिए एक कैफे में बैठे थे। तभी शिक्षा विभाग के एक व्हाट्सऐप समूह में उन्हें एक पत्र दिखाई दिया। उसमें सूचना थी कि **'प्रेरणा उत्सव 2026'** के अंतर्गत नवोदय विद्यालय नगरपारा, नारायणपुर में जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। विषय था –**"विकसित भारत का लक्ष्य 2047"**।

प्रतियोगिता अगले दिन ही थी और विद्यालय स्तर पर चयन के लिए समय नहीं था। उनके मन में तुरंत दो बच्चों–**कुसुम** और **अजीत**–के नाम आए। कुसुम की लेखनी प्रभावशाली थी, जबकि अजीत विद्यालय की निबंध प्रतियोगिताओं में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहा था। दोनों बच्चों के अभिभावकों को फोन कर जानकारी दी गई। रात में विषय से संबंधित कुछ सामग्री तैयार कर उनके मोबाइल पर भेजी गई।

अगली सुबह विद्यालय में शिक्षकों की कमी के कारण बच्चों के साथ जाने के लिए विद्यालय के पोषक क्षेत्र के युवा सुजीत को तैयार किया गया। वे बच्चों को पढ़ाने में भी सहयोग करते थे। प्रधानाध्यापक ने उन्हें स्पष्ट कहा– "बच्चों पर कोई मानसिक दबाव मत डालना। उन्हें सहज और प्रसन्न रखते हुए प्रतियोगिता में ले जाना।"

दोनों बच्चे प्रतियोगिता में शामिल हुए और वापस लौट आए। उन्होंने नवोदय विद्यालय के अनुशासन, वातावरण और व्यवस्थाओं के बारे में उत्साह से अपने साथियों को बताया।

अजीत ने भरी सपनों की उड़ान:- अगले दिन विद्यालय को सूचना मिली कि कक्षा आठ के छात्र अजीत ने निबंध प्रतियोगिता में भागलपुर जिला स्तर पर **प्रथम स्थान** प्राप्त किया है। अब उसे जिला और राज्य का प्रतिनिधित्व करते हुए वडनगर, गुजरात जाना था। विद्यालय में खुशी का माहौल बन गया। मिठाइयाँ बाँटी गई और शिक्षक, विद्यार्थी तथा अभिभावक सभी उत्साहित थे। ग्रामीण परिवेश के एक सरकारी विद्यालय का छात्र अपनी लेखनी के दम पर जिला स्तर पर प्रथम आया था।

अजीत नवोदय विद्यालय के प्रतिनिधि के साथ **वडनगर** गया। वहाँ शिक्षा विभाग की देखरेख में उसने लगभग दस दिनों तक विभिन्न शैक्षणिक और ज्ञानवर्धक गतिविधियों में भाग लिया। वापस लौटकर उसने विद्यालय के चेतना सत्र में अपने अनुभव साझा किए। उसकी बातें सुनकर दूसरे बच्चों की आँखों में भी नए सपने दिखाई देने लगे।

अजीत की यात्रा ने यह भी साबित किया कि प्रतिभा किसी बड़े शहर या महँगे विद्यालय की मोहताज नहीं होती। जरुरत केवल उसे पहचानने, निखारने और उड़ान भरने का अवसर देने की है।

कभी-कभी शिक्षक का एक छोटा-सा प्रयास किसी बच्चे के पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है। बच्चों का हाथ थामना और उनकी क्षमता पर विश्वास करना उनके सपनों को सचमुच पंख दे सकता है।

"हर बच्चे की प्रतिभा को पहचानना, उसके भीतर के सपने को जगाना, उसे अवसर देना और फिर उसे अपनी उड़ान स्वयं भरने देना–शायद यही शिक्षा का सबसे सुंदर उद्देश्य है।"

शीर्षक

संसाधन सीमित, संकल्प असीम

प्रेरक प्रधान

श्री **पंकज कुमार** ने 29 अक्टूबर 2018 को **मध्य विद्यालय भंगा पथरा, बाराहाट, बांका** में प्रधानाध्यापक के पद पर योगदान किया। उस समय विद्यालय की आधारभूत संरचना और शैक्षणिक व्यवस्था संतोषजनक नहीं थी। विद्यालय में कुल 10 कमरे थे, जिनमें से दो कमरों में खिड़कियाँ तक नहीं थीं। बच्चे एक ओर से प्रवेश करते और दूसरी ओर से निकल जाते थे। अन्य दो कमरों में खाद्य सामग्री और जलावन रखा जाता था। विद्यालय बंद होने के बाद शाम के समय असामाजिक तत्व भी परिसर में प्रवेश कर जाते थे।

विद्यालय के समग्र विकास का संकल्प लेकर उन्होंने सबसे पहले विद्यालय शिक्षा समिति की बैठक बुलाई। उपलब्ध अनुदान सीमित था, इसलिए प्राथमिकता तय कर आवश्यक मरम्मत कार्य शुरू किए गए। समिति के सदस्यों और शिक्षकों का भी उन्हें सहयोग मिला, लेकिन विद्यालय को बेहतर बनाने के लिए अतिरिक्त संसाधनों की आवश्यकता थी।

सहयोग से बनी स्मार्ट क्लास:- वर्ष 2019 में विद्यालय के सामने स्थित जगद्धात्री मंदिर में लगने वाले मेले के लिए ग्रामीण एवं रेलवे निर्माण विभाग के **अभियंता श्री निरंजन मंडल** विद्यालय में सामान रखने हेतु एक कमरा माँगने आए। प्रधानाध्यापक ने उनकी समाजसेवी प्रवृत्ति के बारे में पहले से सुन रखा था। उन्होंने कमरा देने पर सहमति जताई, लेकिन साथ ही विद्यालय के सबसे खराब कमरे को दिखाकर उसके जीर्णोद्धार और स्मार्ट क्लास में परिवर्तन के लिए सहयोग का अनुरोध किया।

श्री निरंजन मंडल ने पहल की सराहना करते हुए तत्काल ₹25,000 की सहायता दी। इसके बाद कमरे का प्लास्टर, पुट्टी, रंग-रोगन, विद्युत वायरिंग और खिड़कियों का कार्य कराया गया तथा स्मार्ट टीवी लगाया गया। पूरे कार्य में लगभग ₹1,08,000 खर्च हुए। बाद में तत्कालीन डीपीओ, समग्र शिक्षा **श्री निशीथ प्रणीत सिंह** ने स्मार्ट क्लास का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री निरंजन मंडल और उनके परिवार को सम्मानित भी किया गया।

योजनाओं से बढ़ा अभिभावकों का विश्वास:- प्रधानाध्यापक ने छात्रवृत्ति, पोशाक और अन्य कल्याणकारी योजनाओं की राशि विद्यार्थियों तक समय पर पहुँचाने पर विशेष ध्यान दिया। वर्ष 2019-20 में **75 प्रतिशत उपस्थिति** वाले विद्यार्थियों के लिए प्राप्त राशि की सूची तैयार कर बैंक में भेजी गई। जाँच के दौरान पूर्व सूची में कुछ त्रुटियाँ सामने आईं, जिन्हें सुधारकर पुनः जमा किया गया। मात्र दो दिनों में विद्यार्थियों के खातों में राशि का हस्तांतरण हो गया।

https://www.navyatna.online/

इसका सकारात्मक प्रभाव पूरे गाँव में दिखाई दिया। विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति बढ़ने लगी और अभिभावकों का विश्वास मजबूत हुआ। प्रधानाध्यापक ने विद्यालय के **पोषक क्षेत्र** का **भ्रमण** कर ग्रामीणों और अभिभावकों से संवाद स्थापित किया तथा विद्यालय विकास में उनकी सहभागिता बढ़ाई।

प्रतियोगी परीक्षाओं की ओर बढ़ते कदम:- नए शैक्षणिक सत्र से विद्यार्थियों को राष्ट्रीय आय सह मेधा छात्रवृत्ति परीक्षा (**NMMSS**) के लिए प्रेरित किया गया। प्रारंभिक प्रयास में चार विद्यार्थियों ने सफलता प्राप्त की। इसके बाद लगभग प्रत्येक वर्ष विद्यालय से तीन से चार बच्चे इस परीक्षा में सफल होने लगे। विज्ञान में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को **INSPIRE Award** के लिए भी प्रोत्साहित किया गया, जिसमें दो विद्यार्थियों का चयन हुआ। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए शिक्षकों ने अतिरिक्त कक्षाएँ संचालित कीं। विद्यालय बंद होने के बाद और अवकाश के दिनों में भी विद्यार्थियों के आग्रह पर शिक्षण कार्य किया गया। परिणामस्वरुप वर्तमान में लगभग 25 परिवारों के बच्चों को छात्रवृत्ति के माध्यम से प्रतिमाह ₹1,000 का लाभ मिल रहा है।

वर्ष 2025 में कक्षा सात की छात्रा तनीषा भारती ने रामानुजन टैलेंट सर्च परीक्षा में गणित विषय में जिले में सातवाँ स्थान प्राप्त कर विद्यालय का गौरव बढ़ाया। इन उपलब्धियों ने विद्यालय में प्रतियोगी और शैक्षणिक वातावरण को और मजबूत किया।

चुनौतियों के बीच सामूहिक कार्यसंस्कृति:- प्रारंभिक दिनों में शिक्षकों के बीच समन्वय की कमी भी एक चुनौती थी। निरंतर संवाद, सहयोग और प्रशासनिक प्रयासों से धीरे-धीरे कार्यसंस्कृति बेहतर हुई। सभी शिक्षकों को विद्यालय विकास के साझा उद्देश्य से जोड़ने का प्रयास किया गया।

इन निरंतर प्रयासों के लिए श्री पंकज कुमार को जिला शिक्षा पदाधिकारी, बांका द्वारा वर्ष 2021 तथा जिला पदाधिकारी, बांका द्वारा वर्ष 2023 और 2024 में प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। विद्यालय के **शिक्षक श्री देव कुमार जुगनू** को भी कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण कार्य के लिए जिला स्तर पर सम्मान मिला। वर्ष 2021-22 में विद्यालय को स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार (SVP) भी प्राप्त हुआ।

पोषण वाटिका से हरियाली और स्वास्थ्य:- विद्यालय की पोषण वाटिका भी परिवर्तन की इस यात्रा का महत्वपूर्ण हिस्सा है। शून्य से शुरु की गई इस वाटिका में वर्तमान में लगभग 30 से 35 प्रकार के फूल, औषधीय एवं अन्य उपयोगी पौधे लगाए गए हैं। केले और पपीते के पौधों से प्राप्त फलों का उपयोग विद्यार्थियों के लिए किया जाता है। वाटिका में लगे सहजन के पेड़ों से प्रतिवर्ष लगभग 50 किलोग्राम सहजन प्राप्त होता है, जिसका उपयोग मध्याह्न भोजन में किया जाता है। इस प्रकार पोषण वाटिका ने विद्यालय की सुंदरता बढ़ाने के साथ विद्यार्थियों के पोषण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

डिजिटल शिक्षा की ओर कदम:- विद्यालय में **आईसीटी लैब** की स्थापना भी की गई है। वर्तमान में कक्षा 5 से 8 तक के विद्यार्थी कंप्यूटर की आधारभूत जानकारी प्राप्त कर रहे हैं और डिजिटल शिक्षा का लाभ उठा रहे हैं। इससे बच्चों को पारंपरिक शिक्षण के साथ आधुनिक तकनीक से जुड़ने का अवसर मिला है।

श्री पंकज कुमार के लिए विद्यालय विकास केवल भवन और संसाधनों के सुधार तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने शैक्षणिक गुणवत्ता, प्रतियोगी परीक्षाओं, डिजिटल शिक्षा, पोषण, स्वच्छता और सामुदायिक सहभागिता को समान महत्व दिया।

संकल्प, सहयोग और समर्पण के साथ किए गए इन प्रयासों ने **मध्य विद्यालय भंगा पथरा** की तस्वीर बदलने के साथ-साथ विद्यार्थियों, अभिभावकों और समुदाय में शिक्षा के प्रति विश्वास भी मजबूत किया। यह यात्रा बताती है कि संसाधन सीमित हों, तब भी स्पष्ट उद्देश्य, सकारात्मक नेतृत्व और सामूहिक प्रयास से विद्यालय को नई दिशा दी जा सकती है।

शीर्षक

निपुणता की नई राह

जब बच्चे बने शिक्षक

जब एक बच्चा दूसरे बच्चे को सिखाता है, तो सीखना और सिखाना और भी आसान हो जाता है...

"सर, इसको क्या पढ़ेंगे?"
"दोस्त, ये जोड़ कैसे करेंगे?"

ऐसे ही छोटे-छोटे सवालों से हमारे विद्यालय में सीखने की एक बड़ी पहल ने जन्म लिया है।

राज्य सरकार का लक्ष्य है कि कक्षा 1 से 5 तक का हर बच्चा भाषा और गणित में बुनियादी रूप से सक्षम बने। अक्षर और शब्द पढ़ सके, लिख सके तथा जोड़-घटाव, गुणा और भाग जैसी सामान्य गणितीय संक्रिया सुगमतापूर्वक हल कर सके।

इस कड़ी में बाँका जिला के कटोरिया प्रखंड के **प्रोन्नत मध्य विद्यालय कठौन** के प्रधानाध्यापक **श्री तुलसी दास** द्वारा इस लक्ष्य को पाने का रास्ता थोड़ा अलग और बेहद रोचक है। यहाँ बच्चे ही बच्चों के सीखने में सहायक बन रहे हैं। जो बच्चे पढ़ाई में आगे हैं और अपने साथियों की मदद करने के इच्छुक हैं, उन्हें "**निपुण प्रेरक**" (निपुण लीडर) बनाया गया है। वहीं जिन्हें अक्षर और अंक पहचानने में अधिक अभ्यास की जरुरत है, वे "**जिज्ञासु**" (पीयर लर्नर) हैं।

शिक्षक यहाँ केवल पढ़ाने वाले नहीं, बल्कि **मार्गदर्शक** हैं। शिक्षक निपुण प्रेरकों को गतिविधियों के लिए तैयार करते हैं और उनकी सहायता करते हैं। नेतृत्वकर्ता, अधिगमकर्ता और मार्गदर्शक के रुप में विद्यालय के प्रधानाध्यापक तुलसी बख़ूबी अपने कर्तव्यों को अंजाम दे रहे हैं। **पहेली कार्ड, अक्षर-माला, गिनती के खेल**, **कहानी**, **समूह गतिविधियाँ** और बार-बार अभ्यास के माध्यम से निपुण प्रेरक अपने दल के जिज्ञासुओं को बड़े ही सहज ढंग से सिखाते हैं। दोस्तों से सीखने और प्रश्न पूछने में प्रायः बच्चों में झिझक कम होती है। वे बिना डरे प्रश्न पूछते हैं और गलतियों को सुधारते हुए आगे बढ़ते हैं।

इस पहल की सबसे बड़ी खूबी यह है कि सीखना विद्यालय की चहारदीवारी तक सीमित नहीं है। निपुण प्रेरक अपने ही टोले के जिज्ञासुओं को घर पर भी अभ्यास में मदद करते हैं। इससे सीखने का क्रम लगातार बना रहता है, और देखा गया कि दूसरों को सिखाने से निपुण प्रेरक की अपनी समझ भी मजबूत होती है। जो बच्चे पहले पाठ-वस्तु भूल जाते थे, वे अब प्रश्न पूछते ही आत्मविश्वास से उत्तर देने लगे हैं।

चार-चार बच्चों के समूह में काम करने से उनमें नेतृत्व, जिम्मेदारी और टीम भावना भी विकसित हुई है। कई ऐसे बच्चे, जो पहले सबके सामने बोलने से झिझकते थे, आज संपूर्ण चेतना सत्र का संचालन कर अलग अलग गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। ये बच्चे विद्यालय की गतिविधियों और प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। जिस बच्चे के मन में कभी यह भाव नहीं था कि **"मैं भी कर सकता हूँ"**, आज वही दूसरे बच्चों को सिखाते हुए कहते हैं -

"हाँ, मैं कर सकता हूँ... और अपने दोस्त को भी सिखा सकता हूं।"

यही '**निपुण बिहार मिशन**' की असली सफलता है।

यह केवल बच्चों को पढ़ना-लिखना और गणित सिखाने का अभियान नहीं है। यह बच्चों के भीतर आत्मविश्वास, सहयोग, नेतृत्व और आगे बढ़ने का साहस पैदा करने का मिशन है क्योंकि जब एक बच्चे का हाथ, दूसरे बच्चे थामकर उसे आगे बढ़ाता है, तभी शिक्षा सचमुच सार्थक होती है।

निपुण बच्चा – निपुण बिहार – निपुण भारत...
हम सबकी जिम्मेदारी।

शीर्षक

डिजिटल कदम, बेहतर अधिगम

डिजिटल टूल रियल लर्निंग

जब सही दिशा, मेहनत और उपलब्ध संसाधनों का सही उपयोग एक साथ जुड़ता है, तो कठिन से कठिन लक्ष्य भी आसान हो जाता है। **उच्च विद्यालय गौरीपुर लत्तीपुर, बिहपुर, भागलपुर** में इसी सोच को विद्यालय की रोजमर्रा की शिक्षण व्यवस्था में उतारने का प्रयास किया जा रहा है। विद्यालय के **प्रधानाध्यापक श्री राजेश कुमार** के नेतृत्व में **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT)** को शिक्षण और विद्यालय प्रबंधन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया गया है। यहाँ ICT किसी विशेष दिन की गतिविधि नहीं, बल्कि प्रतिदिन होने वाली पढ़ाई का हिस्सा है। इसके प्रयोग से शिक्षण अधिक सरल, रोचक और प्रभावी हुआ है तथा विद्यालय के प्रशासनिक कार्यों में भी पारदर्शिता और सटीकता बढ़ी है

विद्यालय की समय-सारणी में प्रत्येक कक्षा के लिए कम-से-कम एक स्मार्ट क्लास रखा गया है। तकनीक का बेहतर ज्ञान रखने वाले शिक्षक दूसरे शिक्षकों की सहायता करते हैं। साथ ही, तकनीकी रुप से सक्षम विद्यार्थियों को **ICT मॉनिटर** बनाकर उन्हें भी जिम्मेदारी दी गई है। इससे बच्चों में तकनीक के साथ-साथ नेतृत्व और जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होती है। शिक्षक **DIKSHA पोर्टल**, **e-Pathshala**, **डिजिटल टेक्स्टबुक** और अन्य शैक्षिक वेबसाइटों से उपयोगी **e-Content** लेकर अपनी पाठ योजना तैयार करते हैं। PPT, Animation, शैक्षणिक वीडियो और ऑडियो विजुअल कंटेंट की मदद से विज्ञान और गणित जैसे विषयों के कठिन सिद्धांतों को बच्चों के सामने सरल तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। जो बातें केवल बोलकर समझाना कठिन होता है, उन्हें **चित्र**, **वीडियो** और **Animation** के माध्यम से बच्चे आसानी से समझ पाते हैं।

स्मार्ट टीवी को स्मार्ट फोन से स्क्रीन मिररिंग या कास्टिंग के माध्यम से जोड़कर शिक्षक डिजिटल सामग्री पूरी कक्षा में प्रदर्शित करते हैं। इससे बोर्ड पर लंबे डायग्राम बनाने और बार-बार लंबे नोट्स लिखने में लगने वाला समय बचता है। पहले से तैयार PPT और डिजिटल कंटेंट के कारण शिक्षक अपना अधिक समय बच्चों को समझाने, उनके सवालों का जवाब देने और उनकी सीखने की प्रक्रिया पर ध्यान देने में लगा पाते हैं। विद्यालय में **SATHEE** पोर्टल और **IIT-PAL** जैसे डिजिटल संसाधनों का भी उपयोग किया जाता है। इन माध्यमों से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, डिजिटल लर्निंग सपोर्ट और असेसमेंट की सुविधाएँ मिलती हैं। इस तरह विद्यालय की कक्षा केवल किताब और ब्लैकबोर्ड तक सीमित नहीं रहती, बल्कि डिजिटल दुनिया से भी जुड़ जाती है।

यदि किसी विषय के शिक्षक उपलब्ध नहीं होते हैं, तो ICT की सहायता से वर्चुअल कंटेंट का उपयोग किया जाता है। कंप्यूटर शिक्षक के सहयोग से डिजिटल माध्यम द्वारा कक्षा को जारी रखने का प्रयास किया जाता है, ताकि विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित न हो। '**सुरक्षित शनिवार**' को भी ICT के माध्यम से अधिक रोचक और व्यावहारिक बनाया जाता है।

आपदा प्रबंधन से **जुड़े वीडियो**, **एनिमेटेड कंटेंट**, **डॉक्यूमेंट्री**, **वास्तविक घटनाओं** पर आधारित सामग्री और वर्चुअल मॉक ड्रिल के माध्यम से बच्चों को आपात परिस्थितियों में सुरक्षित रहने के तरीके समझाए जाते हैं। इमरजेंसी हेल्पलाइन और उपयोगी ऐप्स की जानकारी भी डिजिटल माध्यम से दी जाती है। विद्यालय में डिजिटल बैनर और पोस्टर के उपयोग से कागज और अन्य संसाधनों की बचत भी होती है। क्लस्टर स्तरीय समीक्षा बैठक, करियर मार्गदर्शन, सखी सहायता क्लब, विज्ञान क्लब, गणित क्लब तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों में **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT)** का प्रयोग कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी, रोचक एवं आकर्षक बनाता है।

विद्यालय की **ISM प्रयोगशाला** में विज्ञान और गणित को प्रयोग के माध्यम से समझाने पर विशेष ध्यान दिया जाता है। ISM प्रभारी और ISM मॉनिटर के सहयोग से विद्यार्थियों को कठिन अवधारणाओं को प्रयोग करके समझने का अवसर मिलता है। बच्चों को पाँच-पाँच के समूहों में बाँटकर वास्तविक जीवन से जुड़ी समस्याओं को हल करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके लिए साप्ताहिक समय सारणी में प्रत्येक कक्षा के लिए सप्ताह में कम-से-कम एक-दो कक्षा **ISM प्रयोगशाला** के लिए निर्धारित किए गए हैं। इससे बच्चों में केवल उत्तर याद करने के बजाय समस्या को समझने, प्रयोग करने और समाधान खोजने की आदत विकसित होती है।

प्रधानाध्यापक राजेश कुमार का समर्पण, शिक्षक पीयूष वाजपेयी, कंप्यूटर शिक्षक सुनील कुमार और विद्यालय के सभी शिक्षकों का सामूहिक प्रयास इस पूरी व्यवस्था को मजबूत बनाता है। इन सभी के प्रयास से सरकार और शिक्षा विभाग की आई सी टी आधारित शिक्षा की सोच विद्यालय में वास्तविक रुप ले रही है। बेशक, **ICT उपकरणों** के प्रयोग में टूट-फूट, रख-रखाव और खर्च जैसी चुनौतियाँ होती हैं। लेकिन उपकरणों को सुरक्षित रखने के नाम पर वर्षों तक बंद रखना भी उचित नहीं है। उपकरण तभी सार्थक हैं, जब उनका उपयोग बच्चों के सीखने के लिए हो। सावधानी और जिम्मेदारी के साथ उनका अधिकतम उपयोग करना ही उनकी वास्तविक उपयोगिता है।

उच्च विद्यालय गौरीपुर लत्तीपुर की यह पहल बताती है कि '**संकल्प से सिद्धि**' तब सार्थक होती है, जब संकल्प केवल शब्दों में न रहकर रोजमर्रा के काम का हिस्सा बन जाए। क्लस्टर स्तरीय समीक्षा बैठक, करियर मार्गदर्शन, सखी सहायता क्लब, विज्ञान क्लब, गणित क्लब तथा अन्य शैक्षिक गतिविधियों में **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी)** का प्रयोग कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी, रोचक एवं आकर्षक बनाता है। विद्यालय ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि सही सोच और सामूहिक प्रयास से सरकारी विद्यालयों में भी आधुनिक, तकनीक आधारित और प्रभावी शिक्षण व्यवस्था तैयार की जा सकती है। यही संकल्प आगे चलकर विद्यार्थियों के बेहतर भविष्य की सिद्धि का आधार बनता है।

शीर्षक

तकनीक से बदलते विद्यालय

डिजिटल टूल रियल लर्निंग

श्री शम्भू कुमार साह के अक्टूबर 2016 में **मध्य विद्यालय उत्तर पूर्व तेतरी, प्रखंड-नवगछिया** में प्रधानाध्यापक के पदस्थापन के समय विद्यालय का संचालन अनियमित ढंग से होने के कारण बच्चों की उपस्थिति मात्र **35 से 40 प्रतिशत** हो रही थी। मध्यांतर उपरांत बच्चों का विद्यालय में ठहराव नहीं के बराबर था। छात्र- छात्राएँ विद्यालयी पोशाक में नहीं आते थे। इन सब समस्याओं को लेकर सहयोगी शिक्षकों के साथ बैठक कर सामंजस्य बना कर विद्यालय रुटीन का निर्माण किया गया एवं बच्चों से भी बात की गई कि पूरे विद्यालय अवधि तक पढ़ाई, खेल इत्यादि होते रहेगा, परंतु उन्हें समय पर विद्यालय आना है और पूरे समय विद्यालय में रहना है।

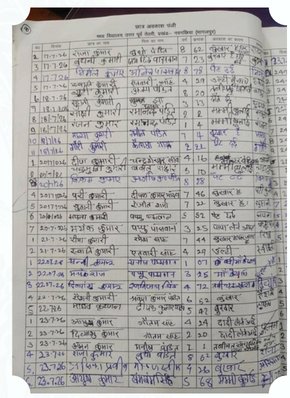

वास्तविक छात्र उपस्थिति:- इसके लिए सभी बच्चों की सूची तैयार की गई। प्रत्येक बच्चों के माता-पिता और अभिभावकों से बात की गई तो पता चला कि ज्यादातर बच्चे गाँव के ही निजी विद्यालय में पढ़ाई करते हैं, जो केवल परीक्षा और सरकारी लाभ के लिए विद्यालय आते हैं। इस कुव्यवस्था को खत्म करना काफी चुनौतीपूर्ण कार्य था। वास्तविक बच्चों की उपस्थिति का पता करने के लिए छात्रोपस्थिति पंजी में उतने ही बच्चों की **उपस्थिति** दर्ज करने हेतु सभी शिक्षकों को निदेशित किया गया जितने उपस्थित होंगे। यहाँ तक कि विद्यालयी अवधि में स्वयं या अभिभावकों की जरुरत पर विद्यार्थियों द्वारा घर आने-जाने का ब्योरा भी छात्रावकाश पंजी में नियमित रुप से अंकित किया जाने लगा।

गैर शैक्षणिक/कार्यालयी कार्य:- विभागीय प्रतिवेदन तैयार करने, **छात्रोपस्थिति पंजी** में नाम और उपस्थिति दर्ज करने, पुस्तक वितरण करने, नामांकन सम्बन्धी कार्य करने आदि में फ़िज़ूल के समय की बचत के लिए एक वर्षीय कम्प्यूटराईज्ड छात्रोपस्थिति पंजी विकसित की गई जिससे शिक्षकों का अधिकांश समय कक्षा-कक्ष में व्यतीत होने लगा। इससे विद्यार्थियों और अभिभावकों में विद्यालय के प्रति सकारात्मक व्यवहार पनपने लगा।

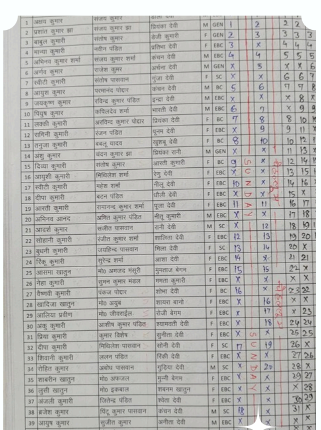

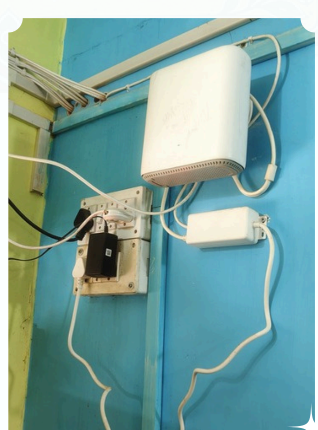

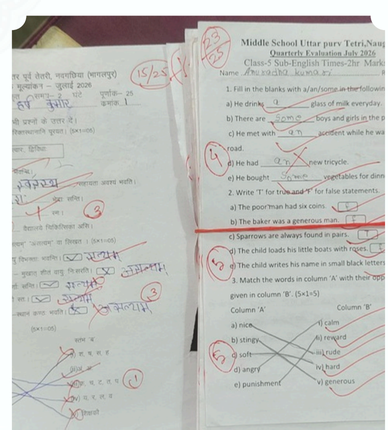

लेखन कौशल में सुधार:- प्रत्येक कक्षा के छात्र-छात्राओं को गृहकार्य में हिन्दी-अंग्रेजी वर्णमाला का नियमित एक-एक पृष्ठ सुलेख लिखने के लिए अनिवार्य रुप से निर्देशित किया गया जिससे लगभग साठ प्रतिशत छात्र-छात्राओं की **हैंडराइटिंग** एक जैसी होने लगी।

मासिक परीक्षा का आयोजन:-मूल्यांकन हस्तक के उपयोग से प्रश्नपत्र-सह- उत्तर पुस्तिका **कम्प्यूटर टाईपिंग** के द्वारा तैयार किया गया जिसमें उत्तर लिखने के लिए पर्याप्त जगह रखी गयी। सिलेबस के अनुसार प्रत्येक माह में पढ़ाई पूर्ण कर माह के अंतिम सप्ताह में **मासिक परीक्षा** लेकर उत्तर पुस्तिका का मूल्यांकन कर अगले माह के प्रथम सप्ताह में शिक्षक-अभिभावक बैठक आयोजित कर अभिभावकों के समक्ष परीक्षाफल एवं माह की उपस्थिति की चर्चा की जाती। साथ ही पूरे माह में **शत-प्रतिशत उपस्थिति** वाले बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली **कॉपी पुरस्कार स्वरुप** उपलब्ध करायी जाती थी। इससे बच्चों में लगातार विद्यालय आने की प्रेरणा मिली। वहीं उनके पठन-कौशल में भी काफी सुधार हुआ।

छात्रोपस्थिति में अप्रत्याशित इज़ाफ़ा:- पहले यहाँ **35-40 प्रतिशत** बच्चों की उपस्थिति रहती थी, किन्तु इन सब प्रयासों से **75-80 प्रतिशत** होने लगी। कभी-कभी तो यह उपस्थिति 90-95 प्रतिशत तक होने लगी। उपस्थिति के लिए टोला वार एक-एक टीम बनवाई गई और यह निर्देशित किया गया कि हर बच्चा पाँच बच्चे को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करेगा।

अद्भुत विद्यालय व्यवस्था- गर्मी के दिनों में वर्गकक्ष में पंखे का अभाव था। किंतु सहयोगी शिक्षकों की सहायता, विकास मद और ग्रामीणों के दान से सभी वर्गकक्षों में चार-चार पंखे लगवाए गए।

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी:- **नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा** एवं **राष्ट्रीय आय- सह- मेधा छात्रवृति योजना परीक्षा** की तैयारी विद्यालय स्तर पर करायी जाती है जिसमें प्रत्येक वर्ष 4 से 6 बच्चों का चयन होता है, जिससे आर्थिक रुप से कमजोर बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में आर्थिक सहयोग प्राप्त हो जाता है। इसके अलावा भी अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की भी तैयारी करायी जाती है।

बाल संसद/मीना मंच/गणित-विज्ञान क्लब/इको क्लब आदि की सक्रियता:- इन सबकी गतिविधियाँ भी लगातार विद्यालय में होती रहती हैं जिससे **चेतना सत्र**, **प्रधानमंत्री पोषण योजना (मध्याह्न भोजन)**, **बाल संसद** , **मीना मंच**, **सांस्कृतिक गोष्ठी**, **सुरक्षित शनिवार** आदि कार्यक्रम का संचालन सुचारु रुप से होता है।

वर्ग मॉनीटर की भागीदारी:- प्रत्येक वर्ग के लिए वर्ग मॉनीटर की भी व्यवस्था है। जो वर्ग के बच्चों को पढ़ाई एवं शिक्षकों को वर्ग संचालन में मदद करता है।

सीसीटीवी का उपयोग:- विद्यालय का हर वर्ग कक्ष एवं पूरा परिसर **सीसीटीवी** कैमरे एवं **वाई-फाई** से जुड़े हैं। इससे विद्यालय में शैक्षणिक गतिविधि से लेकर प्रशासनिक गतिविधि की मॉनिटरिंग आसानी से की है।

शीर्षक

माउस का डर

डिजिटल टूल रियल लर्निंग

आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर का ज्ञान बच्चों के लिए केवल एक अतिरिक्त कौशल नहीं, बल्कि उनकी शिक्षा और भविष्य की आवश्यकताओं का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। फिर भी अनेक बच्चे ऐसे हैं, जिन्हें पहली बार कंप्यूटर के सामने बैठने पर उत्साह से अधिक डर और झिझक महसूस होती है। उन्हें लगता है कि कहीं कोई गलत बटन दब गया तो कंप्यूटर खराब हो जाएगा। **उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय, अगरपुर मछीपुर** में कंप्यूटर साइंस के शिक्षक **श्री अजीत कुमार** ने बच्चों के इसी झिझक को एक रोचक और गतिविधि-आधारित शिक्षण प्रक्रिया के माध्यम से दूर करने का प्रयास किया। कक्षा में बच्चों को कंप्यूटर के विभिन्न भागों के बारे में सैद्धांतिक जानकारी देने के बाद जब उन्हें पहली बार **कंप्यूटर लैब** में ले जाया गया, तो उनके चेहरे पर उत्सुकता साफ दिखाई दे रही थी। कुछ बच्चे कंप्यूटर को बहुत करीब से पहली बार देख रहे थे। वे स्क्रीन, कीबोर्ड और माउस को उत्साह से निहार रहे थे, लेकिन उन्हें छूने में संकोच कर रहे थे। अधिकांश बच्चों के मन में एक ही डर था–कहीं उनसे कोई गलती न हो जाए और कंप्यूटर खराब न हो जाए।

सबसे अधिक झिझक **माउस** को लेकर दिखाई दी। कई बच्चों को यह भी समझ नहीं आ रहा था कि उसे सही तरीके से पकड़ा कैसे जाए। शिक्षक ने महसूस किया कि यदि शुरुआत में ही यह डर दूर नहीं किया गया, तो बच्चे कंप्यूटर को सीखने के बजाय उससे दूरी बनाने लगेंगे। इसलिए उन्होंने तकनीकी शब्दावली से पहले बच्चों की परिचित दुनिया से उदाहरण देना उचित समझा।

उन्होंने बच्चों को माउस दिखाते हुए सहज ढंग से बताया कि हाथ में चूहे जैसा दिखाई देने वाला यह उपकरण माउस कहलाता है और इससे डरने की आवश्यकता नहीं है। इसे समझाने के लिए उन्होंने माउस के दोनों बटनों को कल्पनात्मक रुप से उसके **"दो कान"** बताया। बच्चों को समझाया गया कि तर्जनी उँगली जिस बटन पर रहती है, वह **बायाँ बटन** (Left Button) है और मध्यमा उँगली के पास वाला **दायाँ बटन** (Right Button)। सामान्यतः अधिकांश कार्यों के लिए बाएँ बटन से हल्का क्लिक किया जाता है।

इस रोचक तुलना ने माहौल बदल दिया। जो बच्चे कुछ देर पहले **माउस** छूने में डर रहे थे, अब उसे पकड़ने और चलाने के लिए उत्सुक दिखाई देने लगे। इसके बाद एक बच्चे को बुलाकर माउस के बाएँ बटन से क्लिक करने को कहा गया। क्लिक करते ही स्क्रीन पर **MS Paint** खुल गया। बच्चे की उत्सुकता और बढ़ी। उसने माउस को चलाते हुए लाल रंग चुना और स्क्रीन पर एक लाल रेखा खींच दी। रेखा बनते ही बच्चा थोड़ा घबरा गया और उसके मुँह से तुरंत निकला–**"सर! गलती हो गई!"**

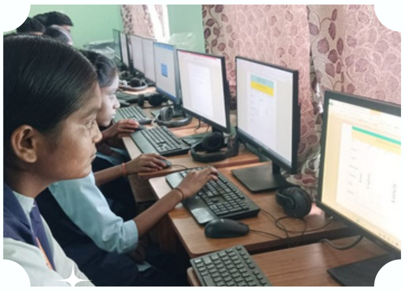

यही वह क्षण था, जिसे शिक्षक ने सीखने के अवसर में बदल दिया। उन्होंने बच्चे को बताया कि कंप्यूटर में गलती होने का अर्थ नुकसान होना नहीं है। उन्होंने **Ctrl + Z** का प्रयोग करते हुए समझाया कि यदि कोई गलती हो जाए तो '**Undo**' के माध्यम से उसे पहले जैसी स्थिति में वापस लाया जा सकता है। बच्चों के लिए उन्होंने इसे "**कंप्यूटर का जादुई रबर**" कहा। साथ ही एक महत्वपूर्ण संदेश दिया–**गलतियों की यहाँ कोई सजा नहीं होती, केवल सुधार होता है।**

यह वाक्य बच्चों के मन से कंप्यूटर खराब कर देने का भय कम करने में बहुत प्रभावी साबित हुआ। इसके बाद सभी बच्चों को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों को माउस की सहायता से **MS Paint** में बनाने का अवसर दिया गया। शुरुआती दौर में कुछ बच्चे बाएँ बटन के स्थान पर दायाँ बटन दबा देते थे। शिक्षक उन्हें सहजता से समझाते–"**कोई बात नहीं, बाहर कहीं भी क्लिक करो, यह हट जाएगा**।" धीरे-धीरे बच्चों के हाथ माउस पर सहज होने लगे। वे बिना झिझक क्लिक करना, माउस को नियंत्रित करना और स्क्रीन पर आकृतियाँ बनाना सीखने लगे।

कुछ समय बाद स्थिति बिल्कुल बदल गई। जिन बच्चों को पहले माउस पकड़ने से डर लगता था, वही बच्चे अच्छी ड्राइंग बनाने लगे। कंप्यूटर उनके लिए डर पैदा करने वाली मशीन के बजाय प्रयोग और सीखने का माध्यम बनने लगा।

शिक्षक ने अनुभव किया कि केवल माउस चलाना सीख लेना पर्याप्त नहीं है। यदि बच्चों को कंप्यूटर की कार्यप्रणाली भी खेल के माध्यम से समझाई जाए तो वे **Input, Processing, Output और Memory** जैसी अवधारणाओं को आसानी से समझ सकते हैं। इसी उद्देश्य से उन्होंने "**Human Computer**" नामक एक गतिविधि तैयार की।

इस खेल में कक्षा के बच्चों को **कंप्यूटर** के अलग-अलग भागों की भूमिका दी गई। एक बच्चा Input, दूसरा CPU, तीसरा Output और चौथा Memory बना। Input बने बच्चे को निर्देश दिया गया –"15 + 30"। उसने यह सूचना CPU बने बच्चे तक पहुँचाई। CPU बने बच्चे ने दिमाग लगाकर गणना की और परिणाम तीसरे बच्चे, यानी Output, को बताया। Output बने बच्चे ने ब्लैकबोर्ड पर उत्तर लिखा–45। वहीं Memory बने बच्चे का काम प्राप्त संख्या को याद रखना था।

इस सरल गतिविधि से बच्चों ने अनुभव के माध्यम से समझ लिया कि कंप्यूटर कोई जादू नहीं करता, बल्कि वह एक व्यवस्थित प्रक्रिया और **तर्क** (Logic) के आधार पर कार्य करता है। गतिविधि की सबसे सुखद बात यह रही कि कक्षा में जो बच्चे सामान्य पढ़ाई में अपेक्षाकृत पीछे रहते थे, उनमें से कई इस खेल में सबसे तेज "**CPU**" बनकर सामने आए। इससे उनमें आत्मविश्वास पैदा हुआ और अन्य बच्चों को भी अपनी छिपी क्षमताएँ दिखाने का अवसर मिला। आज विद्यालय के बच्चे **ICT लैब** जाने के लिए हमेशा उत्साहित रहते हैं। कुछ बच्चे तो समय से पहले ही पहुँच जाते हैं, ताकि उन्हें कंप्यूटर पर कुछ नया सीखने और स्वयं करके देखने का अधिक अवसर मिल सके।

यह अनुभव बताता है कि तकनीक से परिचित कराने का सबसे प्रभावी तरीका केवल उसके बारे में बताना नहीं, बल्कि बच्चों को उसे छूने, प्रयोग करने, गलती करने और स्वयं सुधारने का अवसर देना है। एक छोटे-से माउस से शुरु हुआ यह प्रयास बच्चों के मन से **डिजिटल दुनिया** का डर हटाकर उनमें आत्मविश्वास, जिज्ञासा और तार्किक सोच विकसित करने की दिशा में एक सार्थक कदम बन गया।

शीर्षक

परिवर्तन की शुरुआत

कम उपस्थिति से नियमितता तक

बदलाव की असली शुरुआत संसाधनों से नहीं, सोच से होती है। जब किसी शिक्षक के भीतर कुछ बेहतर करने का दृढ़ संकल्प, नेतृत्व में संवेदनशीलता और समाज के प्रति सच्ची जिम्मेदारी का भाव जागता है, तो सीमित साधन भी परिवर्तन के माध्यम बन जाते हैं। एक शिक्षक की सकारात्मक पहल धीरे-धीरे पूरे विद्यालय की संस्कृति, वातावरण और बच्चों के भविष्य को नई दिशा दे सकती है। भागलपुर जिले के जगदीशपुर प्रखंड स्थित **प्राथमिक विद्यालय गोहारियो** इसका सजीव उदाहरण है, जहाँ **प्रधान शिक्षक श्री श्रवण रजक** ने चुनौतियों को अवसर में बदलने का सफल प्रयास किया है।

21 जुलाई 2025 को विद्यालय का दायित्व संभालते समय परिस्थितियाँ उत्साहजनक नहीं थीं। विद्यालय अत्यंत पिछड़े क्षेत्र में स्थित है, जहाँ अधिकांश परिवार अल्पसंख्यक एवं अनुसूचित जाति समुदाय से हैं। आर्थिक अभाव के साथ शिक्षा के प्रति जागरुकता भी सीमित थी। बच्चों की अनियमित उपस्थिति, अधूरा गणवेश, अभिभावकों की कम भागीदारी और विद्यालय के प्रति उदासीनता परिवर्तन की राह में बड़ी बाधाएँ थीं।

श्रवण जी ने इन समस्याओं का समाधान केवल प्रशासनिक दृष्टि से नहीं, बल्कि मानवीय दृष्टिकोण से खोजा। उन्होंने सबसे पहले विश्वास का वातावरण बनाया। शिक्षकों को **टीम** की तरह साथ लेकर चले, अभिभावकों के घर-घर पहुँचे, समुदाय के जागरुक लोगों से संवाद किया और विद्यालय को समाज का साझा दायित्व बनाने का प्रयास किया। धीरे-धीरे यह संवाद विश्वास में बदलने लगा। अभिभावकों की प्राथमिकताएँ बदलीं और बच्चों की पढ़ाई परिवार की चर्चा का विषय बनने लगी।

विद्यालय में कई ऐसे नवाचार किए गए, जिनका प्रभाव सीधे बच्चों के व्यवहार और सीखने पर दिखाई दिया। पूर्ण गणवेश में आने वाले बच्चों के लिए टाई और बेल्ट की व्यवस्था, **"Student of the Month"** सम्मान, प्रेरक चेतना सत्र, विशेष दिवसों का रचनात्मक आयोजन, **"विद्यालय आपके लिए है"** और **"शिक्षा आपके द्वार"** जैसे अभियान केवल कार्यक्रम नहीं रहे, बल्कि विद्यालय और समाज के बीच मजबूत सेतु बन गए। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों तथा सहयोगी अभिभावकों को सम्मानित करने से सकारात्मक प्रतिस्पर्धा और आत्मगौरव का वातावरण विकसित हुआ।

इन सतत प्रयासों का परिणाम आज स्पष्ट दिखाई देता है। विद्यालय में **158 बच्चों** का नामांकन है और औसतन **140 बच्चे** प्रतिदिन उपस्थित रहते हैं। लगभग **90 प्रतिशत** बच्चे पूर्ण गणवेश में विद्यालय पहुँचते हैं। सुबह शिक्षा गीत की धुन पर मुस्कुराते हुए बच्चों का समय से विद्यालय पहुँचना अब इस विद्यालय की नई पहचान बन चुका है। **FLN** एवं **निपुण** कक्षाओं के माध्यम से बच्चों में आधारभूत साक्षरता के साथ-साथ **आत्मविश्वास**, **नेतृत्व क्षमता**, **मंच संचालन** और **स्वच्छता** के प्रति सजगता का भी उल्लेखनीय विकास हुआ है।

श्रवण जी की कार्यशैली यह संदेश देती है कि किसी विद्यालय का वास्तविक विकास केवल भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि विश्वास, सहभागिता और सतत प्रयासों से होता है। उन्होंने सिद्ध किया है कि जब प्रधान शिक्षक स्वयं परिवर्तन का वाहक बन जाए, तो विद्यालय केवल पढ़ाई की जगह नहीं रहता, बल्कि समाज में आशा, अनुशासन और सकारात्मक बदलाव का केंद्र बन जाता है। यही किसी शिक्षक की सबसे बड़ी उपलब्धि है, और यही शिक्षा की वास्तविक सफलता भी।

नव-यत्न : आपके शब्दों में

नव यत्न कर रहा प्रयत्न, शिक्षा का अलख जगाने का,
हर मन में विश्वास जगाकर, नव भारत का स्वप्न सजाने का।

'नव यत्न' पत्रिका का द्वितीय अंक केवल एक पत्रिका का अगला पड़ाव नहीं, बल्कि नवचिंतन, नवसृजन और नवसंकल्प की यात्रा में एक और सार्थक कदम है। इस अवसर पर संपादक मंडल, रचनाकारों एवं इससे जुड़े सभी सहयोगियों को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

.......बिवेका नंद सिंह(प्रधान शिक्षक), प्राथमिक विद्यालय नयाटोला ओलपुरा, कहलगाँव

मैं नवयत्न पत्रिका की हृदय से आभार और सराहना करती हूँ। हमारे प्रमंडल के लिए यह गर्व की बात है कि हमारी भी एक अपनी पत्रिका है। इस त्रैमासिक पत्रिका में डिजिटल शिक्षा और नवाचारों को स्थान दिया है। इस उत्कृष्ट पहल के लिए नव-यत्न की पूरी टीम को बहुत-बहुत बधाई एवं आभार।

.......अनामिका नंदिनी (प्रधान शिक्षक), कन्या प्रा0 वि0 एकासीवा, बाँका

भागलपुर प्रमंडल के शिक्षा जगत में 'नव यत्न पत्रिका' का सम्पादन एवं प्रकाशन शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए गौरव की बात है। नवाचार, गतिविधि, खेलकूद, भाषण, निबंध, चित्रांकन, नाटक, क्विज आदि महत्वपूर्ण विद्यालयी कार्यों का यह दर्पण है। यह पत्रिका शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी ऊर्जान्वित, गौरवान्वित, झंकृत और जागृत करता है। यह सवों के लिए पठनीय, अनुकरणीय और उदाहरणीय है। मैं अगले अंक के सफल एवं कुशल प्रकाशन की कामना करता हूं।

......आदित्य कुमार (सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक) कन्या मध्य विद्यालय चान्दन, (बांका)

नव यत्न भागलपुर प्रमंडल शिक्षा परिवार के बढ़ते सकारात्मक कदम को दर्शाती एक पत्रिका हैं जो हर बेहतर प्रयास को संकलित कर औरों के लिए प्रेरणा स्रोत का कार्य करती हैं। नव यत्न पत्रिका के संपादक समूह के सभी सदस्यों को कोटि-कोटि धन्यवाद।

निकल चले थे भीड़ में एक-एक अच्छे शैक्षिक प्रयास सहेजने को,
मिली मुकाम नव यत्न के हर पन्ने को बेहतर विचारों से समेटने को।

......**राजीव रंजन कुमार (प्रधानाध्यापक)**, उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय कैरी, बांका

'**नव यत्न**' भागलपुर प्रमंडल से प्रकाशित अपने आप में एक सुप्रतिष्ठ पत्रिका साबित हो चुकी है। इस पत्रिका में जिस तरह से विषय की विविधता का समावेश हुआ है, वह पाठकों का ज्ञान वर्धन भी करती है और पत्रिका को पठनीय भी बनाती है। पत्रिका का ख़ूबसूरत कलेवर देखते ही सम्मोहित करता है। बेशक यह हमारे आर. डी. डी. ई सर की साहित्यिक सांस्कृतिक एवं कलात्मक दृष्टि का नायाब नमूना है। जो आने वाले समय में हमारे शैक्षिक व्यवस्था के लिए दीपस्तंभ साबित होगा।

.... **डॉ. विकास कुमार सिंह (प्रधानाध्यापक),** उच्च माध्यमिक विद्यालय रामचुआ, शंभूगंज

नव-यत्न नाम के अनुरुप ही क्षेत्र में अपना कार्य कर रही है।
....मुकेश कुमार भारती (प्रधानाध्यापक)
मध्य विद्यालय तरडीहा जगदीशपुर भागलपुर

नव-यत्न शिक्षकों और छात्रों के लिए बेहतर संदर्शिका प्रमाणित हो रही है।
....अर्जुन केशरी (प्रधान शिक्षक)
प्राथमिक विद्यालय मिर्धाचक आदिवासी टोला
प्रखंड - कहलगांव, जिला - भागलपुर

नव-यत्न का प्रत्येक अंक बहुत बेहतर होता है मैंने इसे पढ़ा है। यह शिक्षकों और छात्रों के लिए बहुत ही बेहतर है।
....नलिनी कुमारी (प्रधानाध्यापिका),
प्राथमिक विद्यालय नन्हकार, वीहपुर ,भागलपुर।

नव-यत्न अपने नाम के अनुरुप है।
यह भागलपुर प्रमंडल के शिक्षकों के लिए बेहतर मार्गदर्शिका प्रमाणित हो रही है
...परेश कुमार झा (प्रधानाध्यापक) , मध्य विद्यालय शंकरपुर चौवनिया नाथनगर भागलपुर

नव-यत्न

नित नूतन यह पत्रिका, करती है नवयत्न।
गढ़ती है नव चेतना, शैक्षणिक नवरत्न।।

TOUCH OR SCAN ME

TOUCH OR SCAN ME

TOUCH OR SCAN ME

TOUCH OR SCAN ME

Google Form Link

पत्रिका के अगले अंक में अपने प्रयासों को जगह देने के लिए गूगल फॉर्म अवश्य भरें।